सूत्र शिल्प-शिक्षक

प्रथम-भाग

"गृहिणी जिन में न सुदक्ष रहें,
घर वे गृहकष्ट समस्त सहें।"

स्व० बाबू विपिनविहारीलाल,
बी० ए० एल० एल० बी०

।०। श्रीः ।०।

सूत्र-शिल्प

शिक्षक

अर्थात्

सूत और सलाई का काम सिखानेवाली पुस्तक

प्रथम भाग

सलाई का काम।

लेखक व प्रकाशक—

बाबू बिपिनबिहारीलाल बी० ए०

अलीगढ़

बाबू राजेन्द्रबिहारीलाल मैनेजर के प्रबन्ध से

भारतबन्धु यन्त्रालय अलीगढ़ में छपा

प्रथमबार २०००

सन् १९१३

मूल्य ।।) प्रति

Printed by B. Rajendra Behari Lal at the Bharat Bandhu Press
Aligarh.

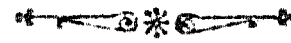
समर्पण



श्रीमान् पूज्यचरण स्वर्गीय श्रीपिताजी

बाबू सीताराम वर्मा वकील

हाईकोर्ट, अलीगढ़,



महोदय,

श्रीमान् "भाषा सम्बर्द्धिनी सभा" द्वारा बहुत कुछ मातृभाषा हिन्दी की सेवा कर चुके हैं और अपने जीवन में स्त्री शिक्षा को मुख्यतः देश व धर्म्मका कारण समझते थे। इसी लिये आपकी उस प्यारी इच्छानुसार आज मैं आकिञ्चन यह छोटीसी पुस्तिका "सूत्रशिल्प शिक्षक" अत्यन्त भक्ति भाव और नम्रता से श्रीमान् के चरणों में समर्पण करता हूं। आशा है श्रीमान् की स्वर्ग गत आत्मा इससे अवश्य संतुष्ट होगी।

चरणारविन्दानुरागी

बिपिनबिहारीलाल

भूमिका



सन १९१० ई० में जब मैं कैनटूनमेंट हाई स्कूल नीमच में अध्यापक था वहां मैंने पारसी स्त्रियों को मोज़ा, दस्ताने, बनियान आदि अनेक प्रकार की सूती और ऊनी चीजों को बुनते हुए देखा था तब मेरे जी में यह उत्कण्ठा उत्पन्न हुई कि हमारे घर और देश की स्त्रियों को यदि किसी प्रकार बुनने का काम सिखा दिया जावे तो वास्तव में बड़ा लाभ हो और हमारे यहां जो स्त्रियां हाथ पर हाथ रक्खे बेकार बैठी रहती हैं वह कामसे लगी रहैं-मैंने यत्न किया कि किसी प्रकार हमारी स्त्रियां इन पारसी कलागनाओं से यह काम सीखलें परन्तु यह मनोरथ हमारा सफल नहीं हुआ।

इस बात से हमारे हृदय में यह उत्कण्ठा उत्पन्न हुई कि सलाई का काम अङ्गरेजी पुस्तकों से सीखकर अवश्यमेव अपने घर और देश की स्त्रियों के लाभार्थ उसका प्रचार करना देशकी इस दशा में लाभकारी होगा। मेरी धर्म्म पत्नी पहले से कुछ सलाई का काम जानती थी और उस की और पुस्तकों की सहायता से अब हमने सलाई का काम सीखना प्रारम्भ किया और थोड़ेही दिनमें यह परिणाम निकला कि हम सब के सब इस काम में कुशल होगये और कोई विशेष कठिनाई नहीं पड़ी और हर प्रकार के काम सुगमता से करने लगे।

अपने उसी विचार के अनुसार अब मैंने अपनी रीति से पुस्तकों द्वारा इस काम को स्त्रियों में फैलाना चाहा और इस पुस्तक का जिसका नाम हमने सूत्र शिल्प शिक्षक रक्खा है, और जिसको अङ्गरेज़ी जाननेवाले (Needle-work Instructor) कहेंगे, एसी सरल भाषा

में कि जिसको स्त्रियां भी सुगमता से पढ़ें और समझ सकें लिखना आरम्भ किया। जो आज आप की चरण सेवा में समर्पण की जाती है और आशा कीजाती है कि देश भक्त अवश्य मेव इस सूत्रशिल्प की ओर अपनी ध्यानदृष्टि देंगे—और स्त्रियों को सिखाने में दत्तचित्त होकर इस शिल्परत्न द्वारा देश का उपकार करेंगे

शिल्प विद्या का स्त्रियों में विशेष प्रचार इस कारण भी आवश्यक है कि आज कल की भारत की प्रथा के अनुसार हमारे यहां की स्त्रियां बिल्कुल निकम्मी बैठी रहती हैं—उद्योग वह जानती ही नहीं के किसको कहते हैं! पारिश्रम के लाभों से नितान्त अनभिज्ञ हैं!—कुछ न कुछ करते रहना ही शरीर का धर्म है—पहले सुनाजाता है कि देश में चर्खा (रहंटा) कातने का प्रचार स्त्रियों में बहुत था जिस से वास्तवमें देश को बड़ा भारी लाभ पहुँचता था परन्तु अब वह समय नहीं है-आज कल चर्खा चलाना अपमान गिना जाता है इसलिये उसके स्थान पर यदि स्त्रियों को सलाई आदि के ऐसे हलके काम जिनमें पारिश्रम भी अधिक न हो और स्त्रियां सुगमता पूर्बक घर बैठे करसकें सिखाना अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी है इस से देश को लाभ भी होगा और स्त्रियां भी निकम्मी न रहसकेंगी और जो विधवा या ऐसी अवस्थायें हैं कि जिनका भरण पोषण करने वाला कोई नहीं उनके लिये तो यह काम वास्तव में बड़ा ही लाभदायक है, जो स्त्रियां देश की प्रचलित रीति के अनुसार परदे में रहती हैं वे घर बैठे ही बैठे इस काम को करके अपना और अपने बच्चों का पालन कर सकती हैं—यह भी अप्रगट नहीं है कि धन परिश्रम से पैदा होता है और जिस देश में इतना बड़ा भाग स्त्रियों का हाथ पर हाथ रक्खे बैठा रहता हो क्या ऐसे देश की आर्थिक दशा के कभी सुधरने की आशा हो सकती है। ऐसे अनेकानेक विचारों ने हम को इस बात पर आरूढ़ किया कि हम स्त्रियों के लाभार्थ कोई ऐसी तदबीर निकालें कि जिस से देश की स्त्रियों की गिरी हुई दशा उन्नतावस्था को पहुंच सके हमारी न्यायशीला सरकार ने स्त्रियों की उन्नाति में जो प्रयत्न किया है और कर रही है वह प्रशंसा योग्य है और उस से लाभ भी अवश्य होगा—परन्तु परदे की रोक, अविद्यांधकार और देश की दूसरी अलोक रीतियां और बुढ़िया पुराण विद्याके तत्काल पूर्ण प्रचार में इस समय अवरोधक होंगीपरन्तु

यहरोक शिल्प के सीखने में नहीं है क्योंकि इसे थोड़े परिश्रमसे, थोड़े समय में हर स्त्री शीघ्रसीख सकती है और औरों को सिखा सकती है यदिहमारे देशकी पूजनीय अवलायें हमारी प्रार्थना पर ध्यान देकर इस काममें दत्त चित्त होगीं तो हम अपने को कृत कार्य समझेंगे और देश का उद्धार होगा।

किसी काम के सीखने के लिये यह आवश्यक है कि उसे आरम्भ से अच्छे प्रकार सीखना चाहिये क्योंकि जो बात आरम्भ से नहीं सीखी जाती वह ठीक हो भी नहीं सकती हैं और सीखने वाला उसे शीघ्र ही भूल भी जाता है इस लिये हम को अपनी पुस्तक के विषय में यह कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि इस को आदि से समझ कर पढ़ना चाहिये और प्रथम परिच्छेदों में जो बातें बताई गई है इनको भली भांति हृदयगत करना चाहिये यदि ऐसा कियाजायगा तो आगे के परिच्छेदों में कोई कठिनाई न होगी और न किसी भी दूसरे से पूछने की आवश्यकता होगी परन्तु यदि ऐसा करने पर भी कोई कठि-नाई पड़े तो पत्र द्वारा मैं उस को बताने और सिखाने के लिये तत्पर रहूंगा—

यह छोटी पुस्तक सूत्रशिल्पशिक्षक का प्रथम भाग है आगे जो भाग लिखे जायंगे उनमें और बड़ी बड़ी महत्व पूर्ण बातें बताई जायंगी—

अलीगढ़
ता० १५ जूलाई सन् १९१३ } विपिनाबिहारीलाल

विषय सूची

* श्रीलक्ष्मीजीकीजय *



सूत्रशिल्पशिक्षक

प्रथम भाग

पहिला परिच्छेद

लीलावती—बाहिन ! तुम क्या बुन रही हो ?

कलावती—कुछ नहीं, रामरत्न के लिये टोपा बनारही हूं—अब सरदी लगती होगी !

लीला०—बाहिन ! बाज़ार से क्यों न मंगा लिया ?

कला०—हां ! आने को बाज़ार से भी आसक्ता था । लेकिन तुम जानती हो दूकानदार अपना फ़ायदा, ऊन की क़ीमत और बनानेवाले की मेहनत सब के दाम लगाता जब मैं खुद बुनना जानती हूं और समय भी है तो फिर वे बात दाम क्यों बिगाड़ूं; दूसरी बात यह है कि घर जैसा चाहूंगी वैसा बुन लूंगी लेकिन बाजार में जैसा तैयार होगा वैसाही लेना पड़ेगा, बाजार में अधिक तर कलकी बुनी हुई चीजें मिलती हैं और कल में ऊन पर ज्यादा ज़ोर पड़ने के कारण उससे बुनी हुई चीजें कमज़ोर हो

जाती है और इसी लिये वह ज्यादा दिन नहीं चलती और जब घर के कामके उपरान्त बहुत सा समय हररोज़ बचता है तो उसको काम में क्यों न लाया जाय ?

लीला०–हां ! इस में सन्देह नहीं कि हमारा बहुत समय अधिकतर बात चीतों में व्यर्थ जाता है, वैसे तो कभी २ सींती पिरोती रहती हूं लेकिन फिर भी बहुत समय बचता है और शायद अगर चाहूं तो और भी वक्त निकाल सकती हूं, मुझको सिखा दो तो मैं भी टोपा बुनना सीखलूं ।

कला०–बहुत खुशी से, मैं तो जी से चाहती हूं कि तुम सीखलो मैंने तुम से पहले भी कहा था लेकिन तुमको उस वक्त अपनी गुड़ियों से ही अवकाश न था, यदि जबही से सीखतीं तो अबतक अच्छी से अच्छी चीज़ें बुनना सीखलेतीं, तुम कहती हो कि तुमको टोपा बुनना सिखादूं, सिखाने को तो कुछ नहीं लेकिन फिर सिवाय टोपे के और कुछ तुम अपने आप न बुन सकोगी इस लिये यदि तुम सीखना चाहतीं हो तो शुरू से सीखो कि तुम बुनने की हरएक बात जान जाओ और जो तुम्हारे जी में आवे बुनसको एक चीज़ बुनना सीख लिया तो क्या ?

लीला०–हां बहिन ! यह ठीक है यदि सीखे तो अच्छी तरह से ।

कला०–कहीं बुनने से घबराओगी तो नहीं ? बुनना सीखनेवाले को पहले पहल कुछ कठिनता पड़ती है आर जब अच्छी तरह बुनना आ जाता है तब इतना रब्त होजाता है कि बुननेवाला बुनता भी जाय और किसी दूसरेसे बातें भी करता जाय क्योंकि फिर उसको बुनते वक्त हरएक कड़ी को देखने की आवश्यकता नहीं रहती ।

लीला०—नहीं बहिन हरगिज़ नहीं; जबतक सिखाती जाओगी बराबर सीखती चली जाऊंगी, तुम देखती हो मैं कभी सीने पिरोने से घबराती हूं ?

कला०—अच्छा! तो तुमको सिखाऊंगी तुम कल दोपहर को एक बजे के क़रीब मेरे बक्स में से हाथीदांत की दो सलाइयां और मोटी ऊन निकालकर मेरे पास ले आना।

ली०—अच्छा! तो कल ज़रूर लाऊंगी और सीखना शुरू कर दूंगी पर यह तो बताओ कि तुम तो लोहे की सलाइयों से बुन रही हो पर मुझसे हाथीदांत की लाने के लिये कहती हो क्या और लोहे की सलाइयां तुम्हारे बक्स में नहीं हैं ?

क०—होने को तो पांच छः मेल की लोहे की सलाइयां मेरेपास हैं मोटी से लगाकर महीन तक, लेकिन तुम को हाथीदांत की इस लिये बताती हूं कि तुम को सीखने में सुगमता रहे और हर एक बात अच्छी तरह समझ में आजाय और इसी कारण मोटी ऊनके लिये तुमसे कहा है, अगर पहले मोटी सलाइयों से बुनना सीख लोगी तो महीन सलाइयों से बुनने में भी कोई कठिनता न होगी, जब मैं यह देखूंगी कि तुम्हारा हाथ सध गया तब तुमको महीन काम बताऊंगी।

दूसरा परिच्छेद

पहिली गांठ लगाना और सलाई पर कड़ियां डालना

ली०—लो बहिन ! मैं सलाइयां और ऊन ले आई अब मुझको क्या सिखाती हो ?

क०—मैं तो तुम्हारे लिये ही बैठी थी।

ली०—अच्छा तो लो बताओ।

क०—देखो पहिले तुमको सलाई पर **पहिली गांठ लगाना** बताती हूं बायें हाथ के अंगूठे और पहिली उंगली के बीच

में होकर पिण्डे की ऊन को अंगूठे के ऊपर होकर लटकने दो (चित्र १) अब सीधे हाथ से ऊन को अंगूठे के चारों ओर घुमाओ यानी पहिले अंगूठे के नीचे ले जाओ फिर इन दोनों उंगलियों के बीच में होकर ऊपर को लाओ और पहिले की भांति फिर अंगूठे के ऊपर होकर लटकने दो (चित्र २) इस भांति करने से एक + एसी शक्ल अंगूठे के ऊपर बन जायगी अब सलाई सीधे हाथ में लेकर इस + जगह से ऊन के नीचे होकर अन्दर को डालो (चित्र ३) और ऊन को जो पिण्ड से आरही है सलाई के नीचे दबा-कर अंगूठे के सामने की ओर छल्ले में होकर निकाल लो इस तरह सलाई पर एक फन्दा बन जायगा (चित्र ४)

ली०—लो देखो यह तो मैंने बना लिया लेकिन यह जो बाएं हाथ के अंगूठे पर ऊन का छल्ला रह गया इस को क्या करूं ?

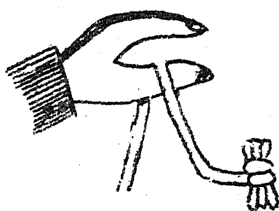
क०—अंगूठे को छल्ले में से बाहर निकाल लो (चित्र ५) और फिर ऊन के छोटे सिरे यानी छोर को बाएं हाथ के अंगूठे और पहिली उंगलीसे पकड़कर थोड़ा खींचदो ताकि सलाई की गांठ जो बनाई है जरा कड़ी होजाय ।

ली०—देखो अब यह ठीक बनगई या नहीं ।

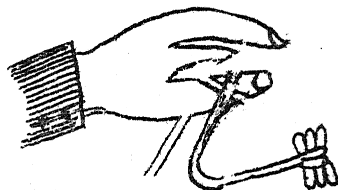
क०—हां ! बिलकुल ठीक है अब इस को दस बीस बेर बनाओ ताकि अच्छी तरह से बनाना आजावे फिर तुमको इसीगांठ के बनाने की दूसरी रीति बताऊंगी ।

ली०—इस तरह से पहिली गांठ लगाना तो मुझको अच्छी तरह आगया अब दूसरी रीति बताओ ।

क०—दूसरी रीति पहिली गांठ लगानेकी यह है:—कि ऊन को बाएं हाथ के अंगूठे और पहिली उंगली के बीच में इस तरह पकड़ो कि ऊनका छोर बाएंहाथकी हथेलीमें लटके

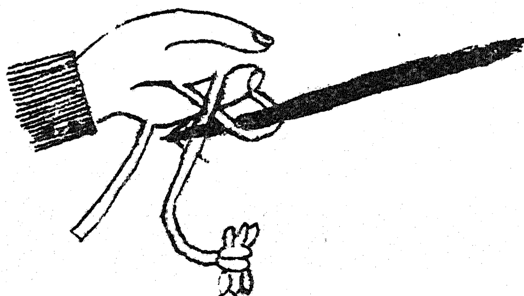


चित्र नम्बर १

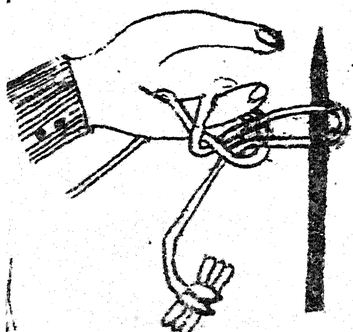


चित्र नम्बर २

चित्र नम्बर ३

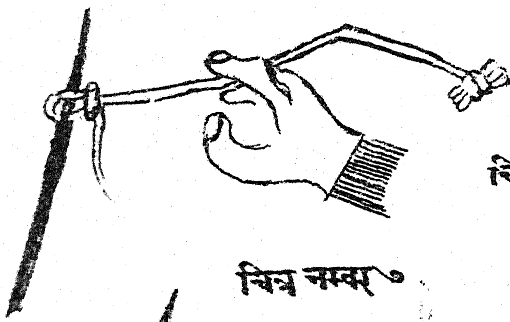


चित्र नम्बर ४



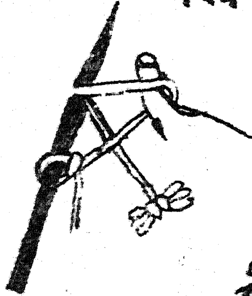
चित्र नम्बर ५



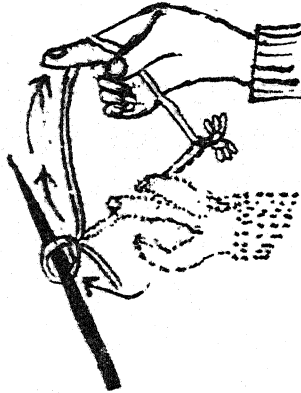


चित्रनम्बर ६

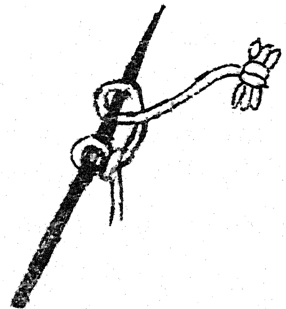
चित्र नम्बर ७



चित्रनम्बर ८



चित्रनम्बर ९



फिर पिण्डे की ऊनको अंगूठे के चारों ओर इस तरह फेरो कि एक छल्ला सा बनजाय अब इस छल्लेको अंगठे और पहली उंगली के बीच में दवा लो और ऊन को अंगूठे के ऊपर छल्ले के पीछे की तरफ लटकने दो (चित्र २) फिर सीधे हाथ की पहली उंगली से ऊन को इस छल्ले में होकर बाहर यानी अंगूठे के सिरे की ओर निकाललो और बाऐं हाथ के अंगूठे को अलग निकाललो इस तरह एक फन्दा सीधे हाथ की पहली उंगली पर आजावेगा, अब इस में होकर एक सलाई डालदो (चित्र ५) यह मामूली सरकफूंद है जिसका बनाना प्रायः लोग जानते हैं ।

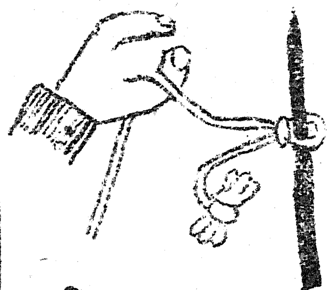
ली०—यह भी बनाली आगे और बताओ ।

क०—अब मैं तुमको सलाई पर **कड़ियां डालना** बताती हूं यह ही बुनावट की जड़ है इसकी कई रीति हैं सबसे (सहल रीति) तुमको पहले बताती हूं लेकिन यह बुनावट के शुरू करने के लिये ठीक नहीं परन्तु जब कभी बुनावट के बीच में कड़ियां डालने की जरूरत हो तो काम देगी यह रीति केवल सीखतरों के लिये उपयोगी है, पहली गांठ लगाकर सलाई को बाऐं हाथ में पकड़लो और सीधे हाथ की पहली उंगली पर इस ऊन से जो पिण्डे से आरही है एक छल्ला सा इस तरह बनाओ [पहली उंगलीको ऊनके ऊपर रखकर (चित्र ६) और ज़ोर देकर उंगली को इस तरह चलाओ (चित्र ७)] फिर सलाई की नोक को अपने सामने से पीछे की ओर यानी उंगली के पोरए की तरफ इस छल्ले में होकर डालो (चित्र ८) और उंगली को अलग निकालली फिर ऊनको थोड़ी खींचदो इसतरह एक फन्दा सलाई पर बनजायगा (चित्र ९) यह एक कड़ी तुमने डाल

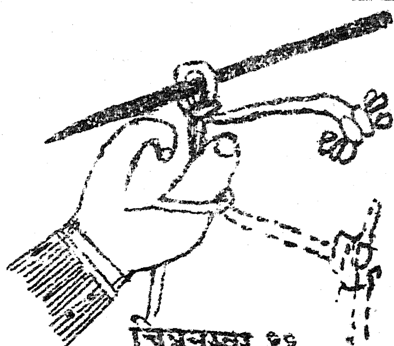
ली, इसी प्रकार और थोड़ीसी कड़ियां डालो, यह तो तुम अच्छी तरह समझगई होगीं ?

ली०—हां ! इस में कुछ नहीं यह तो बहुतही सहल है ।

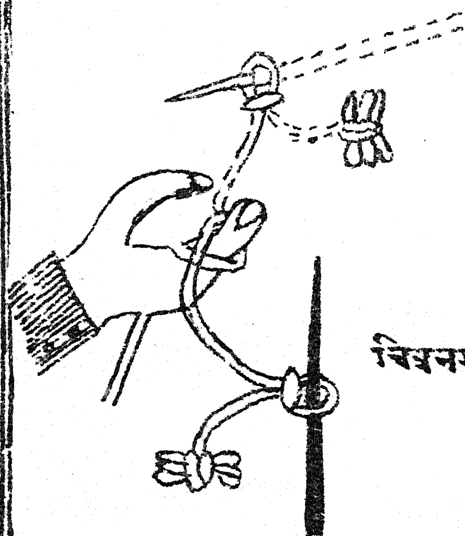
क०—यह रीति मैंने तुमको इस वक्त इस लिये बतादी है कि यह बहुत सहल है और बुनावट में इसका भी काम पड़ताहै लेकिन जबतुम बुनना अच्छी तरह सीखलो तो किसी बुनावट के शुरू करने के लिये इस तरह कड़ी न डालना क्योंकि प्रारम्भ मज़बूत न होगा, तुमने देखा कि इस रीति में एक ही सलाई काम में आई, अब एक और **दूसरी रीति** एक सलाई से कड़ियां डालने की बताती हूं जो बुनना आरम्भ करने के लिये बहुतही उत्तम है:—पहली गांठ सलाई पर लगाने के बाद सलाई को सीधे हाथ के अंगूठे और पहली उंगली के बीच में कलम की तरह पकड़ो और पिण्डे की ऊन को लटकने दो और ऊन के छोर को बाऐं हाथकी हथेली में अंगूठेके ऊपर होकर लटकने दो (चित्र १०) अब ऊन के छोर को बाऐं हाथ की पहली उंगली से दबा कर सलाई को ऊन समेत बाऐं हाथ के अंगूठे के नीचे होकर दूसरी तरफ लेजाओ (चित्र ११ से मालूम होजायगा कि सलाई कहां से कहां लेजानी चाहिये) फिर इस सलाई और ऊन को अंगूठे के ऊपर होकर उसकी पहली जगह पर ले आओ (चित्र १२) इस तरह बाऐं हाथ के अंगूठेपर एक छल्ला सा बन जायगा अब इस छल्लेको इस अंगूठे के नीचे बाऐं हाथ की पहली उंगली के बीच के जोड़ के ऊपर दबालो (चित्र १२ अ) और पहली उंगली के पोरुए से अंगूठें की जड़ के पास इस + ऊन को जिस से अभी छल्ला बनाया है और सलाई की गांठ से आरही है दबालो और



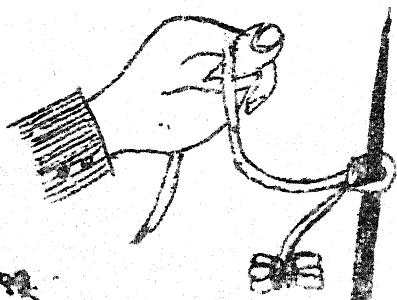
चित्रनम्बर १०



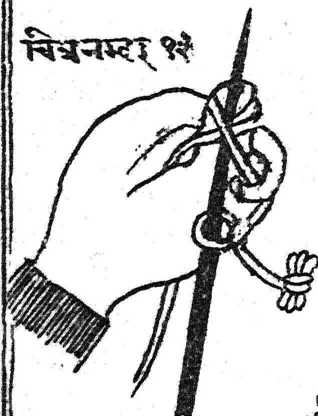
चित्रनम्बर ११

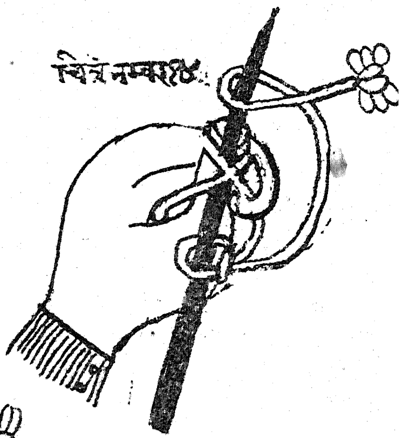


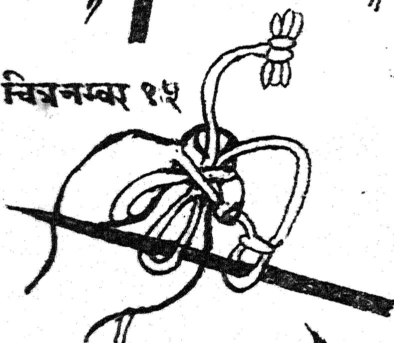
चित्रनम्बर १२

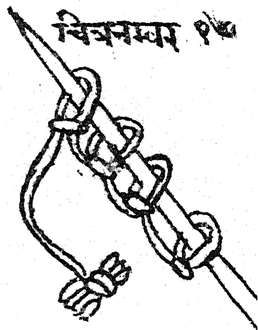


चित्रनम्बर १३.


चित्रनम्बर १३


चित्र नम्बर १४


चित्रनम्बर १५


चित्रनम्बर १७


चित्रनम्बर १६

सीधे हाथ से सलाई की नौक इस छल्ले में दोनों डोरों के नीचे होकर सामने से पीछे की तरफ डालो (चित्र १३) अब सीधे हाथ से पिण्डे की ऊन को सलाई की नोक पर जो छल्ले से बाहर निकली हुई है पहले नीचे फिर ऊपर फेरो (चित्र १४) अब सलाई को इस ऊन के समेत जो इस पर फेरी है अपने सामनेकी तरफ खींचकर (चित्र १५) पिण्डे की ऊन को खींचदो और इस फन्दे को जो अंगूठेकी जड़ में पहली उंगली से दबरहा है छोड़दो और अंगूठे को इस तरह झुकाओ (चित्र १६ में तीर के निशान से मालूम होजायगा कि अंगूठा किस तरफ को झुकाना चाहिये) इस तरह करने से देखो पहली उंगलीवाली ऊन का छल्ला खिंच गया अब अंगूठे के छल्ले को छोड़दो और ऊन के छोर को खींचकर कड़ी को सलाई पर कड़ी करदो यह रीति कड़ी डालने की जरा कठिन है इस लिये इस रीति से बहुत सी कड़ियां डालकर मुझको दिखाओ फिर तुमको एक और कड़ियां डालने की रीति बताऊंगी ।

ली०—देखो बहन ! मैंने चार कड़ियां तो डाललीं (चित्र १७) लेकिन अब ऊन का छोर छोटा रहगया है ।

क०—इस रीति से कड़ियां डालने में यह ध्यान रक्खो कि ऊनका छोर ज्यादह लम्बा रहै क्योंकि तमाम कड़ियां इसी से बनती हैं, इस लिये जितनी ज्यादा कड़ियां डालनी हों उतना ही अन्दाज़ से इस छोर को लम्बा रक्खो ।

ली०—अब दूसरी रीति भी बतादो ।

क०—**दो सलाइयोंसे कड़ियां डालनेकी रीति**—यह है कि पहली गांठ सलाई पर लगाओ और इस सलाई को बायें हाथ में लेलो और एक दूसरी सलाई सीधे हाथ में लेकर

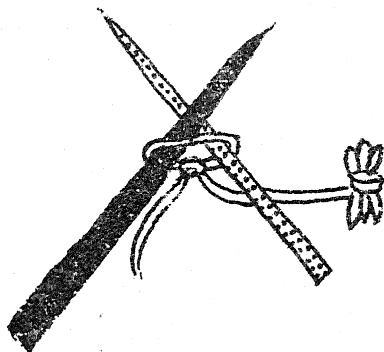
अपने सामने की ओर से बांई सलाई की गांठ के फन्दे में डालो (चित्र १८) और पिण्डे की ऊन को सीधी सलाई की नोक पर पहले नीचे और फिर ऊपर फेरो (चित्र १९); और इस ऊन को सीधी सलाई से बांई सलाई के फन्दे में होकर सामने को खींच लो; यह एक फन्दा बनकर सीधी सलाई पर निकल आयेगी (चित्र २०); अब तुम इस फन्दे को बांई सलाई पर सरका दो (बांई सलाई की नोक को इस फन्दे में डालकर चित्र २१ और फन्दे को सीधी सलाई पर से बांई सलाई पर उतार दो); यह एक दूसरी कड़ी वांई सलाई पर बनगई; इसी तरह अब इस कड़ी में अपने सामने से सलाई डालकर और ऊन फेर कर एक फन्दा सीधी सलाई पर निकाल लो और फिर उसको बांई सलाई पर सरकादो; यह तीसरी कड़ी बांई सलाई पर बन गई—इसी प्रकार वार बार करो ताकि तुमको इस रीति से कड़ियां डालना अच्छी तरह आजाये—लेकिन इस रीति से कड़ियां मोज़े, बनियान आदि के लिये न डालनी चाहियें क्योंकि इस से भी किनारा कमज़ोर होता है—सब से उम्दा कड़ियां डालने की दूसरी रीति है जो मैंने तुम को इस से पहले सिखलाई है—अब आज तुम इन तीनों रीतियों से कड़ियां डालनेका अभ्यास कर लो कल से बुनना बताऊंगी।

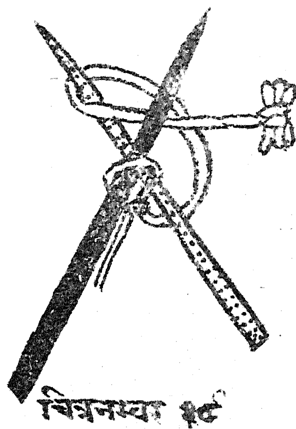
तीसरा परिच्छेद

सीधी कड़ी बुनना, उलटीकड़ी बुनना, और सीधी बुनावट

शीला०—बहिन ! कड़ियां डालना तो तीनों रीतियों से भली भांति मुझको आगया अब तुमने मुझको जो बुनना सिखानेके लिये कल कहदिया था सो सिखाओ।

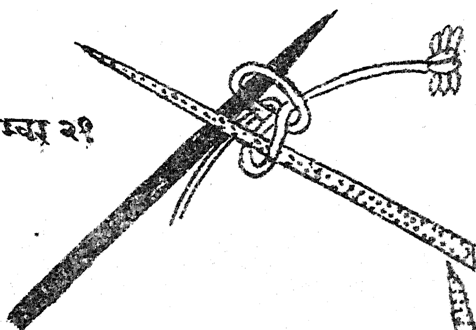
चित्रनम्बर १७



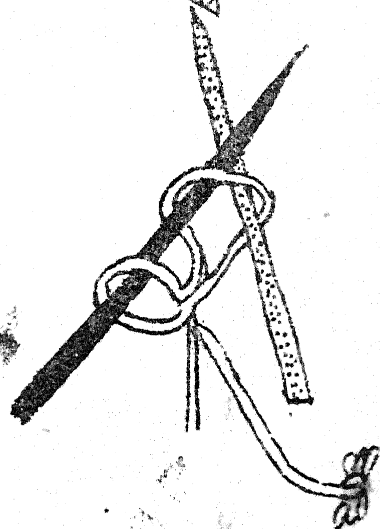


चित्रनम्बर १८

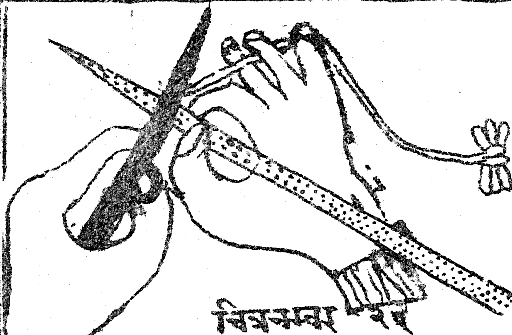
चित्रनम्बर २१



चित्रनम्बर २१

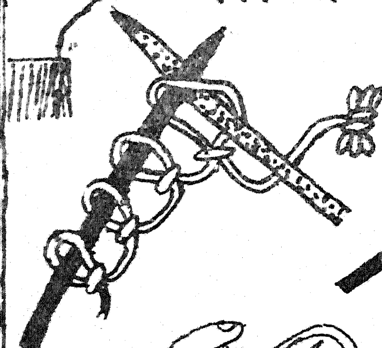


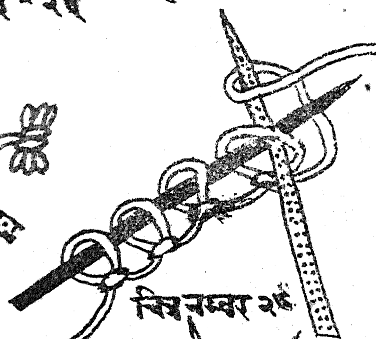
चित्रनम्बर २१



चित्रनम्बर २२

चित्रनम्बर २३

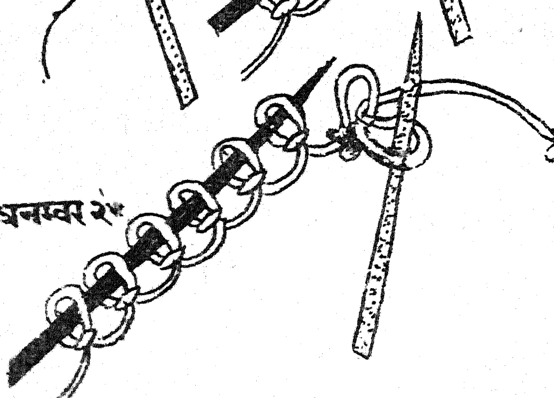




चित्रनम्बर २६

चित्रनम्बर २५





चित्रनम्बर २४

कला०—अच्छा! पहिले मैं थोड़ा सा बुनकर तुमको दिखाती हूं; तुम मेरे हाथों को ठीक २ देख लो कि हाथ में सलाइयां कैसे पकड़कर बुना जाता है (चित्र २२); लो अब तुम बुनो।

ली०—लाओ।

क०—पहिले तुमको **सीधी कड़ी बुनना** सिखाती हूं; जितनी कड़ियां चाहो एक सलाई पर कल जिस तरह तुमको बताया था डाल लो और इस सलाई को बायें हाथ में पकड़ो; फिर एक सलाई सीधे हाथ में लेकर बाईं सलाई की आख़िरी कड़ी में अपने सामने से डालो (चित्र २३) और ऊन को सीधी सलाई की नोक पर नीचे से ऊपर फेरो (चित्र २४) फिर बायें हाथ की पहली उंगली के पोरुए से सीधी सलाई की नोक को दबाकर (चित्र २५) बाईं सलाई की कड़ी में होकर अपने सामने की तरफ़ वापिस निकाल लो; इस तरह उसी ऊन की जो तुमने सीधी सलाई पर फेरी थी देखो एक कड़ी बनकर सीधी सलाई पर आगई (चित्र २६) इस कड़ी को सीधी सलाई पर रहने दो लेकिन बाईं सलाई की इस कड़ी को जिस में होकर अभी तुमने सीधी सलाई से कड़ी निकाली है बाईं सलाई की नोक पर से नीचे उतारदो। (चित्र २७); यह तुमने एक कड़ी बाईं सलाई पर से सीधी सलाई पर बुनली; इसी तरह से एक एक करके कुल कड़ियां जो बाईं सलाई पर हैं बुन लो; इस तरह सब कड़ियां बुनकर सीधी सलाई पर आजावेंगीं; यह एक **पांती** होगई। अब दूसरी पांती बुननेके लिये इस सलाई को जिस पर कड़ियां बुन कर आगई हैं बायें हाथ में लेलो और दूसरी सलाई को जो ख़ाली होगई है सीधे हाथ में लेकर बुनना शुरू करो; इसी तरह सलाइयां बदलती और पांतियां बुनती चली जाओ।

ली०—अच्छा ! मैं बुनती हूं जहां ग़लती करूं बता देना ।

क०—देखो ! जिस समय सीधी सलाई बाईं सलाई की कड़ीमें डालो तो ऊन को जो पिंडे से आती है सीधी सलाई के पीछे रक्खो आगे नहीं (चित्र २३ में देखो) ।

ली०—ऊन आगे रखने में क्या हर्ज है ?

क०—ऊन आगे रखकर एक कड़ी बुनोगी तो बजाय एक कड़ी के दो कड़ियां सीधी सलाई पर आजायेंगीं ।

ली०—अब ऊन ठीक जगह पर है या नहीं ?

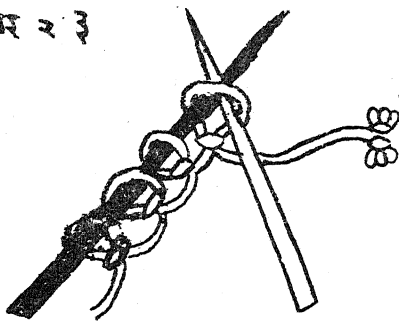
क०—हां ! ऐसे ही रक्खो ।

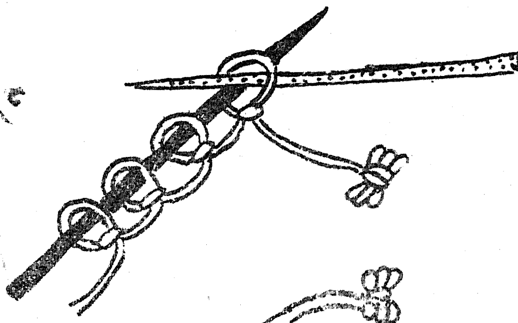
ली०—लो मैंने यह एक पांती तो बुनली अब इस सलाई को जिस पर कड़ियां बुनकर आगई हैं बाऐं हाथ में किस तरह पकड़ूं ?

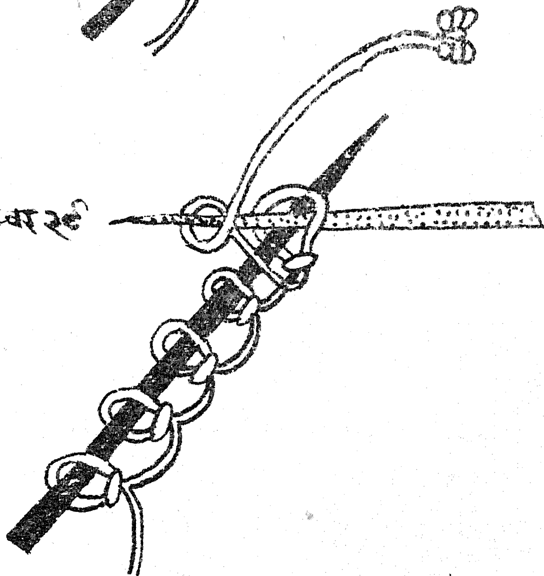
क०—इस सलाई को बाऐं हाथ में इस तरह पकड़ो कि यह कड़ी जिस में से पिंडे की ऊन निकल रही है सलाई पर ऊपर को रहे (चित्र २३) यह ही कड़ी अब बुनी जायेगी; हर पांती को इसी कड़ी से जिस में से पिंडे की ऊन आती है पहले बुनना शुरू करते हैं ।

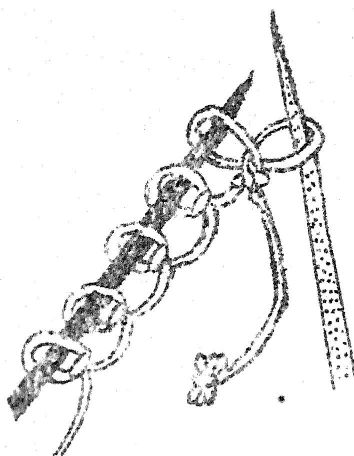
ली०—यह तो मैंने सीखली—अब और कुछ बताओ ।

क०—सीधी कड़ी बुनना तो तुमको बता ही चुकी अब **उलटी कड़ी बुनना** तुमको बतानी हूं:—बायें हाथ की सलाई की पहली कड़ी में सीधी सलाई की नोक को पीछे से सामने को डालो कि सीधी सलाई बाईं सलाई के ऊपर रहे (चित्र २८) और पिंडे की ऊन जो कड़ी से निकल रही है सीधी सलाई के सामने रहे यानी तुम्हारे सामने पहली चीज़ पिंडे की ऊन हो और दूसरी चीज़ सीधी सलाई और तीसरी बाईं सलाई (चित्र २८) अब इस पिंडे की ऊन को सीधी सलाई की नोक के चारों ओर पहले ऊपर फिर नीचे फेरो (चित्र २९)


चित्रनम्बर २३

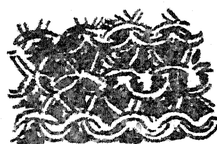

चित्रनम्बर २४


चित्रनम्बर २५



चित्रनम्बर ३०

चित्रनम्बर ३१



और सीधी सलाई को मय इस ऊन के जो उसपर फेरी गई है सामने से पीछे की तरफ़ निकालदो और बाईं सलाई की कड़ी को जिस में होकर यह कड़ी निकाली है बाईं सलाई की नोक पर से नीचे गिरादो यह एक कड़ी उलटी बुनकर सीधी सलाई पर आगई (चित्र ३०) अब इसी तरह सब कड़ियां बुनलो, दरअसल बुनने में सीधी और उलटी कड़ी बुनना ही असली दो बातें हैं जिन के उलट फेर से बहुत प्रकार के नमूने बनते हैं, इन दो बातों का हर प्रकार की बुनावट में काम पड़ेगा इस लिये इन दोनों का आज अच्छी तरह से अभ्यास करलो।

ली०—बहिन देखो मैंने यह सीधी कड़ियां और यह उलटी कड़ियां बुनी हैं; लेकिन यह तो दोनों एक सी ही बुनावटें हैं।

क०—एक सी तो होती ही हैं।

ली०—यह क्यों ?

क०—देखो बुनावठ की एक तरफ़ (अ) तुम्हारे सामने है और एक तरफ़ (ब) पीछे है—अगर इस वक्त जब कि (अ) तुम्हारे सामने है तुम सीधी कड़ियां बुनोगी और जो जाली बनेगी वह बिलकुल वैसी ही होगी जैसी कि उस वक्त बनेगी जब कि तुम तरफ़ (ब) को अपने सामने कर के उलटी कड़ियां बुनोगी। और अगर तरफ़ (अ) को अपनी तरफ़ करके उलटी कड़ियां बुनोगी तो उसकी जाली बिलकुल वैसी ही होगी जैसी कि तरफ़(ब)को अपनी ओर करके सीधी कड़ियां बुनने से, यानी (अ) या (ब) की तरफ़ सीधी कड़ियां बुनने से बुनावट की दूसरी तरफ़ उलटी जाली होगी और उलटी बुनने से सीधी। देखो ! एक टुकड़ा इनमें से तुमने सीधी कड़ियां बुनकर बुना है और दूसरा उलटी कड़ियां

बुनकर और इन दोनों में तुमने आठ २ पांतियां बुनी हैं; अब मैं तुमको यह दिखाती हूं कि दोनों टुकड़ों की बुनावट एकसी क्यों है।

देखो! पहली पांती तुमने सीधी बुनी है इस लिये (अ) की तरफ़ सीधी जाली है, दूसरी पांती तुमने (ब) की तरफ़ सामने करके सीधी बुनी है जिस के सबब से (अ) की तरफ़ उलटी जाली पड़ी है; इसी तरह (अ) की तरफ़ तीसरी, पांचवीं और सातवीं पांती की जाली सीधी और चौथी, छटी और आठवीं की जाली उलटी पड़ी है यानी (अ) की तरफ़ नम्बरवार एक एक जाली सीधी और उलटी है और क्योंकि दूसरी तरफ इसका उलटा होना चाहिये इस लिये उधर एक एक जाली उलटी और सीधी है; अब देखो! इस दूसरे टुकड़े में तुमने पहली पांती उलटी बुनी है इस लिये (अ) की तरफ़ उलटी जाली पड़ी है और क्योंकि दूसरी पांती बुनते समय तरफ़ (ब) तुम्हारे सामने थी और तुमने वह उलटी बुनी है इस लिये (अ) की तरफ़ उसकी जाली सीधी पड़ी है और इसी तरह (अ) की तरफ़ तीसरी, पांचवीं और सातवीं पांती की जाली उलटी पड़ी है और चौथी, छटी और आठवीं की सीधी यानी नम्बरवार एक २ जाली उलटी और सीधी है और दूसरी तरफ़ एक एक जाली सीधी और उलटी यानी इस टुकड़े की तरफ़ (अ) दूसरे टुकड़े की तरफ़ (ब) की सी है और इसकी तरफ़ (ब) उसकी तरफ़ (अ) की सी; अब तुम समझगईं कि दोनों तरह से कड़ियां बुनकर एकसी बुनावट क्यों आती है; यह बुनावट **सीधीबुनावट** कहलाती है (चित्र ३१)।

अब मैं तुमको कुछ वह बुनावटें बताऊंगी जिनमें सिर्फ इनही

दो रीतियों से कड़ियां बुनने की आवश्यकता पड़ेगी।

ली०—हां! मैं समझ गई।

चौथा परिच्छेद

कड़ी सरकाना और सादा, पट्टीदार, फलीदार, आड़ी, धारीदार और खड़ीधारीदार बुनावट

क०—आओ मैं तुमको पहले **सादा बुनावट** बताऊं; इसके बुनने में तुमको कुछ कठिनता न होगी क्योंकि इस के बुनने के लिये उनही दो बातों की आवश्यकता है जो मैं तुमको कल बता चुकी हूं याना उलटी और सीधी कड़ी बुनना; इस के बुनने की रीति यह है कि पहली सब पांती सीधी कड़ियां बुनकर बुनो और दूसरी पांती कड़ियां उलटी बुनकर फिर इन ही दोनों पांतियों को दोहराती जाओ इस तरह की बुनावट दोनों तरफ़ एकसी नहीं होती एक तरफ़ सीधी (चित्र ३२) और दूसरी तरफ़ उलटी (चित्र ३३) होती है। यह बनयान, मोज़े, दसताने आदि के बनानेमें काम आती है यानी उस प्रकार की चीजों के बनाने में जिनका उलटा सीधा होता है।

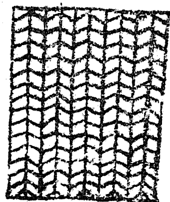
ली०—इस में तो कोई नई बात नहीं सिर्फ एक पांती सीधी और एक पांती उलटी बुनने का काम है मैं इस को बुनकर कल तुमको दिखादूंगी; इस समय कोई और बुनावट सिखाओ।

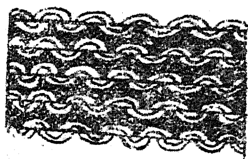
क०—अच्छा तो पहले ऐसी ही सहल दो एक और हैं वह तुम को बतादूं फिर और तरह की बुनावटें बताऊंगी! एक ढंग की बुनावट जो **पट्टीदार** कहाती है इस तरह बुनी जाती है कि पहली पांती सीधी बुनो और दूसरी पांती उलटी बुनो,

तीसरी और चौथी पांती सीधी और पांचवीं उलटी बुनो; फिर बराबर दो पांती सीधी और एक पांती उलटी बुनती चली जाओ—यह बुनावट दोनों ओर एक सी होती है इस लिये बहुतसी चीजों में काम आती है (चित्र ३४)

एक दूसरी प्रकार की बुनावट है जो **फलीदार** कहाती है—यह बनयान, मोज़े, कफ़, टोपे और बहुतसी और चीजों के काम की होती है क्योंकि यह दोनों ओर एकसी होती है और खिंचने से बढ़ जाती है—इस के लिये दो दो के हिसाब से कड़ियां डाल लो और इस तरह बुनोः—पहली एक कड़ी सीधी बुनलो; पिंडे की ऊन जो पीछे की तरफ़ लटकती है दोनों सलाइयों के बीच में होकर अपने सामने को ले आओ यह **धागा आगे लाना** कहलाता है (चित्र ३५); फिर एक कड़ी उलटी बुनो और ऊन को जो अब सामने है सलाइयों के बीच में होकर पीछे को फेंक दो, यह **धागा पीछे लेजाना** कहलाता है (चित्र ३५ अ); इसी तरह से एक कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटी पांती के आख़ीर तक बुनती जाओ—अब इसी तरह एक कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटी की सब पांतियां बुनती चलो। लेकिन यह ध्यान रक्खो कि पांती अगर सीधी कड़ी पर ख़त्म हो तो अगली पांती उलटी कड़ी बुनकर शुरू करो यानी जो कड़ी एक पांती में सीधी बुनी गई है दूसरी में उलटी बुनी जायेगी और जो पहली पांती में उलटी बुनी गई है दूसरी में सीधी बुनी जायेगी।

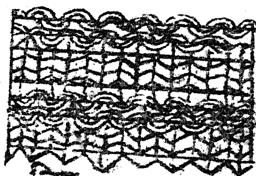
अगर फली ज्यादा चौड़ी रखना मंजूर हो तो एक२ कड़ी सीधी और उलटी की बजाय दो दो या तीन तीन कड़ियां सीधी और उलटी बुनो।



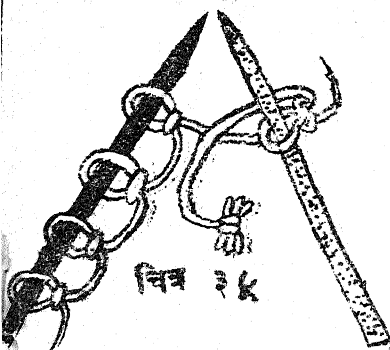


चित्र १३

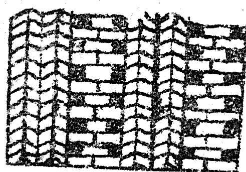
चित्र १२



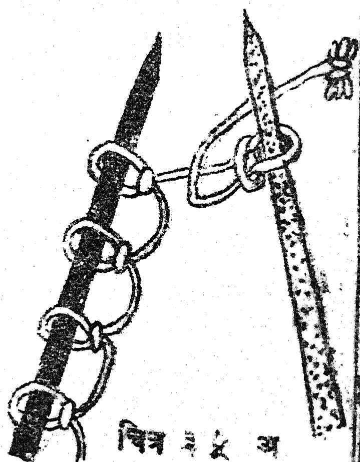
चित्र १४



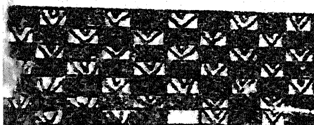
चित्र १५



चित्र १६



चित्र १५ अ



चित्र १७

ली०—मेरी समझ में फलीदार बुनावट अच्छी तरह आगई और देखो इतना टुकड़ा (चित्र ३६) मैंने बुन लिया है अब कोई और बुनावट बताओ ।

क०—अच्छा तो लो तुमको **आड़ी बुनावट** (चित्र ३७) बताती हूं:— यह मोटी सलाइयों और मोटी ऊन से बुनी जाये तो बहुत अच्छी मालूम होगी—इसके शाल, वासकट आदि बनाये जाते हैं; पहले दो दो के हिसाब से यानी सम कड़ियां डालो और जैसे मैं बताती जाऊं बुनो ।

पांती १—एक कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटी पांती के अखीर तक बुनती जाओ ।

पांती २—एक कड़ी उलटी और एक कड़ी सीधी पांती के अखीर तक बुनो ।

इन ही दोनों पांतियों को जितना चाहो दोहराती जाओ यह तो मैंने तुम को उस वक्त के लिये बताया जब कि तुम ने दो दो के हिसाब से कड़ियां डालीं लेकिन अब विषम कड़ियां डालो और इस तरह बुनो ।

ली०—विषम कैसी कड़ियों को कहते हैं ?

क०—जो कड़ियां दो से भाग देने से पूरी कट जाती हैं सम कहाती हैं और जो दो से नहीं कटतीं वह विषम कही जाती हैं २, ४, ६, ८ सम हैं और १, ३, ५, ७, ९, ११ विषम ।

ली०—लो ! मैंने १५ कड़ियां डाल ली हैं ।

क०—अच्छा ! तो इस तरह बुनना शुरू करो ।

पांती १:—पहली कड़ी सरकाओ, फिर एक कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटी पांती के अखीर तक बुनो । अब जितना लंबा बुनना चाहो इसी एक पांती को दोहरा कर बुनो ।

ली०—कड़ी कैसे सरकाई जाती हैं ?

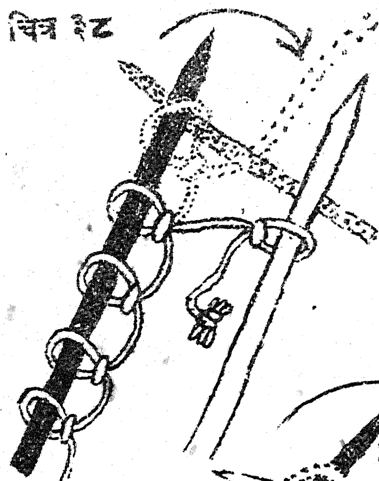
क॰—**कड़ी सरकाना** भी तुम को बताती हूं:— देखो इसकी दो रीतियां हैं एक सीधी सरकाना और दूसरी उलटी सरकाना। **सीधी कड़ी सरकाना** हो तो सीधी सलाई की नोक को इस कड़ी में जो सरकानी है सीधी कड़ी बुनने की तरह डालो और इस कड़ी को बाईं सलाई पर से सीधी सलाई पर उतार लेजाओ (चित्र ३८); **उलटी कड़ी सरकाना** है तो सीधी सलाई इस कड़ी में बाहर से उलटी कड़ी बुनने की तरह डालो और कड़ी को बाईं सलाई पर से उतार कर सीधी पर ले जाओ (चित्र ३९)। देखो यह बिलकुल सहल है लेकिन इसका जानना बहुत आवश्यक है हर चीज़ जो चौरस बुनो उसमें ध्यान रक्खो कि हर पांती की पहली कड़ी को उलटी सरकादो। यदि ऐसा न करोगी तो किनारा गांठ गठीला होजायगा और देखने में भी भद्दा मालूम होगा लेकिन जो हर पांती की पहली कड़ी सरका दिया करोगी तो बुनावट के दोनों किनारों पर एक ज़ंजीर सी बन जायेगी जिससे पांतियां गिनने और बुनावट को दूसरी बुनावटके साथ सीने में सुगमता होगी—अब तो इस को न भूलोगी ?

ली॰—यह कोई कठिन बात है जो मुझको याद न रहेगी ?

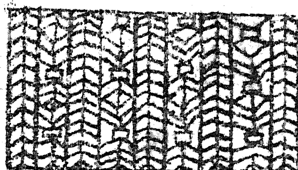
क॰—नहीं, मुझको विश्वास है तुम नहीं भूलोगी। अब लाओ तुम को **धारीदार बुनावट** बुनना बताऊं—इसके लिये विषम कड़ियां डालो।

पांती १:—एक कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटी पांती के अखीर तक बुनो।

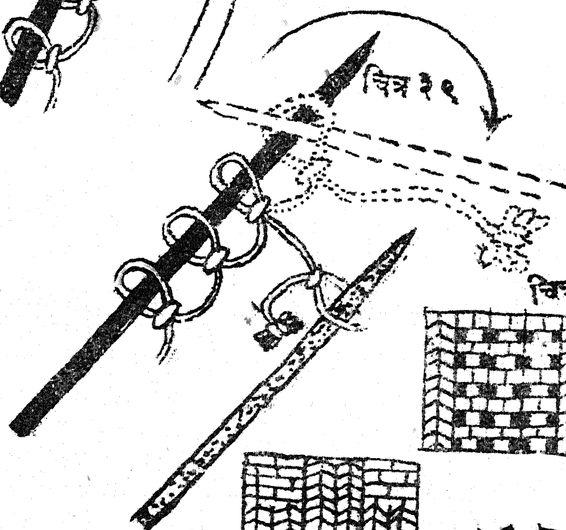
पांती २:—सब कड़ियां उलटी बुनो।



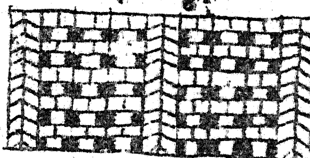
চিত্র ৩৮



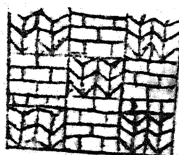
চিত্র ৫০



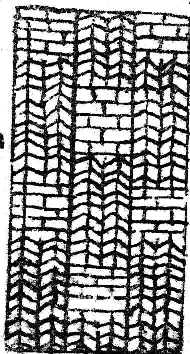
চিত্র ৩৯



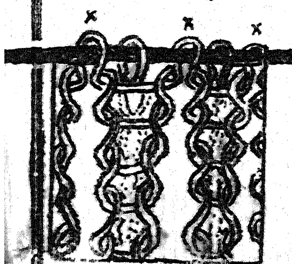
চিত্র ৫১



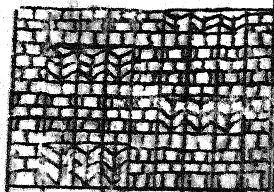
চিত্র ৫২



চিত্র ৫৩



চিত্র ৪



চিত্র ৫৪

इन ही दो पांतियों को बराबर दोहराती जाओ।

इस बुनावट को यदि गोल बुनना हो तो सम यानी दो दो के हिसाब से कड़ियां डाली जायेंगीं और पहला चक्कर एक कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटी बुनकर किया जायेगा और दूसरे चक्कर में सब कड़ियां सीधी बुनी जायेंगीं फिर इनहीं दो चक्करों को दोहराना होगा।

ली०—देखो! यह तो मैंने बुन लिया (चित्र ४०) पर मैं नहीं जानती कि गोल कैसे बुना जाता है, यह बतादो।

क०—गोल चार या ज़ियादा सलाइयों से बुना जाता है, मोज़े, दसताने आदि सब इसी बुनावट में बुने जाते हैं, लेकिन अभी तुम्हारे हाथ चौरस बुननेमें सध जाऐं तब तुमको गोल बुनना भी बताऊंगी; इस समय गोल बुनने में तुमको कठिनाई पड़ेगी।

ली०—ख़ैर फिर सीखलूंगी।

क०—लीलावती! अब तुम **खड़ी धारीदार बुनावट** जो मैं तुमको बताती हूं बुनो; इस के लिये चार चार के हिसाब से एक कड़ी ज्यादा डाल लो और इस तरह बुनोः—

पांती १:—पहली कड़ी उलटी सरकाओ, अब बराबर तीन कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटी पांतीके अख़ीर तक बुनती जाओ।

पांती २:—पहली कड़ी उलटी सरकाओ, एक कड़ी सीधी बुनो, एक उलटी, अब तीन सीधी और एक उलटी बुनती जाओ, जब दो कड़ियां रह जायें तब उनको सीधी बुनलेना।

अब इन दोनों पांतियों को दोहराओ, यह बुनावट दोनों तरफ़ एकसी है (चित्र ४१) यह बनियान आदि के लिये अच्छी होती है।

की०—बहन ! तुम सच कहती थीं कि सीधी और उलटी ही कड़ियां बुनने से कितनी ही प्रकार की बुनावटें बुनी जाती हैं।

क०—अभी क्या है; अभी तो बहुतसी और बाक़ी हैं; उनमें से तीन चार प्रकार की कल बतादूंगी बाक़ी फिर किसी रोज़ बताऊंगी क्योंकि उन के लिये कैई और बातें तुमको सिखानी होंगीं।

की०—बहन ! कल नहीं परसों बताना कल तक मैं इन बुनावटों को जो तुमने आज सिखाई हैं दो चार दफ़े बुन २ कर देखलूं

क०—अच्छा !

पांचवां परिच्छेद

पांसे की बुनावट, चारख़ाने की बुनावट, टोकरा बाफ़ी बुनावट और दोहरी बुनावट

की०—बहन ! अगर तुमको इस समय कोई और काम न हो तो वह बुनावटें जिन के लिये तुम ने मुझसे परसों कहा था बताओ

क०—नहीं और काम नहीं, और होता भी तो क्या ? आओ आज तुमको एक प्रकारकी बुनावट जिसको **पांसेकी बुनावट** कहते हैं बताऊं; इस के लिये चार २ के हिसाब से कड़ियां डालको और ऐसे बुनो:—

पांती १:—सीधी कड़ी २, उलटी कड़ी २, पांती के अख़ीर तक दोहराती जाओ।

पांती २:—पहली पांती की तरह बुनो।

पांती ३:—उलटी कड़ी २, सीधी कड़ी २, पांती के अख़ीर तक दोहराती जाओ।

पांती ४:—पांती ३ की तरह।

अब इन चारों पांतियों को बारी २ से दोहराती रहो। यह

बुनावट दोनों तरफ़ एक सी होती है इसकी जाकट बनियान नेकटाई और अनेक प्रकार की चीजें बुनी जा सकती हैं (चित्र ४२) ।

अगर इस ही बुनावट का पांसा ज्यादा बड़ा रखना चाहती हो तो इस तरह बुनोः—

पांती १ः—उलटी कड़ी २, सीधी कड़ी २, पांती के अख़ीर तक दोहराओ ।

पांती २ः—पांती १ की तरह ।

पांती ३ः—सीधी कड़ी २, उलटी कड़ी २, पांती के अख़ीर तक दोहराओ ।

पांती ४ः—पांती १ की तरह ।

पांती ५ः—पांती ३ की तरह ।

पांती ६ः—पांती ३ की तरह ।

पांती ७ः—पांती १ की तरह ।

पांती ८ः—पांती ३ की तरह ।

अब इन ही आठ पांतियों को दोहराकर थोड़ासा बुनो ।

चारख़ाने की बुनावट इस तरह बुनी जाती है—इस के लिये चार चार के हिसाब से दो कड़ियां अधिक डाल लो और यों बुनोः—

पांती १ः—सीधी बुनो ।

पांती २ः—उलटी बुनो ।

पांती ३ः—सीधी कड़ी २, और उलटी कड़ी २, बारी बारी से बुनती जाओ, जो दो कड़ियां अख़ीर में अकेली बचें उनको सीधी बुनो ।

पांती ४ः—उलटी कड़ी २, और सीधी २, बारी बारी से बुनती जाओ, जब दो कड़ियां रहें तो उनको उलटी बुनो ।

पांती ५:—पांती ३ की तरह बुनो।

पांती ६:—उलटी बुनो।

पांती ७:—सीधी बुनो।

पांती ८:—तीसरी पांती की तरह।

पांती ९:—चौथी पांती की तरह।

पांती १०:—पांचवीं पांती की तरह।

अब इन दसों पांतियों को बारी बारी से दोहराकर थोड़ा सा बुनो और मुझको दिखाओ।

डी०—लो देखो यह (चित्र ४३) ठीक बुना गया है या नहीं ?

क०—ठीक है।

डी०—लेकिन इस के विषय में तुम ने यह तो बताया ही नहीं कि यह किस किस चीज़ के बनाने में काम आवेगी ?

क०—यह बुनावट वासकट, बनियान, जाकट, ज़नाने दामन और बहुत सी दूसरी चीज़ों के लिये बहुत ही उपयोगी है।

एक दूसरी बुनावट कि जिसकी शक्ल टोकरे की बुनावट की सी होने के कारण **टोकराबाफ़ी** (चित्र ४४) कहाती है तुमको बताती हूं। यह भी बनियान आदि के काम आती है। इस के लिये आठ आठ के हिसाब से पांच कड़ियां अधिक डालनी चाहियें।

मैं इस के बुनने की रीति एक कागज पै लिखे देती हूं तुम इस को देख देख कर बुनना जब तक मैं अपनी जाकट सीती हूं।

पांती १:—सरकाओ १, उलटी ४, सीधी ३, [उलटी ५, सीधी ३, दोहराती जाओ] और अखीरी पांच कड़ियां उलटी बुनो।

पांती २:—सरकाओ १, सीधी ४, उलटी ३, [सीधी ५,

उलटी ३, दोहराओ] और अख़ीर की पांच कड़ियां सीधी बुनो।

पांती ३ः—पहली पांती की तरह बुनो।

पांती ४ः—सरकाओ १, [उलटी ३, सीधी ५, दोहराओ] और अख़ीर पै उलटी ३, सीधी १ बुनो।

पांती ५ः—सरकाओ १, [सीधी ३, उलटी ५, दोहराओ] और अख़ीर पै सीधी ३, उलटी १ बनो।

पांती ६ः—पांती ४ की तरह बुनो।

इन छैः पांतियों को दोहराती जाओ।

ली०—बहिन! यह [ ] निशान क्यों लगाया है।

क०— यह [ ] निशान इस बात का है कि जो कुछ इसके भीतर लिखा है उसको बार २ बुनो यानी दोहराओ—अगर तुम इस बुनावट के लिये ३७ कड़ियां डालकर पहिली पांती बुनोगी तो इस तरह बुनोगीः—

सरकाओ १, उलटी ४, सीधी ३, [उलटी ५, सीधी ३, उलटी ५, सीधी ३, उलंटी ५, सीधी ३,] उलटी ५।

अब तुम्हारी समझ में आगया कि इस निशान से क्या मतलब है।

ली० हां समझगई।

क० लो एक बहुत ही सहल बुनावट आज और तुमको बताती हूं, यह **दोहरी बुनावट** कहाती है इसके दोनों परत बीचमें अलग २ रहते हैं लेकिन किनारों पर जुड़े होते हैं। यह आसतीनों, जुराबों की ऐड़ी और पञ्जे, नेकटाई और बहुत सी और चीजों के काम आती हैं; इसको बटुआ बुनने के काम में भी लासकते हैं; इस के लिये दो दो के हिसाबसे कड़ियां डाल लो और इस तरह बुनना शुरू करोः—

ऊनको आगे लाओ और पाहिली कड़ी को उलटी सरकाओ, ऊनको सलाइयों के बीच में होकर पीछे लेजाओ और अगली कड़ी सीधी बुनो; यानी एक कड़ी उलटी सरकाती और एक कड़ी सीधी पांती के अखीर तक बुनती चलो अब दूसरी पांती और अगली सब पांतियोंको इसी तरह बुनो।

तुमने देखा कि इस बुनावट में वह कड़ी जो एक पांती में सरकाई जाती है दूसरी पांती में सीधी बुनी जाती है और जो कड़ी एक पांती में सीधी बुनी जाती हैं दूसरी पांती में उलटी सरकाई जाती है; बुनावट को देखो इस में सीधी कड़ी सामने की तरफ़ दिखाई पड़ती हैं लेकिन सरकाई हुइ कड़ी बुनावट के पीछे की तरफ़ होने की वजह से थोड़ी ही दिखाई देती है (चित्र ४५ में निशान लगीं कड़ियां सीधी कड़ियां है बाक़ी सब सरकाई हुई कड़ियां हैं)।

अब मैं तुमको फिर किसी दिन और बुनावटें आदि बताऊंगी; इस बीच में इन बुनावटों को जो मैं बता चुकी हूं पक्का कर लेना।

छटा परिच्छेद।

बटाना, कड़ी बनाना, बढ़ाना और बांधना या ख़तम करना।

ली०—देखो बहिन ! मैं यह बुनकर लाई हूं; अब यह बताओ मेरा हाथ साफ़ हुआ या नहीं ?

क०—हां ! पहिले से तो अच्छा बुनने लगी हो लेकिन कहीं २ बुनावट को ढीला और कहीं २ कड़ा कर दिया है। बुनने में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि बुनावट हर जगह एकसी हो; इस के लिये यह करना चाहिये कि सब कड़ियां

एकसी बुनो न बहुत कड़ी न बहुत ढीली ।

स्त्री०—लेकिन कड़ी और ढीली कड़ियों का कैसे अन्दाज़ हो ?

क०—बस इतना ध्यान रक्खो कि कड़ियां सलाई पर इतनी कड़ी रहें कि सुगमता से इधर उधर सरक सकें ।

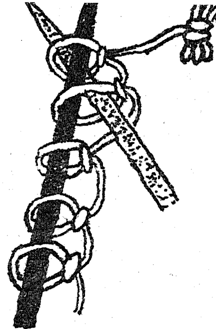
स्त्री०—अच्छा ! अब ध्यान रक्खूंगी; अब वह बातें जो तुम बताने कहती थीं बताओ ।

क०—तुम को एक कड़ी सीधी और उलटी बुनना तो पहिले बता ही चुकी हूं और तुम बुन ही लेती हो; अब तुम को **दो कड़ियां एक साथ बुनना** बताती हूं; यह बिलकुल एक कड़ी बुनने की तरह बुनी जाती है बस फ़र्क़ इतना है कि सीधी सलाई को एक कड़ी में होकर डालने के बजाय दो कड़ियों में होकर डालदो फिर मामूली तौर से ऊन सलाई पर फेर कर कड़ी बुनलो । यानी अगर **दो कड़ियां एकसाथ सीधी बुनना** चाहतीहो तो सीधी कड़ी बुननेकी तरह सलाई को सामने से दो कड़ियों में डालो (चित्र ४६) और ऊन को सलाई पर फेर कर सलाई से सामने की तरफ़ निकाल लो और इन दोनों कड़ियों को जिन में होकर सीधी सलाई डाली थी बांई सलाई पर से गिरा दो; यह एक कड़ी सीधी सलाई पर दो कड़ियों की बजाय आगई । अब **दो कड़ियां एक साथ उलटी** बुनोः— यानी सीधी सलाई को एक साथ दो कड़ियों में होकर बाहर से बिलकुल उसी तरह डालो जैसे कि एक कड़ी उलटी बुनने के लिये डालती हो (चित्र ४७) और सीधी सलाई पर ऊन फेरकर इसी सलाई से ऊन को पीछे की तरफ़ निकाल लो और इन दोनों कड़ियों को जिन में होकर ऊन निकाली है बांई सलाई पर से गिरादो अब देखो दो कड़ियों में से एक

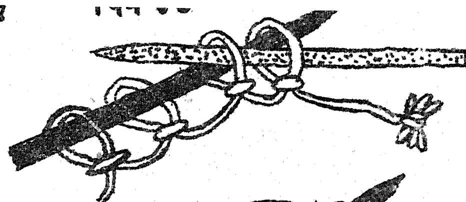
कड़ी बनकर सीधी सलाई पर आगई (इस तरह कड़ी बुनने से बुनावट में इन कड़ियों की जगह कुछ ऊंची हो जाती है इस कारण यह फूलबेलदार बुनावट में काम आती हैं)।

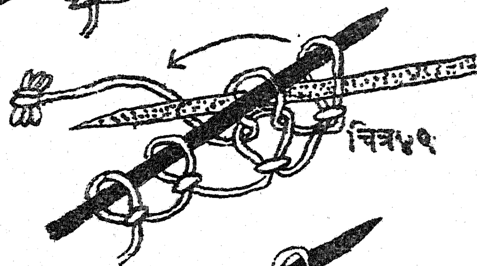
की०—ऐसे बुनने से तो कड़ियां आधी ही रहजायेंगीं, कहीं दो चार पांती बुनूंगी तो दो चार ही रहजायेंगीं।

क०—हां! यह तो होगा ही; ऐसा करने से अखीर में सिर्फ एकही कड़ी रहजायेगी; लेकिन यह कोई बुनावट थोड़ाही है यह तो मैंने तुमको कड़ियां बुनने की एक रीति बताई है; यह एक रीति है जिस से बुनावट को तंग किया जाता है; यह **घटाना** कहलाता है यानी कड़ियों की तादाद कम करना; कड़ियां कम करदेने से बुनावट की चौड़ाई कम होजाती है; इस की आवश्यकता उस वक्त होती है जब कोई चीज ठीक नाप की बुननी हो जैसे बनियान, जाकट, आदि को कमर में ठीक करने को और दसतानों को उंगलियों के पोरुओं पर कम करने को; दूसरी रीति कड़ियां कम करने या घटाने की **सरकबांध** होती है; इस रीति से कम करने के लिये बांई सलाई पै से एक कड़ी सीधी सलाई पर बिना बुने सरकालो; अब एक अगली कड़ीको बुनलो; इसतरह दो कड़ियां, यानी एक सरकाई हुई और एक बुनी हुई, सीधी सलाई पर आगई (चित्र ४८) अब सरकाई हुई कड़ी को बाई सलाई की नोक से ऊंचा उठाओ (चित्र ४९) और बुनी हुई कड़ी के ऊपर होकर सीधी सलाई की नोक पर से नीचे गिरादो; इस भांति करने से भी देखो एक कड़ी सलाई पर से कम होगई। कभी २ तीन कड़ियां एक साथ बुनकर भी घटाते हैं; **तीन कड़ियां एक साथ सीधी** बुनने की

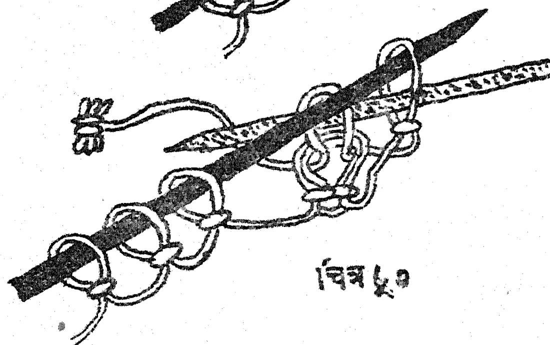


चित्र ४६

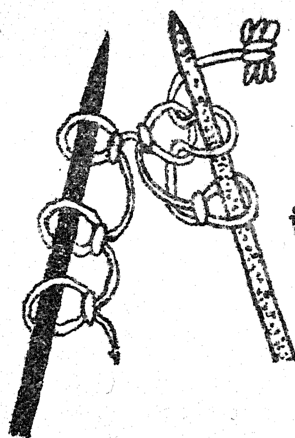




चित्र ४९



चित्र ५०



चित्र ४८

दो रीति हैं: (१) तीन कड़ियों में एक साथ सलाई डाल कर उन को एक कड़ी की तरह बुनो; (२) या पहिली कड़ी को सरकाओ और अगली दो कड़ियों को एक साथ सीधी बुनकर सरकाई हुई कड़ी को इस कड़ी के ऊपर हो-कर जो दो कड़ियों की एक होकर आई है (चित्र ५८) सीधी सलाई के नीचे उतारदो; इस भांति करने से तीन कड़ियों की एक कड़ी सलाई पर रहेगी।

तीन कड़ियां एक साथ उलटी भी इसी भांति बुनी जाती हैं; कड़ियां घटानेका फूल बेलदार बुनावट में भी काम पड़ता है। जब सूराख़ करना मंजूर होता है तब एक साथ कड़ियां बुनने या सरक बांध के बाद कड़ियों की कमी पूरी करने के लिये एक या दो कड़ियां बना लेते हैं इस तरह बुनावट में एक सूराख़ हो जाता है।

ली०—कड़ी कैसे बनाते हैं ?

क०— **कड़ी बनाना** अधिकतर फूल बेलदार बुनावटों में काम आता है क्योंकि इस से सूराख़ होजाता है और इसी कारण इस को मामूली बुनावट के बढ़ाने के काम में नहीं लाते हैं दर असल कड़ी बनाना भी कड़ी ज्यादा करना है; इसी लिये जब फूल बेलदार बुनावट में कड़ी बनाई जाती है तो सलाई पर की कड़ियों की तादाद असली ही क़ायम रखने के लिये कड़ी बनाने के पहिले या बाद में सरक बांध करनी या कड़ियां एक साथ बुननी चाहियें। कड़ी बनाने के लिये ऊन को सीधी सलाई के चारों ओर या ऊपर फेरते हैं फिर अगली कड़ियां बुनने लगते हैं; इस तरह एक फन्दा सलाई पर बनजाता है और अगली पांतीमें इस को भी और कड़ि-

यों की भांति बुनने से एक कड़ी बढ़ जाती है। अगर दो सीधी या दो उलटी कड़ियों के बीच में कड़ी बनाना है तो ऊन को सलाई के चारों ओर फेरना होगा; (चित्र ५१ व ५२) अगर पिछली कड़ी जो बुनी जाचुकी है उलटी बुनी गई है तो ऊन को सिर्फ़ सीधी सलाई के ऊपर होकर सीधे हाथ की तरफ़ डालना होगा (चित्र ५३) और अगर पिछली कडी सीधी बुनी गई है तो ऊन को सीधे हाथ की तरफ़ से सीधी सलाई के ऊपर लाना होगा (चित्र ५४)।

की०—कड़ी बनाना अभी मेरी समझ में अच्छी तरह नहीं आया है एक दफ़े फिर समझा दो।

क०—अच्छा! तो पहिले तुमको दो सीधी कड़ियों के बीच में कड़ी बनाना बताती हूँ; तुम चौदह कड़ियां सलाई पर डाल लो:—

पांती १:—सीधी बुनो।

पांती २:—उलटी बुनो।

पांती ३:—दो कड़ियां सीधी बुनो, एक कड़ी ऊन को सीधी सलाई के चारों ओर फेर कर यानी पहिले सीधे हाथ की ओर से सीधी सलाई के ऊपर फिर दोनों सलाइयों के बीच में होकर पीछे को ले जाकर बनाओ (चित्र ५१), अगली दो कड़ियां एक साथ सीधी बुनो, एक कड़ी सीधी बुनो, [एक कड़ी पहिले की तरह बनाओ, दो कड़ियां एक साथ सीधी बुनो, एक कड़ी सीधी], अब [ ] इनको दोहराती जाओ।

अब इन तीनों पांतियों को बारी बारी से बुनो कि सीधी कड़ियों के बीच में कड़ी बनाना अच्छी तरह आ जाये।

की०—यह तो मुझको बनानी आ गई, अब दो उलटी कड़ियों के बीच में कड़ी कैसे बनाऊँ?

क०—फिर १४ कड़ियां डाल लो और यों बुनोः—

पाँती १:—सीधी बुनो।

पाँती २:—दो कड़ियां उलटी बुनो, और एक कड़ी इस तरह बनाओ कि ऊन जो इस समय तुम्हारे सामने है इसको सीधी सलाई के ऊपर होकर पीछे को ले जाओ और फिर दोनों सलाइयों के बीच में होकर अपने सामने ले आओ (चित्र ५२) अब दो अगली कड़ियां एक साथ उलटी बुनो, एक कड़ी उलटी बुनो, फिर [एक बनाओ, दो एक साथ उलटा, एक उलटी, दोहराती जाओ]।

इन दोनों पाँतियों को बारी बारी से कई दफ़े बुनो।

ली०—यह भी मैं समझ गई, लेकिन यह तो बताओ कि जो मैं दो सीधी उलटी या उलटी सीधी कड़ियों के बीच में कड़ी बनाना चाहूँ तो क्या करूँ?

क०—जैसे मैं बताती हूँ वैसे बुनो तो यह बात भी तुम्हारी समझ में आ जायगी।

पांती १:—सीधी बुनो।

पांती २:—[एक कड़ी सीधी बुनो, ऊन जो इस समय सलाइयों के पीछे है इसको सीधे हाथ की ओर से सीधी सलाई के ऊपर होकर सामने लाकर एक कड़ी बनाओ (चित्र ५३), दो कड़ी एक साथ उलटी बुनो] दोहराती जाओ।

इन दोनों पांतियों को दोहरा दोहरा कर सीधी और उलटी कड़ी के बीच में कड़ी बनाने का अभ्यास कर लो।

अब उलटी और सीधी कड़ी के बीच में कड़ी बनाने का अभ्यास करने के लिए इस तरह बुनोः—

पांती १:—सीधी बुनो।

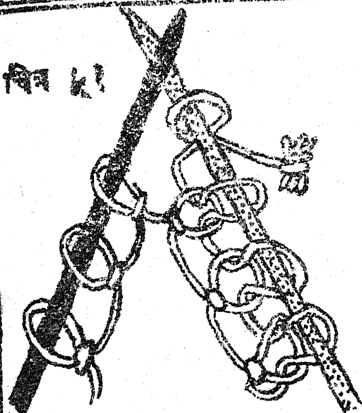
पांती २:—[एक कड़ी उलटी बुनो, एक कड़ी ऊन को सीधी सलाई के ऊपर होकर पीछे को डाल कर बनाओ (चित्र ५४), एक साथ सीधी दो], दोहराओ ।

इन दोनों पांतियों को कई दफ़े बुनो ।

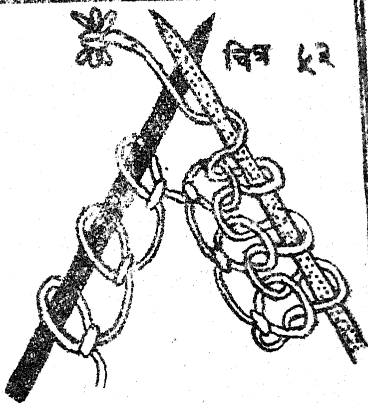
यह अच्छी तरह याद रक्खो कि अगर सीधी और उलटी कड़ी के बीच में कड़ी बनाना है तो ऊन को सीधे हाथ की तरफ़ से सीधी सलाई के ऊपर होकर सामने ले आओ; यह **धागा ऊपर लाना** कहलाता है (चित्र ५४) अगर उलटी और सीधी कड़ी के बीच में कड़ी बनाना है तो ऊन को सीधी सलाई के ऊपर होकर सीधे हाथ की तरफ़ डाल देते हैं; यह **धागा नीचे डालना** कहलाता है (चित्र५३) अगर दो उलटी कड़ियोंके बीचमें कड़ी बनाना है तो ऊनको सीधी सलाई के ऊपर होकर सीधे हाथकी तरफ़ पीछे को लेजाकर फिर दोनों सलाईयों के बीचमें होकर सामने को ले आतेहैं यह **धागा सलाई पर नीचेसे ऊपर फेरना** कहलाता है (चित्र ५२); और अगर दो सीधी कड़ियों के बीच में कड़ी बनाना है तो ऊन को सीधे हाथ की तरफ़ से सीधी सलाई के ऊपर होकर और दोनों सलाइयों के बीच में होकर पीछे को डाल दो यह **धागा सलाई पर ऊपर से नीचे फेरना** कहलाता है (चित्र ५१)

ली०—बहिन ! तुमने अभी कहा था कि काड़ियां बनाने को कड़ियां बढ़ाने के काम में मामूली बुनावट में कम लाते हैं; तो फिर वह कौनसी रीति है जिस से कड़ियों की तादाद सलाई पर बढ़ाई जाती है ?

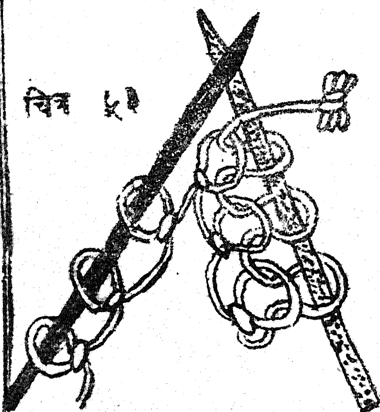
क०—**बढ़ाना** यानी सलाई पर कड़ियोंकी तादाद ज्यादा करना;



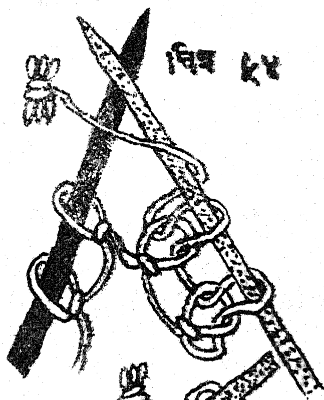
चित्र ५१



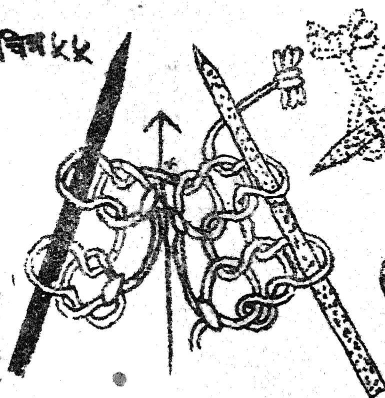
चित्र ५२



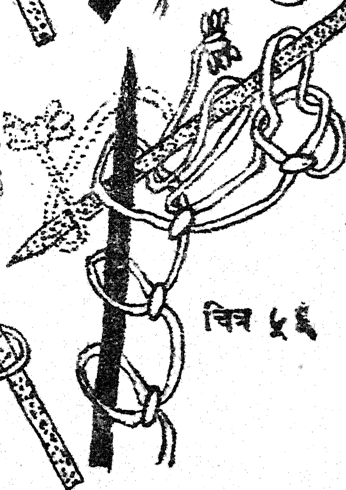
चित्र ५३



चित्र ५४



चित्र ५५



चित्र ५६

इसकी कई रीति हैं; सब से सहल **पहिली रीति** है जो सीखतरों के लिये ठीक है:—जिन दो कड़ियों के बीच में कड़ी बढ़ानी हो उन दोनों के बीच की ऊन के नीचे होकर (चित्र ५५ में तीर के निशान से मालूम होजायगा कि सीधी सलाई की नोक किस तरह डाली जायगी और कड़ियों के बीच की ऊन कौनसी है) सीधी सलाई की नोक को डालो; और इस नोक पर मामूली तरह से ऊन फेर कर एक कड़ी बुनलो; इस रीति से कड़ी बढ़ाने से एक छोटासा सूराख होजायेगा लेकिन इतना नहीं कि बुनावट को खराब करदे

एक **दूसरी रीति** कड़ी बढ़ाने की यह है कि एक कड़ी मामूली तरह से सीधी बुनो लेकिन इस बाईं सलाई की कड़ी को जिस में तुमने एक कड़ी बुनी है सलाई पर से मत गिराओ; अब सीधी सलाई को इस बाईं सलाई की कड़ी में बाहर से डालकर बाईं सलाई के नीचे निकाल दो (चित्र ५६) और मामूली तरह से ऊन सलाई पर फेर कर इस कड़ी को बुनलो; तुम ने देखा इस तरह एक कड़ी ही में से दो कड़ियां होगईं।

कड़ी बढ़ाने की आवश्यकता अधिक तर पांती के शुरू या अखीर में पड़ती है इसलिये तुम को यह भी बताये देती हूं कि शुरू में पहिली कड़ी को सरकाने या बुनने के बाद कड़ी बढ़ाया करना और अखीर में अखीरी कड़ी बुनने के पहिले कड़ी बढ़ाया करना; दूसरे यह भी ध्यान रक्खो कि जब एक पांती में कड़ी बढ़ाओ तो अगली पांती में उस को बुनो; ऐसा कभी न करो कि अगली पांती में भी इस बढ़ाई हुई कड़ी में कड़ी बढ़ाओ क्योंकि ऐसा करने से बुनावट

ख़राब होजायगी। जब किसी नमूने को बुन रही हो तो नमूने को बढ़ाई हुई कड़ियों के बीच में ठीक रक्खो। अब कुछ बुनकर मुझको दिखाओ जिस से मैं यह देख लूं कि तुमको 'सरकाना' 'घटाना बनाना' और 'कड़ी बनाना' अच्छी तरह आगया। तुमको यह पर्चा लिख देती हूं इसके मुआफ़िक़ बुनना:—

२७ कड़ियां डालो और हर पांती की पहिली कड़ी सरकाकर बुनो।

दस पांतियां सादा बुनावट की बुनो।

पांती ११:—शुरू में दो कड़ियां एक साथ सीधी बुनकर और अखीर में सरक बांध करके घटाओ, बीच की सब कड़ियां सीधी बुनो।

पांती १२:—उलटी बुनो।

पांती १३:—पांती ११ की तरह।

पांती १४:—उलटी बुनो।

पांती १५:—पांती ११ की तरह।

पांती १६:—उलटी बुनो; शुरू में तीन कड़ियां एक साथ उलटी बुनकर घटाओ।

पांती १७:—सीधी बुनो; शुरू में तीन कड़िया एक साथ सीधी बुनकर घटाओ।

पांती १८:—उलटी बुनो; शुरू और अख़ीर में दो २ कड़ियां एक साथ बुनकर घटाओ।

पांती १९:—सीधी बुनो।

पांती २०:—पांती १८ की तरह बुनो।

पांती २१:—सरकाओ १, सीधी २, [बनाओ १, एकसाथ सीधी २, चार दफे], सीधी २।

पांती २२:—उलटी बुनो।

पांती २३:—सीधी बुनो।

पांती २४:—सरकाओ १, [सीधी १, बनाओ १, एकसाथ उलटी २, चार दफे]।

पांती २५:—सीधी बुनो।

पांती २६:—उलटी बुनो।

पांती २७:—सरकाओ १, [उलटी १, बनाओ १, एकसाथ सीधी २, चार दफे]।

पांती २८:—उलटी बुनो।

पांती २९:—सीधी बुनो।

पांती ३०:—सरकाओ १, उलटी २, [बनाओ १, एकसाथ उलटी २, चार दफे] उलटी २।

पांती ३१:—सीधी बुनो; शुरू और अखीर में एकएक कड़ी पहली रीति से बढ़ाओ।

पांती ३२:—उलटी बुनो।

पांती ३३:—पांती ३१ की तरह।

पांती ३४:—उलटी बुनो; शुरू में दो कड़ियां पहिली रीति से बढ़ाकर।

पांती ३५:—सीधी बुनो शुरू में दो कड़ियां दूसरी रीति से बढ़ाकर।

पांती ३६:—उलटी बुनो; शुरू में और अखीर में एक एक कड़ी दूसरी रीति से बढ़ाकर।

पांती ३७:—सीधी बुनो।

पांती ३८:—पांती ३६ की तरह।

पांती ३९:—सीधी बुनो।

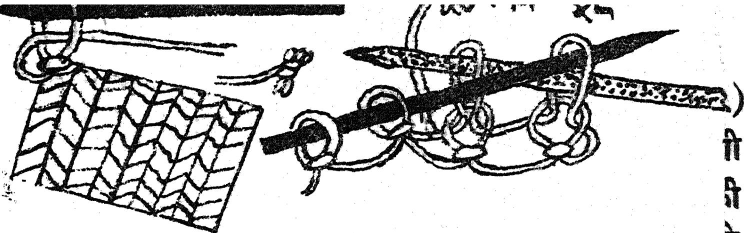
पांती ४०:—पांती ३६ की तरह।

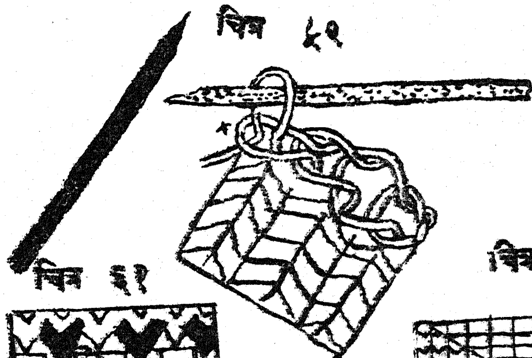
दस पांतियां सादा बुनावट की और बुनकर बुनावट को बांध दो।

प्र०—बुनावट को कैसे बांधते हैं? क्या सलाई को कड़ियों में से बाहर खींच लूं?

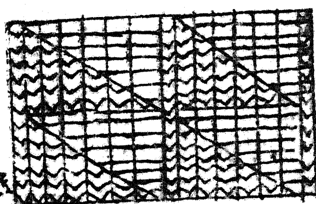
उ०—नहीं ऐसा करने से तो बुनावट का बिलकुल सत्यानाश हो जायगा बुनावट को सलाई पर से उतारने से कड़ियां नीचे को खिसक जाती हैं इस लिये बुनावट को अखीर पर बांध देते हैं; यह **बांधना** या **ख़तम करना** कहलाता है; इसकी दो रीति हैं:—**पहिली रीति** यह है कि बाईं सलाई पर से एकसाथ दो कड़ियां बुनलो; अब इस कड़ीको जो दो कड़ियों की एक होकर सीधी सलाई पर आगई है फिर बाईं सलाई पर वापिस सरकादो; इसी तरह फिर इस सरकाई हुई कड़ी को और एक अगली कड़ी को एकसाथ बुनलो और इस एकसाथ बुनी हुई कड़ी को सीधी सलाई पर से फिर बाईं सलाई पर सरकादो; इसी तरह करते करते जब दो अखीरी कड़ियां एक साथ बुनकर सीधी सलाई पर एक कड़ी होकर आजायें तब उनको तोड़ कर इस कड़ी में होकर बाहर निकाल लो और थोड़ी खींच दो (चित्र ५७)

दूसरी रीति यह है:—पहिले दो कड़ियां अलग अलग बाईं सलाई पर से सीधी सलाई पर बुन लो; अब बाईं सलाई की नोक सीधी सलाई की पहिली कड़ी में बाईं तरफ़ से सीधी तरफ़ को डालो (चित्र ५८) और इस कड़ी को ऊँचा उठा कर दूसरी कड़ी के ऊपर होकर सीधी सलाई के नीचे उतार दो और बाईं सलाई को निकाल लो

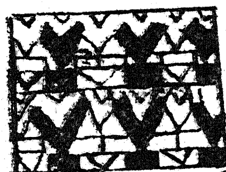




चित्र ५९



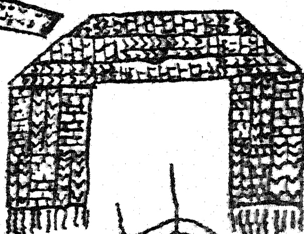
चित्र ६०



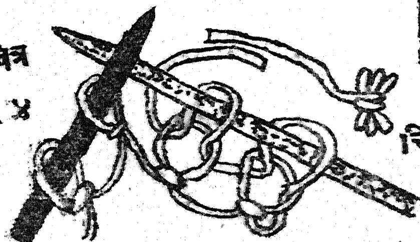
चित्र ६१



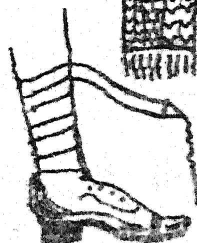
चित्र ६२



चित्र ६३



चित्र ६४



चित्र ६५

इस तरह पाहिली कड़ी दूसरी कड़ी की रोक बनगई (चित्र ५९)
अब एक कड़ी बाईं सलाई पर से और बुनो और सीधी सलाई पर जो पहिले की कड़ी है इसको फिर पहिले की तरह बाईं सलाई की नाक से उठाकर सीधी सलाई पर से उतारदो; अब इसी तरह बाईं सलाई की कड़ियों को एक एक कर के बुनती जाओ; और सीधी सलाई पर जो कड़ी हो उतारती जाओ; जब सब कड़ियां इस तरह से बंध जायें और आखिर में एक कड़ी सीधी सलाई पर रह जावे तब ऊन को तोड़ कर उस कड़ी में होकर खींचलो। अब कुछ बुनावटें तुमको कल बताऊंगी।

सातवाँ परिच्छेद

शकरपारे की, बुँदकीदार और गुलूबन्दी बुनावट।

क०—आओ लीलावती! अगर तुमको इस समय कुछ काम नहो तो दो चार तरह की बुनावटें तुमको और बतादूं।

ली०—हां बहिन! अब और कुछ काम करने को नहीं, सब काम करचुकी हूं।

क०—तो मेरे साथ आओ।

ली०—अपना बुनने का सामान ले आऊं।

क०—अच्छा! जल्दी लाना मैं चलती हूं।

ली०—लो बहिन! मैं आगई; आज तो मुझको लोहे की सलाइयों से बुनना बताओ।

क०—लोहे की सलाइयों से किसी और तरह थोड़ा ही बुना जाता है जो तुमको उन पर बुनना सिखाऊं; हाथी दांत की सलाइयां तो मैने तुमको सिखाने के लिये शुरू में बताई थीं; अब तुम्हारा जिन सलाइयों से जी चाहे उन बुनावटों को

जो मैं तुम्हें सिखा चुकी हूं बुना करो; लेकिन यह बुनावटें जो मैं अब तुमको बताती हूं पहिले हाथी दांत की सलाइयों से ही बुनो फिर जिन सलाइओं से चाहो बुनलिया करना तुमको एक तरह की बुनावट बताती हूं जो बनियानों के काम की है; यह (चित्र ६०) **शकरपारे की बनावट** कहाती है, इस के लिये सात २ के हिसाब से कड़ियां डालकर इस तरह बुनो—

पांती १:–[सीधी १, उलटी ६] पांती के अखीर तक दोहराओ।

पांती २:–[सीधी ५, उलटी २,] पांती के अखीर तक दोहराओ।

पांती ३:—[सीधी ३, उलटी ४,] दोहराओ।

पांती ४:—पांती ३ की तरह बुनो।

पांती ५:—पांती २ की तरह बुनो।

पांती ६:—पहली पांती की तरह बुनो।

पांती ७:—सीधी बुनो।

पांती ८:—[सीधी ६, उलटी १,] दोहराओ

पांती ९:— सीधी २, उलटी ५,] दोहराओ।

पांती १०:–[सीधी ४, उलटी ३,] दोहराओ।

पांती ११–पांती १० की तरह बुनो।

पांती १२:–[पांती ९ की तरह बुनो।

पांती १३:–पांती ८ की तरह बुनो।

पांती १४:–उलटी बुनो।

अब इन चौदह पांतियों को दोहराती चलो।

एक प्रकार की बुनावट जो बच्चों की जाकट, पैताब,

दसताने आदि के बुनने में काम आती है **बूँदकीदार है** (चित्र ६१) इस के लिये विषम कड़ियां डालो और इस तरह बुनोः–

पांती १ः—पहिली कड़ी सरकाओ, अगली दो कड़ियां एक साथ सीधी बुनो, अब पांती के अखीर तक दो दो कड़ियां एक साथ सीधी बुनती जाओ ।

पांती २ः—पहिली कड़ी सरकाओ, बढ़ाओ १ (पहिली रीतिसे यानी सीधी सलाई से उनके धागे को जो इस सरकाई हुई कड़ी और अगली कड़ी के बीच में है उठालो और इस में एक कड़ी सीधी बुनलो) अगली कड़ी सीधी बुनो, [अब बढ़ाओ १ पहिली रीति से, और अगली कड़ी सीधी बुनो, इस को पांती के अखीर तक दोहराती जाओ]

पांती ३ः—पहिली कड़ी सरकाके बाकी कड़िया सीधी बुनो ।

पांती ४ः—उलटी बुनो ।

अब इन चारों पांतियों को दोहरादोहरा कर बुनती जाओ लेकिन पांती १ व पांती २ में यह ध्यान रक्खो कि बुनावट ज्यादा कड़ी न हो बल्कि ढ़ीली। तुम ने यह तो देख ही लिया कि पांती १ में कड़ियां आधी रहगई थीं लेकिन पांती २ में फिर उतनी ही होगई जितनी तुमने डाली थीं ।

बस अब इसको फिर बुनना इस समय एक और अच्छी बुनावट तुमको बताती हूं जिसको **गुलूबन्दी बुनावट** इस वजह से कहते हैं कि इसके गुलूबन्द बहुत अच्छे बनते हैं—लेकिन इस से यह न समझना कि यह और

किसी मतलब की नहीं होती; इसकी मरदानी जाकट और बासकट और जनानी बनियान और बहुत सी और चीजें भी अच्छी बुनी जासकतीं हैं—यह बुनावट दोनों ओर एक सी होती है इसको बहुत ही होशियारी के साथ बुनना; इस के बुनने में अगर कोई गलती होगई तो उस का ठीक करना कठिन होजायगा और कई पांतियां उधेड़े बिना गलती ठीक नहीं होगी। इस के लिये तीन तीन के हिसाब से कड़ियां डालो और जिस तरह मैं बताती जाऊं बहुत होशियारी से बुनो:—

पांती १:—ऊन आगे लाओ और पहली कड़ी उलटी सरकाओ, ऊन को सीधी सलाई के ऊपर होकर नीचे डालदो और दो कड़ियां एक साथ सीधी बुनलो, [ऊन दोनों सलाइयों के बीच में होकर आगे लाओ, एक कड़ी उलटी सरकाओ, ऊन को सीधी सलाई के ऊपर होकर नीचे डालो, और दो कड़ियां एक साथ सीधी बुन लो] इस को दोहराती जाओ।

अब इसी एक पांती को दोहराती रहो +देखो यह कड़ी जो सलाई पर अकेली है यह दो कड़ियां एक साथ बुनकर बनी है; और बनाई हुई कड़ी सरकाई हुई कड़ी पर लिपट रही है (चित्र ६२)।

अभी कई और प्रकार की बुनावटें सिखाने के लिये बाकी हैं; लेकिन वह फूलबेलदार हैं इस लिये वे तुमको अभी नहीं बताती हूं, अब मेरा इरादा है कि कल से तुमको कुछ चीजें बुनना सिखाऊं।

ली०—हां बहिन! अब तो कुछ चीजें बुनना ही बताना बुनावटें

सीखते तो कितने ही दिन होगये, अब मुझको कल टोपा बुनना सिखाना।

क०—नहीं, अभी नहीं, पहले कोई सहल चीज तुमसे बुनवाऊंगी।

ली०—वह क्या ?

क०—वह कल ही बताऊंगी।

आठवां परिच्छेद

गुलूबन्द, पट्टियां, नेकटाई, और शाल बुनना।

ली०—बहिन! आज क्या बताने कहतीं थीं वह बताओ।

क०—मैंने यह सोचा है कि तुमको पहले गुलूबन्द बुनना बताऊं क्योंकि इसका बुनना सब से सहल है क्योंकि इसमें किसी जगह पर बढ़ाना या घटाना नहीं पड़ता। तुम बक्स में से ऊन और नम्बर १० की हाथीदांत की सलाइयां जिन से तुम बुना करती हो, लेआओ।

ली०—बहिन! यह नम्बरों का क्या हिसाब है ?

क०—सलाइयां केई नम्बरोंकी होती हैं, और केई चीजोंकी बनाई जाती हैं, जैसे लकड़ी, हाथीदांत, लोहे आदि की, लकड़ी और हाथीदांत की सलाई मोटा बुनने में काम आती हैं और लोहे की महीन बुनने में, हाथीदांत आदि की सलाई बारह नम्बर तक की होती हैं और लोहे की आठ नम्बर से बीस नम्बर तक की होती हैं, सलाई जितने कम नम्बरकी होगी उतनी मोटी और जितनी ज्यादा नम्बर की होगी उतनी महीन होगी।

ली०—हां! अब बताओ।

क०—पहले तुमसे **फलीदार गुलूबन्द** बुनवाती हूं (चित्र ६१)

जितना चौड़ा रखना चाहो उसी अन्दाज से दो दो के हिसाब से दो कड़ियां अधिक डाल लो।

की०—बहिन ! मुझको अभी कुछ अन्दाज नहीं, जितनी तुम कहो डाल लूं।

क०—अच्छा ! कुल ५२ कड़ियां डाल लो और इस तरह बुनोः—

पांती १ः— सरकाओ १, [सीधी २, उलटी २, बारह दफे], आखिर में सीधी ३ ।

पांती २ः— सरकाओ १, [उलटी २, सीधी २ बारह दफे दोहराओ], अखीर में उलटी ३ ।

अब इन दोनों पांतियों को तीन दफे और दोहराओ।

पांती ९ः—सरकाओ १, बाकी सब कड़ियां सीधी बुनो।

पांती १०ः—सरकाओ १, बाकी सब कड़ियां उलटी बुनो।

पांती ११ः—सरकाओ १, [उलटी २, सीधी २, बारह दफे दोहराओ] अखीर में उलटी ३ ।

पांती १२ः—सरकाओ १, [सीधी २, उलटी २, बारह दफे] अखीर में सीधी ३ ।

अब पांती ११ व १२ को तीन दफे और दोहराओ

पांती १९ः—सरकाओ १, बाकी सब कड़ियां सीधी बुनो।

पांती २०ः—सरकाओ १, बाकी सब कड़ियां उलटी बुनो यह गुलूबन्द का नमूना है, अब जितना लम्बा गुलूबंद बुनना हो पांती १ से पांती २० तक दोहरा दोहराकर बुन सकती हो, गुलूबन्द की लम्बाई करीब दो गज़ के होनी चाहिये, थोड़ा अभी बुनकर मुझको दिखाना।

ली०—ओ बहन ! इतनातो ऊन की एक लच्छी से बुनालिया अब दूसरी लच्छी इस पहिली लच्छी में कैसे जोड़ूं ?

क०—ऊन जोड़ने की दो रीतियां हैं—एक तो दोनों लच्छियों में गांठ लगादेना. लेकिन यह रीति अच्छी नहीं क्योंकि इस तरह बुनावट में जगह २ गांठें होजायेंगीं, दूसरी रीति यह है कि लच्छियों के सिरों को आमने सामने से लाकर इस तरह बराबर रक्खो (चित्र ६४) और फिर इन दोनों ऊनों को मिलाकर कड़ियां बुनना शुरू करो, पांच छः कड़ियां बुनने के बाद एक ही ऊन रहजायगी—इस तरह ऊन जोड़ने से बुनावट भद्दी न मालूम होगी—इसी तरह जब बुनावट में रंग देना होता है तब पहली ऊन को तोड़ कर दूसरे रंगकी ऊन इसी तरह जोड़देते हैं ।

ली०—इस गुलूबन्द को बुनकर मैं तुम्हें फिर किसी दिन दिखा-दूंगी अब कोई और चीज बतादो ।

क०—अच्छा ! लेकिन जब यह गुलूबन्द पूरा बुन लो तब खत्म करने के बाद दोनों छोरों पर पांच २ छः २ इंच लंबे ऊन के डोरे हर दूसरी या तीसरी कड़ी में पो पो के इस तरह गांठ लगादेना कि डोरों के दोनों सिरे बराबर रहैं; जब सब लगा चुको तब कैंची से सब को बराबर काट देना ताकि अच्छे मालूम हों ।

अब मैं तुम को एक और प्रकार की बुनावट का गुलूबन्द बतातीहूं । यह बहुत सहल है लेकिन दोनों ओर बिलकुल एक सा नहीं होगा कुछ थोड़ा सा फ़र्क रहेगा; इस के लिये ५६ कड़ियां डालो और इस तरह बुनोः—

पांती १ः—सरकाओ १, उल्टी १, [सीधी २, उल्टी २

पांती के अखीर तक दोहराओ]

पांती २ः–सरकाओ १, बाकी सब कड़ियां सीधी बुनो।

अब इन दो पांतियों को दोहराती जाओ यहां तक कि गुलूबन्द की जितनी लंबाई रखना चाहो बुन जाये। फिर खत्म करके पहले गुलूबन्द की तरह झल्लर लगादो।

की०–तुम कहती थीं कि **गुलूबन्दी बुनावट का गुलूबन्द** बहुत अच्छा बुना जाता है आज उसका बुनना भी बतादो।

क०–अच्छा! तो तीन तीन के हिसाब से ६३ कड़ियां डाल लो और नंबर १५ की लोहे की सलाइयों से बुनोः–

पांती १ः—(किशमिशी ऊन से बुनो) ऊन आगे लाओ और पहली कड़ी उलटी सरकाओ, ऊन को सीधी सलाई के ऊपर होकर नीचे डालदो, और दो कड़ियां एक साथ सीधी बुन लो [ऊन दोनों सलाइयों के बीच में होकर आगे लाओ, एक कड़ी उलटी सरकाओ, ऊन को सीधी सलाई के ऊपर होकर नीचे डालो और दो कड़ियां एक साथ सीधी बुन लो] इस को दोहराओ।

अब १४ पांतियां इसी ऊन इसी पांती की तरह बुनलो

पांती १६ व १७ः–पहली पांती की तरह मगर काली ऊन से बुनो।

पांती १८, १६ व २०ः–पहली पांती की तरह लेकिन गुलाबी ऊन से बुनो।

पांती २१ व २२ः–पांती १६ व १७ की तरह काली ऊन से बुनो।

अब इन बाईसों पांतियों को इसी तरह रंग लगा २ कर दोहराती जाओ।

अब ऊन के टुकडे काट २ कर झल्लर लगादो।

ली०—इस तरह का गुल्लूबन्द तो मैंने कई दफ़े तुमको और औरों को बुनते हुये देखा है, क्या यह सबही तुम्हारी तरह हर एक चीज बुनजानती होंगीं ?

क०—नहीं, यह कोई जरूरी बात नहीं कि गुल्लूबन्द बुनना जानती हैं तो हर एक चीज़ बुनसक्ती हों, इन में से बहुत सी एसी निकलेंगीं कि जो सिवाय गुल्लूबन्द के और कुछ नहीं जानती होंगीं और सिर्फ़ इसी का बुनना सीखलिया होगा, तुमने बुनना शुरू से सीखा है, अगर तुम इसी तरह सीखती जाओ-गी तो हर चीज बुनलिया करोगी।

ली०—अब किसी और तरह का गुल्लूबन्द बताओ।

क०—नहीं गुल्लूबन्द तो तुमको कई प्रकार के सिखा चुकी अब **पैरोंमें बांधने की पट्टियां** बताऊंगी (चित्र ६५) इन के लिये काली 'ऊरस्टेड' ऊन और नम्बर १५ की सलाइयां निकाल लो।

ली०—मैं 'ऊरस्टड' ऊन नहीं पहचानती।

क०—मेरे बक्स में जो सब से कम मुलायम उन है और जिसकी सबसे बड़ी अट्टी है वह ही 'ऊरस्टट' है; यह बहुत मज़बूत होती है।

चालीस कड़ियां डाल लो और इस तहर बुनोः—

पांती (१):—सरकाओ १, बाकी कड़ियां सीधी बुनो।

अब इसी एक पांती को दोहरा कर करीबन गज़ लंबी पट्टी बुन लो।

अब इस तरह बुनोः—

पांती १:—सरकाओ १, दो कडियां एक साथ सीधी बुनो, फिर बीच की कड़ियां सीधी बुनती जाओ, जब तीन

कड़ियां सलाई पर रह जायें तब सरक बांध करो यानी एक कड़ी सरकाओ और एक सीधी बुनो। और सरकाई हुई कड़ी को बुनी हुई पर होकर उतार दो,आखीर पर सीधी १।

पांती २:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी ३२, सरकाओ १, सीधी १, सरकाई हुई कड़ी उतारो, सीधी १।

पांती ३:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी ३० सरकबांध, सीधी १ ।

पांती ४:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी २८ सरकबांध सीधी १ ।

पांती ५:—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सीधी२६, सरकबांध, सीधी १ ।

पांती ६:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी २४, सरकबांध, सीधी १ ।

पांती ७:—सरकाओ १, एक साथ सीधी२, सीधी २२, सरकबांध, सीधी १–

पांती८:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी २० सरकबांध, सीधी १ ।

पांती ९:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी १८ सरकबांध सीधी १ ।

पांती १०:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी १६, सरकबांध, सीधी १ ।

पांती ११:—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सीधी १४ सरकबांध, सीधी १ ।

पांती १२:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी १२ सरकबांध, सीधी १ ।

पांती १३:—सरकाओ १ एक साथ सीधी २, सीधी १० सरकबांध, सीधी १ ।

पांती १४:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २ सीधी ८ सरकबांध, सीधी १, ।

पांती १५:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २ सीधी ६, सरकबांध, सीधी १ ।

पांती १६:—सरकाओ १ एक साथ सीधी २ सीधी ४, सरकबांध, सीधी १

अब ख़तम करदो और एक फ़ीता इस तरफ जहां बुनना खतम किया है सीं दो। यह एक पैर की पट्टी तैयार होगई इसी भांति दूसरे पैर के लिये एक पट्टी बुन लेना।

तुमने देखा कि हर पांती के शुरू में दो कड़ियां एक साथ बुनी गईं और अखेर में सरकबांध की गई जिस के कारण हर पांती में सलाई पर से दो दो पांतियां कम होती गईं यहां तक कि अखीर में सिर्फ़ सात कड़ियां रहीं और पट्टी की शक्ल ऐसी हो गई; अगर कड़ियां इस भांति घटाई नजातीं तो पट्टी की शक्ल एसी रहती।

की०—देखो बहिन मैंने यह एक अपनी गुड़ियों के लिये बिछौना परसों दोपहर को बुना था लेकिन तुमको इस वजह से कि शायद तुम हंसी करो नहीं दिखाया था; आज मैं यह सोच कर दिखलाने लाई हूं कि अभी तो मैं सीखती ही हूं अगर खराब भी बुना गया हो तो कुछ बात नहीं जो कुछ ख़राबी होगी मालूम होजायगी।

—लीलावती ! मैं आज तुम्हारा बुना हुआ बिछौना देख कर बहुत खुश हूं और खास कर इस बात से कि तुम उसको मेरे पास इस लिये लाई कि जो कुछ खराबी उस में हो मालूम होजाये—सीखने वाले को चाहिये कि जो सिखाने-वाला बताये उस के सिवाय कुछ खुद भी अपने मनसे बुनने की कोशिश करे और जो कुछ बुरा भला बुने उस को दिखलाने में ज़रा भी झिझक न करे—जिस तरह इस बिछौने को २० कड़ियां डाल कर हर एक पांती सीधी बुनी है जब तक कि पूरी लंबाई होगई इसी तरह अगर और लंबा चौड़ा बुनना हो तो ज्यादा कड़ियां डाल कर और ज्यादा पांतियां बुन कर बुन सकती हो लेकिन देखो क्योंकि तुमने हर पांती की पहली कड़ी नहीं सरकाई है इस लिये किनारे एकसार नहीं हैं—इस बात का हमेशा ध्यान रक्खो कि हर बुनावट की हर एक पांती में पहिली कड़ी सरकानी जरूर चाहिये ता कि किनारे एक सार आयें ।

०—बहिन ? अब इसका ध्यान रक्खूंगी ।

०—आओ आज तुमको **नेक टाई** बुनना बताऊं (चित्र ६६) इसके लिये नं० १८ की लोहे की सलाइयां ठीक होंगीं जरा सलाइयां और एक क्रोशा कौटन का गोला निकाल लाओ ।

०—बहिन क्रोशा कौटन का गोला मैं नहीं जानती कैसा होता है।

०—मेरे बक्स में एक कागज का बक्स रक्खा है उस में आठ दस चमकने चमकने रेशम के से पिन्डे हैं वह ही क्रोशा कौटन के गोले हैं; दर असल वह रेशम के नहीं हैं बल्कि सूत के हैं और दो दो ढाई ढाई ही आने को आते हैं ।

नैकटाइ (चित्र ६६ अ) के लिये २२ कड़ियां डालो और इस तरह बुनोः—

पांती १ :—[उल्टी २, सीधी २,] पांती के अख़ीर तक दोहराती जाओ ।

पांती २ :—[उल्टी २, सीधी २,] पांती के अख़ीर तक दोहराती जाओ ।

पांती ३ :—[सीधी २, उलटी २,]

पांती ४ :—[उलटी २, सीधी २,]

पांती ५ :—[सीधी २, उल्टी २,]

पांती ६ :—(सीधी २, उलटी २,)

पांती ७ :—(उल्टी २, सीधी २,)

पांती ८ :—(सीधी २, उल्टी २,)

इस नमूने की आठों पांतियों को बराबर दोहराती जाओ जब तक कि क़रीब अठारह अंगुल के लम्बाई हो जाए ।

शी०—तो क्या इसमें हर पांती के शुरू में एक कड़ी सरकाई नहीं जाएगी ?

क०—मैं तो तुमको पहिले ही बता चुकी हूं कि किनारे एकसार रखने के लिये ज़रूरी है कि हर पांती के शुरू में एक कड़ी उल्टी सरकाई जाए; इस तरह करने से बुनावट के दोनों किनारों पर एक चेनसी बनजाती है, जिस से एक तो यह फ़ाइदह होता है कि अगर दो बुने हुए परतों को जोड़ना हो तो दोनों परतों की चैनों की एक २ कड़ी मिला कर सुई से सीं सकती हो; दूसरे अगर यह मालूम करना चाहो कि कितनी पांतियां बुन गई हैं तो चेन की कड़ियों को गिन कर दुगना करके मालूम कर सकती हो क्योंकि चेन

की एक कड़ी में दो पांतियां होती हैं। अगर हर पांती की पहिली कड़ी सरका कर बुनोगी तो यह नमूना इस तरह बुना जायगाः—

पांती १ :—सरकाओ १, उलटी १, सीधी २, (उलटी २, सीधी २, चार दफ़े) उलटी २।

पांती २ :—पांती १ की तरह।

पांती ३ :—सरकाओ १, सीधी १, उलटी २, (सीधी २ उलटी २, चार दफ़े) सीधी २।

पांती ४ :—पांती १ की तरह।

पांती ५ :—पांती ३ की तरह।

पांती ६ :—पांती ३ की तरह।

पांती ७ :—पांती १ की तरह।

पांती ८ :—पांती ३ की तरह।

इन आठों पांतियों को दोहरा दोहरा कर १८ अंगुल लंबा बुन लो।

ली०—लो बहिन! अब तो १८ अंगुल बुनगई; अब आगे क्या करूं?

क०—अब गले का हिस्सा बुना जायेगा और चूंकि वह जरा पतला होगा इस लिये अब हर दूसरी पांती में एक कड़ी शुरू पर और १ कड़ी अखीर पर घटाने के लिये इस तरह बुनना शुरू करोः—

पांती १ः—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सीधी १, (उलटी २, सीधी २, तीन दफ़े), उलटी २, सीधी १, एकसाथ सीधी २, उलटी १,

पांती २ः—सरकाओ १, सीधी २, (उलटी २, सीधी २, चार दफ़े), उलटी १,

पांती ३:—सरकाओ १, एक साथ उलटी २, (सीधी २, उलटी २, तीन दफे), सीधी २, एक साथ उलटी २, उलटी १ ।

पांती ४:—सरकाओ १, सीधी १, (उलटी २, सीधी दो चार दफे)

पांती ५:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी १, उलटी २, (सीधी २, उलटी २, दो दफे), सीधी १, एक साथ सीधी २, उलटी १ ।

पांती ६:—सरकाओ १, (सीधी २, उलटी २, तीन दफे), सीधी २, उलटी १ ।

पांती ७:—सरकाओ १, एक साथ उलटी २, सीधी २, (उलटी २, सीधी २, दो दफे), एक साथ उलटी २, उलटी १ ।

पांती ८:—सरकाओ १, सीधी १, उलटी २, (सीधी २, उलटी २, २ दफे), सीधी २ ।

अब आठ कड़ियां कम होगईं और सिर्फ १४ कड़ियां बाकी रह गईं--अब गले के हिस्से को पहिले नमूने के मुआफिक बुनो जब तक कि इसकी ऊंचाई गले के नाप के बराबर होजाय ।

अब बढ़ाना इस तरह शुरू करो:—

पांती १:—सरकाओ १, बढ़ाओ १, उलटी १, सीधी २, (उलटी २, सीधी, २, दो दफे) उलटी १ बढ़ाओ १ सीधी १ ।

पांती २:—सरकाओ १, (उलटी २, सीधी २, तीन दफे) उलटी २, सीधी १ ।

पांती ३:—सरकाओ १, बढ़ाओ १, (सीधी २, उलटी २, तीन दफे) सीधी २, बढ़ाओ १, उलटी १,

पांती ४:—सरकाओ १, सीधी १, (उलटी २, सीधी २ चार दफे) ।

पांती ५:—सरकाओ १ बढ़ाओ १, उलटी १, (सीधी २, उलटी २, तीन दफे), सीधी २, उलटी १, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती ६:—सरकाओ १, उलटी २, (सीधी २, उलटी २, चार दफे) सीधी १ ।

पांती ७:—सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २, उलटी २ सीधी २, चार दफे), बढ़ाओ १, उलटी १,

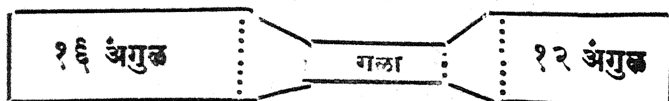
पांती ८:—सरकाओ १, सीधी १, उलटी २, (सीधी २, उलटी २, चार दफे), सीधी २ ।

अब फिर २२ काड़ियां सलाई पर होगईं ।

अब नमूने के मुआफिक बुनती जाओ जब करीब १२ अंगुल के बुनलो खतम करदेना ।

ली०—लो बाहिन ! यह तो मैं खतम कर लाई

(चित्र ६६)



(चित्र ६६)

२२ काड़ियां
२२ काड़ियां
१४ काड़ियां
१४ काड़ियां
२२ काड़ियां
२२ काड़ियां

क०—लीलावती? करीब करीब इसी तरह की एक और नेकटाई तुम को बुनना बताती हूं—यह पांसे की बुनावट में जो मैं तुमको सिखा चुकी हूं बनी जायेगी (देखो सफह १८)—इस के लिये भी २२ कड़ियां डाल लो—पहली नेकटाई के नमूने के लिये २२ कड़ियां डालकर किनारे एकसार रखने के लिये उनही २२ कड़ियोंमेंसे एक कड़ी हर पांतीके शुरू पर सरकाई और एक कड़ी अखीर पर बुनीगई थी—लेकिन इस नेकटाईके लिये २२ कड़ियां इसलिये तुमसे डालनेको कहा है कि २० कड़ियां तो पांसे की बुनावटके नमून में कामदें और बाकी दो कड़ियां किनारे की कड़ियों का काम दें यानी उन में से एक पांती के शुरू में सरकादी जाये और एक पांती के अखीर पर सीधी बुनी जाये। नमूने की कड़ियों के उपरान्त मामूली बुनावटों में किनारे की कड़ियां डालने के बजाय नमूने की कड़ियों में ही से दो कड़ियां किनारे की कड़ियां मानली जाती हैं मगर फूल बेलदार बुनावटों में किनारे की कड़ियां नमूने की कड़ियों के उपरान्त डाली जाती हैं और वह कभी २ दोसे ज्यादा भी डाली जाती हैं।

अब इस तरह बुनना शुरू करो:—

पांती १ :—सरकाओ १, [सीधी २, उलटी २, पांच दफे], सीधी १।

पांती २ :—पांती १ की तरह।

पांती ३ :—सरकाओ १, [उलटी २, सीधी २, पांच दफे], सीधी १।

पांती ४ :—पांती ३ की तरह।

इन चार पांतियों को दोहरा दोहरा कर करीब १६ अंगुल के बुन लो।

अब घटाना इस तरह शुरू करोः—

पांती १ः—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, [उलटी २, सीधी २, चार दफे], एक साथ उलटी २, सीधी १।

पांती २ः—सरकाओ १, सीधी १, [उलटी २, सीधी २, चार दफे], उलटी १, सीधी १।

पांती ३ ः—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सीधी १, [उलटी २, सीधी २, तीन दफे], सीधी २, उलटी १, एक साथ उलटी २, सीधी १।

पांती ४ ः—सरकाओ १, [सीधी २, उलटी २, चार दफे], सीधी १।

पांती ५ ः—सरकाओ १, एकसाथ उलटी २, (सीधी २, उलटी २, तीन दफे), एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती ६ ः—सरकाओ १, उलटी १, (सीधी २, उलटी २, तीन दफे), सीधी २।

पांती ७ ः—सरकाओ १, एकसाथ उलटी २, उलटी १, सीधी २, उलटी २, सीधी २, उलटी २, सीधी १, एकसाथ सीधी २, सीधी १।

पांती ८ ः—सरकाओ १, (उलटी २, सीधी २, तीन दफे), सीधी १।

अब यह चौदह कड़ियां रहगईं इन पर गले का हिस्सा सीधी बुनावट में बुनो यानी हर एक पांती की कड़ियां सीधी बुनो—गले का हिस्सा गले के नाप के बराबर बुनां जायगा।

अब इस तरह बढ़ाना शुरू करो:—

पांती १:—सरकाओ १, उलटी १, बढ़ाओ १ (दूसरी रीतसे देखो सफ़ह २९), सीधी १, [उलटी २, सीधी२ दो दफ़े], उलटी १, बढ़ाओ १, सीधी २।

पांती२:—सरकाओ १, उलटी १, [सीधी २, उलटी२ तीन दफ़े], सीधी २।

पांती ३:—सरकाओ १, सीधी १, बढ़ाओ १, [उलटी २, सीधी २, तीन दफ़े], बढ़ाओ १, उलटी १, सीधी १।

पांती ४:—सरकाओ १, [सीधी २, उलटी २, चार दफ़े], सीधी १।

पांती ५:—सरकाओ १, सीधी १, बढाओ १, उलटी १ [सीधी २, उलटी २, तीन दफ़े], सीधी १, बढ़ाओ १, उलटी १, सीधी १।

पांती ६:—सरकाओ १, सीधी १, [उलटी २, सीधी २, चार दफ़े]. उलटी १ सीधी १।

पांती ७:—सरकाओ १, उलटी १, बढ़ाओ १, (सीधी२ उलटी २, चार दफ़े), बढ़ाओ १, सीधी २।

पांती ८:—सरकाओ १, (उलटी २, सीधी २, पांच दफ़े), सीधी १।

अब फिर बाईस कड़ियां हो गईं। अब पांसे की बुनावट के नमूने की चारों पांतियों को फिर दोहराओ—जब करीब १२ या १३ अंगुल बुनको खतम कर देना।

सी०—बहिन! वह नीली नेकटाई जो तुमने छोटे चाचाजी को दी है मैंने देखी थी वह तो दोहरी बुनावट में बुनी हुई

मालूम होती है ? मैं ३६ काड़ियां डाल कर १६ अंगुल तो दोहरी बुनावट में बुन लाई हूं लेकिन गले के लिये इस कारण घटाना शुरू नहीं किया कि ग़लत न होजाए—घटाना तुम्हारे सामने चाहती हूं।

५०—हां वह **दुहरी बुनावट की नेकटाई** है—तुमने ३६ काड़ियां डाल कर १६ अंगुल तो बुन ही लिया है अब गले के लिये इस तरह घटाना शुरू करोः—

पांती १ :—एक साथ सीधी २, (सरकाओ १, सीधी १, सोलह दफ़े), एकसाथ सीधी २ ।

पांती २ :—सीधा १, (सरकाओ १, सीधा १, सोलह दफ़े), सीधा १ ।

पांती ३ :—एक साथ सीधी २, (सीधी १, सरकाओ १ पन्द्रह दफ़े), एकसाथ सीधी २ ।

पांती ४ :—सीधा १, (सीधा १, सरकाओ १, पन्द्रह दफ़े), सीधी १ ।

पांती ५:—एकसाथ सीधी २, (सरकाओ १, सीधी १, चौदह दफ़े), एकसाथ सीधी २ ।

पांती ६ :—सीधी १, (सरकाओ १, सीधी १, चौदह दफ़े), सीधी १ ।

पांती ७ :—एक साथ सीधा २, (सीधी १, सरकाओ १, तेरह दफ़े), एकसाथ सीधी २ ।

पांती ८ :—सीधा १, (सीधा १, सरकाओ १, तेरह दफ़े), सीधा १ ।

पांती ९ :—एक साथ सीधी २, (सरकाओ १, सीधी १, बारह दफ़े), एक साथ सीधी २ ।

पांती १० :—सीधी १, (सरकाओ १, सीधी १, बारह दफ़े), सीधी १ ।

पांती ११:—एक साथ सीधी२, [सीधी१, सरकाओ १, ग्यारह दफ़े] एक साथ सीधी २ ।

पांती १२:— सीधी १, [सीधी १, सरकाओ १, ग्यारह दफ़े], सीधी १ ।

अब १२ कड़ियां कम होकर २४ कड़ियां रहगईं । अब दोहरी बुनावट ही में गले का हिस्सा गले के नाप के बराबर बुनलो ।

अब बढ़ाना इस तरह शुरू करो:—

पांती१:—बढ़ाओ १, सीधी १, [सीधी १ सरकाओ १ ग्यारह दफ़े] बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती२:—सीधी २ [सीधी १, सरकाओ १, ग्यारह दफ़े], सीधी २ ।

पांती ३:—बढ़ाओ १, सीधी १, [सरकाओ १, सीधी१ बारह दफ़े] बढ़ाओ १, सीधी १, ।

पांती४:—सीधी २, [सरकाओ १, सीधी १, बारह दफ़े] सीधी २ ।

पांती५:—बढ़ाओ १, सीधी १, [सीधी १, सरकाओ१, तेरह दफ़े) बढ़ाओ १, सीधी१ ।

पांती६:—सीधी २, (सीधी १ सरकाओ १, तेरह दफ़े) सीधी २ ।

पांती७:—बढ़ाओ १, सीधी१, (सरकाओ १, सीधी १, चौदह दफ़े) बढ़ाओ १ सीधी १ ।

पांती८:-सीधी २, (सरकाओ १, सीधी१ चौदह दफ़े) सीधी २।

पांती९:—बढ़ाओ १, सीधी १, (सीधी १, सरकाओ १, पन्द्रह दफ़े) बढ़ाओ १ सीधी १।

पांती१०:-सीधी २, (सीधी १, सरकाओ १, पन्द्रह दफ़े) सीधी २।

पांती११:-बढ़ाओ १, सीधी १, (सरकाओ १, सीधी १, सोलह दफ़े) बढ़ाओ १, सीधी १।

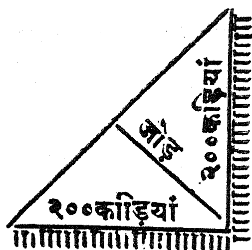
पांती१२:-सीधी २, (सरकाओ १, सीधी १, सोलह दफ़े), सीधी २।

अब बढ़कर फिर ३६ कड़ियां हो गईं। अब फिर पहले की तरह दोहरी बुनावट में बारह अंगुल बुन कर खतम करदो।

बी०—यह नेकटाई तो मैंने कल खतम करदी अब कुछ और बताओ।

क०—आज तुम को शाल यानी गले में बांधने का रूमाल बुनना बताती हूं। यह कई प्रकार के बुने जाते हैं। पहले तुम को **तिकोना शाल** बताती हूं। तुम सीधी बुनवट और घटाना जानती ही हो और चूंकि इस में इन ही दो बातों का काम पड़ेगा इस लिये तुम बहुत आसानीसे बुनलोगी। यह दो हिस्सों में बुना जायेगा और इसी शक्ल (चित्र६७) का होगा।

पहले एक हिस्से के लिये २०० कड़ियां डाल को और इस तरह बुनोः—



(चित्र ६७)

पांती१ः—सरकाओ १, सीधी १६७, एक साथ सीधी२,

पांती२ः—सरकाओ १, सीधी १६६, एक साथ सीधी२,

पांती३ः—सरकाओ १ सीधी १६५, एक साथ सीधी२,

पांती४ः—सरकाओ १ सीधी १६४, एक साथ सीधी २,

इसी तरह हर पांतीके अखीर पर दो कड़ियां एक बुन२ कर घटाती जाओ जब सलाई पर दो कड़ियां रहजायें तब दोनों को एक साथ बुन लेना और जो एक कड़ी इन दोनों कड़ियों की रहे उस में से ऊन को तोड़ कर खींच लेना। यह एक हिस्सा बनजायेगा।

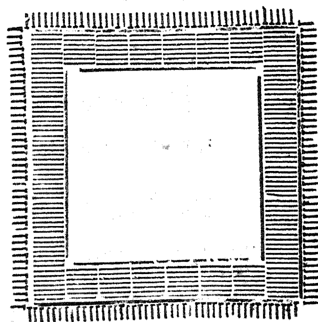
इसी तरह दो सौ कड़ियां डालकर दूसरा हिस्सा भी बुन लेना। फिर दोनों को सींकर ऊन के टुकड़े काट काट कर झालर लगादेना।

एक और प्रकार का **जालीदार शाल** जो चौकोर बुना जायेगा तुम को बताती हूं। इस की बुनावट चारों तरफ़ सीधी और बीच में खुली होगी; इसके लिये २०० कड़ियां डाल को और इस तरह बुनोः—

पहली आठ पांतियां सीधी बुनो।

पांती ९:—सरकाओ १, सीधी १०, (बनाओ १, ऊन को सलाई पर ऊपरसे नीचे फेरकर (देखो सफ़ह २८, चित्र ५१) एक साथ सीधी २, दोहराती जाओ) और अख़ीर में सीधी ११।

अब इस पांती ९ को दोहराती रहो जब बीच की खुली बुनावट बिलकुल चौकोर हो जाये यानी उस के चारों किनारे बराबर हो जायें तब आठ पांतियां सीधी बुनकर ख़तम कर देना।



शी०—लो बहिन ! मैंने ऐसा (चित्र ६८) बुना है।

क०—यह जो तुमने ऊन के टुकड़े काट काट कर इस के चारों तरफ़ लगा दिये हैं इन से शाल और भी अच्छा लगने लगा।

(चित्र ६८)



९ परिच्छेद

बनियान बुनना

की०—बहिन ! तुमने इतनी चीज़ें मुझ को सिखाईं लेकिन टोपा बुनना अभी तक नहीं बताया ।

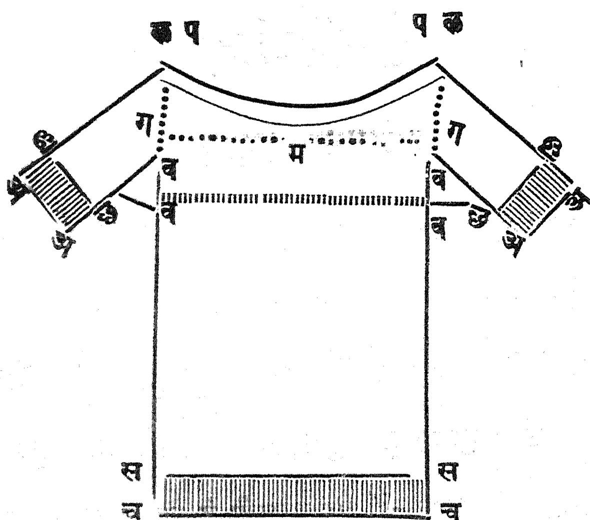
क०—सिखानेको तो मैं आज सिखादूं और तुम बुन भी लोगी लेकिन चूंकि टोपा बुनना ज़रा मुश्किल है इसलिये अभी तुम को बताना नहीं चाहती—मैं यह चाहती हूं कि सहल २ चीज़ें तुम से बुनवा कर आहिस्ता २ तुम को मुश्किल चीज़ों पर लाऊं ताकि तुम जो कुछ बुनो अच्छी तरह समझती जाओ और उस क़िस्म की चीज़ें खुद भी बुन सको ।

की०—तो फिर आज क्या बताती हो ?

क०—आज मेरा इरादा तुम को **बनियान** बताने का है ।

की०—तो यह ही बताओ मैं रामरत्न के लिये एक बुनकर रख लूंगी—अब तो जाड़े ख़तम हो चुके अगले जाड़ों में काम देगी ।

क०—अच्छा ! पहिले मैं तुम को **सादा बनियान** (चित्र६९) बुनना बताती हूं—पहिले रामरत्न का नाप इस तरह लेलोः—



(चित्र ६९)

लंबाई (ल च) कंधे से कमर तक;

सीना (कक) यानी छाती और पीठ दोनों;

ऊंचाई बग़ल (क च) कमर से बगल तक ।

अब जिन सलाइयों और ऊन से तुम बनियान बुनना चाहती हो उन्हीं से एक छोटा सा टुकड़ा पहिले बुनो और यह देखो कि सीना (क क) उस से अन्दाजं कितने गुना है जब यह मालूम करलो तो इस अददको उतनी काड़ियों से जो टुकड़े के लिये डाली थीं गुना करलो—फिर जो कुछ गुना करके आये उसका आधा करलो—इस तरह तुम को यह मालूम होजायेगा कि कितनी काड़ियां हर उम्र के बच्चे

या आदमी की बनियान या और चीज़ के लिये डालनी चाहियें।

ली०—खुद उसका नाप लेने की क्या ज़रूरत है—यह उसकी बनियान ही मौजूद है इसी का नाप लेऊंगी—मैं पहिले दस कड़ियां डालकर एक टुकड़ा बुनेलेती हूं।

क०—इस से और भी आसानी होगी।

ली०—लो बहिन! मैंने यह टुकड़ा भी बुन लिया।

क०—देखो सीना (क क) इस टुकड़े का चौदह गुना है इस लिये कुल १४×१०=१४० कड़ियों की ज़रूरत होगी—लेकिन चूंकि बनियान का आगा और पीछा अलग २ बुन कर सींया जायेगा इस लिये आगे के लिये १४० की आधी ७० कड़ियां डाल लो और (च च) से शुरू करके (स स) तक १६ पांतियां दो कड़ी सीधी और दो कड़ी उलटी की फलीदार बुनावट में बुनो और हर पांती के शुरू की एक कड़ी सरकाने और अख़ीर की एक कड़ी सीधी बुनने का ध्यान रक्खो ताकि किनारे बंधते जायें और जब दोनों परत तैयार होजायें तो उनके सींने में आसानी रहे (यानी ६८ कड़ियों पर फलीदार बुनावट बुनी जायगी और दो कड़ियां किनारे की कड़ियां रहेंगीं।

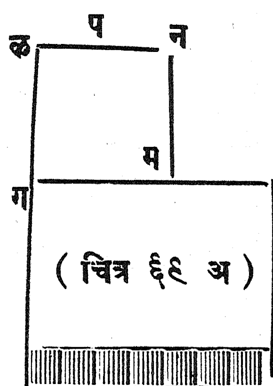
अब १७ वीं पांती से सादाबुनावट एक पांती सीधी और एक पांती उलटी की गले के पास तक यानी (ग ग) तक बुनो।

अब गला इस तरह लेकोः—

पांती १ः—सरकाओ १, सीधी २८, लौटो और उलटी बुनो।

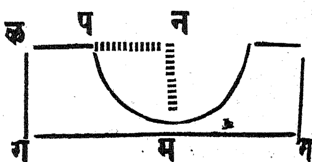
ळी०—बहिन ! मैं यह नहीं समझी कि छोटने से क्या मतलब है?

क०—**छोटने** से यह मतलब है कि पांती को जो तुम बुनरही हो आगे न बुनो और सीधी सलाई बांयें हाथ में और बांई सीधे हाथ में लेकर दूसरी पांती बुन लो—इस तरह जिस किनारे से तुमने पांती बुनना शुरू किया था थोड़ी दूर तक बुनकर फिर बुनती हुई उसी किनारे पर लौट कर आजाओगी। अगर तुम बराबर इसी तरह पांती १ को दोहराती जाओगी तो तुम्हारी बुनावट सिर्फ़ एक किनारे की तरफ़ ऊंची होती जायेगी दूसरे किनारे की बुनावट अपनी जगह पर रहेगी यानी बुनावट की शक्ल इस (६९ अ) तरह की होजायगी। लेकिन चूंकि एक तरफ़ आधे गले की शक्ल (ळ ग म प) ऐसी होनी चाहिये



(चित्र ६९ अ)

(चित्र ६९ ब) इस लिये इन २९ काड़ियों पर बराबर बुनते रहने के बजाइ (न म) की तरफ़ दो दो काड़िया हर दूसरी पांती में कम लेती जाओ (चित्र ६९ ब) ताकि एक तरफ़ का गला (ळ ग म प) की शक्ल का हो जाये—यानी इस तरह बुनोः—



(चित्र ६९ ब)

पांती १ :—सरकाओ १, सीधी २८, लौटो और उल्टी बुनो।

पांती ३:—सरकाओ १, सीधी २६, लौटो और उलटी बुनो।

पांती ५ :—सरकाओ १, सीधी २४, लौटो और उलटी बुनो।

पांती ७ :—सरकाओ १, सीधी २२, लौटो और उलटी बुनो।

अब इसी तरह दो दो कड़ियां कम लेती जाओ जब १३ कड़ियां रहजायें तब चार पांतियां सादा बुनावट की इन १३ कड़ियों पर बुनो।

अब इन में से १२ कड़ियां बांध दो और एक कड़ी को जो (प) की जगह बचेगी सलाई पर रहने दो और इस सलाई को सीधे हाथ में लेकर (प म ग) की कुल कड़ियां जो बांई सलाई पर हैं सीधी बुनलो।

अब दूसरी तरह का गला (ग ल प म) भी पहिले की तरह लेकोः—

पांती१:—सरकाओ १, उलटी २८, लौटो और सीधीबुनो

पांती३:—सरकाओ १, उलटी २६, लौटो और सीधी बुनो।

पांती५:—सरकाओ १, उलटी २४, लौटो और सीधी बुनो।

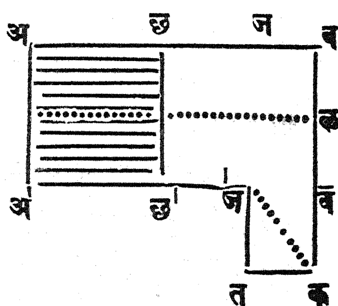
इसी तरह इसको भी पहिले की तरह बुनती जाओ जब १३ कड़ियां रहें तब चार पांतियां सादा बुनावट की इन १३ कड़ियों पर बुनो।

अब इन में से बारह कड़ियां बांध दो और १३ वीं कड़ी जो इस वक्त (प) पर है सीधी सलाई पर रख कर गले (प म प) पर दो पांतियां सीधी बुनो। अब एक पांती

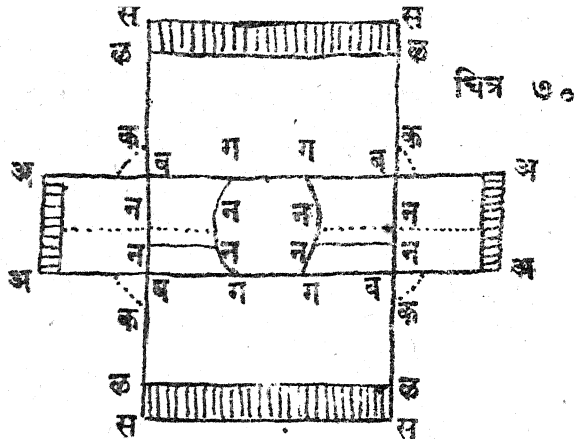
गले में डोरी के लिये सूराख करने के वास्ते इस तरह बुनो [सीधी २, बनाओ १, एक साथ सीधी २, पांती के अखीर तक दोहराओ]।

अब तीन पांतियां सीधी बुन कर खतम करदो यह सामना बुनगया अब इसी तरह पीछा भी बुनलो।

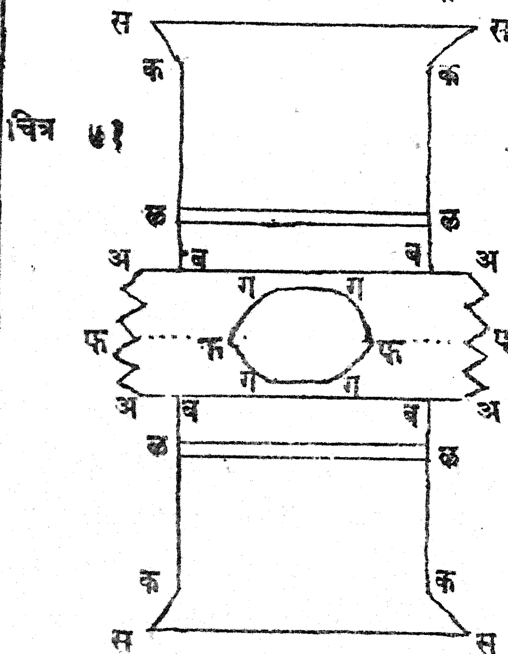
अब आसतीन (चित्र ६९ ज) के लिये ५८ कड़ियां डाल लो और (अं अ) से (छं छ) तक १२ पांतियां दो कड़ी सीधी और दो कड़ी उलटी की फलीदार बुनावट में पहली कड़ी हर पांती की सरकाती और अखीर की सीधी बुनती हुई बुनो। अब दस पांतियां सादा बुनावटमें (जं ज) तक बुनकर दसवीं पांती के अखीर पर १२ कड़ियां चौबगले (जं त क वं) के लिये डाल लो अब सलाई पर ७० कड़ियां हैं इन पर १२ पांतियां सादा बुनावट की बुनकर ख़तम करदो। अब (अ ज) को (अं जं) पर रख कर सीं दो। अब (जं त)को मोड़कर (ज व)सेजो अब (जं वं)के ऊपर आगया है सींदो (बूंदें मोड़नेकी जगह बताती हैं)।



(चित्र ६९ ज)



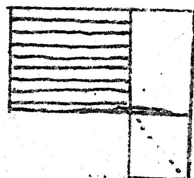
चित्र ७०



चित्र ७१

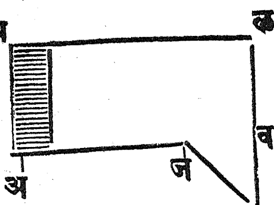
चित्र ७० ब

चित्र ७० अ



यह एक आस्तीन तैयार हो गई (चित्र ६६ स) इसी तरह दूसरी आस्तीन भी बुनलो ।

अब आस्तीनों को (ळ व क) की तरफ़ से बनियान की (ळ व क) जगह पर सींदो । अब बनियान के दोनों परतों



(चित्र ६९ स)

को दोनों कंधो (ळ प) पर और दोनों बगलों के नीचे (क) से (च) तक सींदो । यह बनियान बुन गई ।

की०—बहिन ! दोपहर को तो तुम्हें फुरसत नहीं हुई इस वक्त अगर कुछ बताओ तो बुनूं ?

क०—हां ! आओ मैं तुमको एक दूसरी तर्ज की बनियान बताऊं (चित्र ७०) पहिली बनियान का आगा और पीछा दोनों अलग २ बुने गये थे लेकिन इसके दोनों पर्त कन्धों पर जुड़े रहेंगे । इस के लिये ५६ कड़ियां (या अगर बड़ी बुनना हो ज्यादा) डाल लो और (स स) से (ळ ळ) तक सीधी २, उलटी २, की फलीदार बुनावट में १६ पांतियां बुनो ।

अब (ल ल) से बगल (ब ब) तक सीधी बुनावट बुनो ।

अब एक कन्धे (बं ब ग गं) के लिये २३ कड़ियां सलाई पर रहने दो, बाकी ३३ कड़ियों को एक डोरे पर उतार लो ।

अब इन २३ कड़ियोंको जो (ब ग) पर हैं इस तरह बुनो:—

पांती १ :—सरकाओ १, सीधी १६, एकसाथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती २ :—सीधी बुनो (पहली कड़ी सरकाके)

पांती ३ :—सरकाओ १, सीधी १८, एक साथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती ४ :—पांती २ की तरह सीधी ।

पांती ५ :—सरकाओ १, सीधी १७, एक साथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती ६ :—सीधी ।

पांती ७ :—सरकाओ १, सीधी १६, एकसाथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती ८ :—सीधी ।

पांती ९ :—सरकाओ १, सीधी १५, एक साथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती १० :—सीधी ।

पांती ११ :—सरकाओ १, सीधी १४, एकसाथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती १२ :—सीधी ।

पांती १३ :—सरकाओ १, सीधी १३, एक साथसीधी २, सीधी १ ।

पांती १४ :—सीधी ।

पांती १५—:सरकाओ १,सीधी १२, एक साथ सीधी २, सीधी १,

पांती १६ :—सीधी ।

देखो ! इस तरह से हर दूसरी पांती में एक कड़ी गले की तरफ़ घटाने से कन्धे की शक्ल (ब न न ग) सी हो गई और बुनावट (न न) तक पहुंच गई और १५ कड़ियां रह गईं ।

अब (न न) से (नं नं) तक २० पांतियां सीधी बुनो।

अब (नं नं) से (बं गं) तक एक कड़ी हर दूसरी पांती में गले की तरफ़ बढ़ाती हुई इस तरह बुनोः—

पांती ३७ः—सरकाओ १, सीधी १३, बढ़ाओ १, सीधी १

पांती ३८ः—सीधी (पहिली कड़ी सरकाके)

पांती ३९ः—सरकाओ १, सीधी १४, बढ़ाओ १, सीधी १,

पांती ४०ः—सीधी ।

जब बढ़ाते बढ़ाते सलाई पर २३ कड़ियां हो जाँय तब उन २३ कड़ियों को एक डोरे पर उतार दो और ऊन तोड़दो ।

अब यह तेतीस कड़ियां जो पहिले (ग ग ब) की जगह डोरे पर उतारदीं थीं सलाई पर चढ़ालो और ऊनको पहली कड़ी की जड़ में गांठ देकर इन तेतीस कड़ियों में से पहिली १० कड़ियां (ग ग) पर बांधकर अगली २३ कड़ियों पर दूसरा कन्धा भी पहिले कन्धे की तरह बुनलो— मगर यह ध्यान रखना कि कड़ियां जो गले के लिये घटाई या बढ़ाई जायेंगीं पांती के शुरू में घटाई या बढ़ाई जायेंगी अख़ीर में नहीं।

अब कंधे की ५२ वीं पांती तुमने बुनली और २३ कड़ियां सलाई पर हैं अब इस तरह बुनना शुरू करोः—

पांती ५३ः—सरकाओ १, सीधी २२, डाल दो १० (ग ग) के लिये, और इन डोरे पर की २३ कड़ियों को सलाई पर उतार कर सीधी बुन लो; (अब सलाई पर ५६ कड़ियां हो गईं)।

अब इन ५६ कड़ियों पर (बं बं) से (बं बं) तक सीधी बुनावट बुनो ।

अब (ल॑ ल॑) से (स॑ स॑) तक दो सीधी और दो उलटी की फलीदार बुनावट की १६ पांतियां बुनकर खतम करदो।

आस्तीन (चित्र ७० अ) के लिये ५४ कड़ियां डालली और १२ पांतियां सीधी बुनकर १३ वीं पांती में १२ कड़ियां बांधदो और बाकी ४२ कड़ियों को सीधा बुनलो। अब दस पांतियां सीधी और बुनलो फिर १२ पांतियां सीधी २, उलटी २, की फलीदार बुनावट की बुनकर खतम करदो। इसी तरह दूसरी आस्तीन भी बुनलो। और दोनों आस्तीनों को अलग २ नुक़तों पर से मोड़कर सीं लो।

अब बनियान को नुक़तों की लकीर पर से इस तरह मोड़ो कि (स॑ स॑) (स स) से आकर मिले और बनियान को (स) से (क) तक दोनों तरफ़ सींदो। अब आस्तीनों को इन दोनों सूराखों पर जो (क) के ऊपर कन्धों तक है सींदो।

अब गले पर लगानेके लिये१२ कड़ियां डालकर दो पांती सीधी और दो पांती उलटी की इतनी लंबी पट्टी बुनलो कि गले के गिरद आजाये—इस पट्टी को नुक़तों की लकीर पर से दोहरी कर के (चित्र ७० ब) गले पर सींदो।

की०—बहिन ! दो दिन से तो तुम को फुरसत नहीं थी आज कुछ बताओ तो ऊन और सलाइयां ले आऊं ?

क०—ले आओ।

की०—बहिन ! ऊन तो बक्स में थोड़ी ही थी वह ही ले आई हूं।

क०—ख़ैर कुछ बात नहीं जो बनियान तुमने उस दिन बुनी थी उधेड़ लो। आज फिर वैसी ही मगर और बुनावट की

वे आस्तीन की बनियान तुमसे बुनवाती हूं। इस के (चित्र ७१) लिये ५८ कड़ियां डाल लो और (स स) से (क क) तक बत्तीस पांतियां दो पांती उलटी और दो पांती सीधी की बुनो लेकिन पांती :-११, १८, २३, २८ व ३१ में दो कड़ियां शुरू में और दो कड़ियां अख़ीर में एकसाथ बुनलेना इस तरह १० कड़ियां (क क) तक कम हो जायेंगी और ४८ कड़ियां बाकी रहगईं।

अब इसतरह बुनो:—

पांती ३३:— [उलटी २, सीधी १, दोहराओ]।

पांती ३४:— उलटी।

पांती ३५:— सीधी।

पांती ३६:— उलटी।

अब पांती: ३३, ३४, ३५, ३६ को छः दफ़ै और दोहराओ।

पांती ६१, ६२, ६३:— सीधी बुनो।

पांती ६४:— [उलटी १, सीधी १, दोहराओ]।

पांती ६५:— [सीधी १, उलटी १, दोहराओ]।

पांती ६४ और ६५ को (ब ब) बगल तक चार दफ़ै और दोहराकर अख़ीरी पांती यानी पांती ७३ के अख़ीर में दस कड़ियां मु (अ ब) के लिये डाल लो। अब सलाई पर ५८ कड़ियां होगईं।

पांती ७४:— सीधी ५८, अख़ीर पर १० कड़ियां दूसरे मु के लिये डाल लो।

अब सलाई पर ६८ कड़ियां हैं। अब सीधी बुनावट बुनती हुई मु पर कंगूरे इस तरह छेको:—

पांती ७५:— सीधी बुनो ।

पांती ७६:—सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी ६६, बढ़ाओ १, सीधी १ +

पांती ७७:— सीधी बुनो ।

पांती ७८:— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी ६८, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती ७९:— सीधी बुनो ।

पांती ८०:— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी ७०, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती ८१:— सीधी बुनो । (अब सलाई पर ७४ कड़ियां होगईं) ।

अब कन्धे के लिये ३२ कड़ियां सलाई पर रहने दो बाकी ४२ एक दूसरी सलाई या डोरे पर उतार दो और इस तरह बुनोः—

पांती (१):— सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी २६, एक साथ सीधी २ सीधी १ ।

पांती (२):— सीधी बुनो ।

पांती (३):— सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी २४, एक साथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती (४):— सीधी बुनो ।

पांती (५):— सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी २२, एक साथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती (६):— सीधी बुनो ।

पांती (७):— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २२, एक साथ सीधी २, सीधी १ ।

पांती (८):— सीधी बुनो।

पांती (९):— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २२, एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती (१०):— सीधी बुनो।

पांती (११):— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २२, एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती (१२):— सीधी बुनो।

पांती (१३):— सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी २०, एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती (१४):— सीधी बुनो।

पांती (१५):— सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी १८, एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती (१६):— सीधी बुनो।

पांती (१७):— सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी १६, एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती (१८):— सीधी बुनो।

अब सलाई पर २० कड़ियां रहगईं इनपर इस तरह बुनो:-

पांती (१९):— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी १९।

पांती (२०):— सीधी बुनो।

पांती (२१):— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २०।

पांती (२२):— सीधी बुनो।

पांती (२३):— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २१।

पांती (२४):— सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी २०।

पांती (२५):— सीधी बुनो।

पांती (२६):- सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी १९।

पांती (२७):- सीधी बुनो ।

पांती (२८):- सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी १८। (अब फिर बीस कड़ियां रहगई)।

पांती (२९):- सीधी बुनो ।

अब पांती १९ से २९ तक एक दफ़े और दोहराओ ।

पांती (४१):— सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी १८ बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (४२):—सीधी बुनो ।

पांती (४३):—सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २०, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (४४):—सीधी बुनो ।

पांती (४५):—सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २२, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (४६):—सीधी बुनो ।

पांती (४७):—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सीधी २२, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (४८):—सीधी बुनो ।

पांती (४९):- सरकाओ १, एकसाथ सीधी २ सीधी २२, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (५०):—सीधी बुनो ।

पांती (५१):—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सीधी २२, बढ़ाओ १, सीधी १, ।

पांती (५२):—सीधी बुनो ।

पांती (५३) :—सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २४, बढ़ाओ १, सीधी १,।

पांती (५४) :—सीधी बुनो।

पांती (५५) :—सरकाओ १, बढ़ाओ १, सीधी २६, बढ़ाओ १,सीधी १।

पांती (५६):—सीधी बुनो।

पांती (५७):—सरकाओ १, बढ़ाओ१, सीधी २८,बढ़ाओ १, सीधी १।

अब इन बत्तीस कड़ियों को किसी और सलाई या डोरे पर उतार कर ऊन तोड़दो और आगे न बुनो।

अब यह ४२ कड़ियां जो पहिले डोरे पर उतारदीं थीं एक सलाई पर चढ़ालो और ऊन को गले की तरफ की पहली कड़ी की जड़ में बांधकर इस तरह बुनो:—

पांती (१):—बांधो १० गला छेकने के लिये, सीधी १, एक साथ सीधी २, सीधी २६, एकसाथ सीधी २, सीधी १,

अब इस कन्धे को भी पहिले कन्धे की तरह मगर पांतियां पलटकर पांती (२) से पांती (५७) तक दोहराकर बुनलो (यह ध्यान रहे कि हर पांती की पहिली कड़ी सरकाई और अखीरी कड़ी सीधी बुनी जायेगी।

अब तुम ने पांती (५७) तक बुन लिया अब इस तरह बुनो:—

पांती (५८):—सरकाओ १, सीधी ३१, डाल लो १० (गले के लिये), अब पहिले कन्धे की ३२, कड़ियों को भी जो डोरे पर हैं सीधी बुनलो।

अब कुल ७४ कड़ियां सलाई पर आगईं और गला बन्द होगया अब इस तरह बुनोः—

पांती (५६):—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी ६८, एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती (६०):—सीधी बुनो।

पांती (६१):—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी ६६, एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती (६२):—सीधी बुनो।

पांती (६३):—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सीधी ६४, एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती (६४):—सीधी बुनो।

पांती (६५):—बांधो १०, (आस्तीन की), बाकी सीधी ५८।

पांती (६६):—बांधो १०, (आस्तीन की) बाकी ४८ कड़ियां को पांती ६४ की तरह यानी उलटी १, सीधी १, बुन बुनकर बुनलो।

पांती (६७):—पांती ६५, की तरह यानी सीधी १, उलटी १, दोहराकर बुनो।

अब पांती ६४ व ६५ को चार दफ़, दोहराओ ता कि, दूसरा पर्त 'ल ल' तक पहुंच जाये।

अब इस पर्त को भी सामने के पर्त की तरह बुनको यानी पहिले तीन पांतियां सीधी फिर "लं लं" से "क क" तक पांती ३६, ३५, ३४, ३३, को सात दफ़े दोहराओ फिर "कं कं" से "सं स" तक बत्तीस पांतियां दो पांती सीधी और दो पांती उलटी की मगर बजाय कड़ियां घटाने

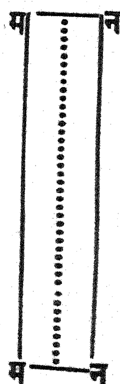
के काड़ियां बढ़ाकर बुनो यानी इन बत्तीस पांतियों की दूसरी, पांचवीं, दसवीं, पन्द्रहवीं और बाईसवीं पांती के शुरू और अखीर में एक एक कड़ी बढ़ाओ (इस तरह सफाई पर ५८ काड़ियां होजायेंगीं और बुनावट "सं सं" तक पहुंच जायगी) ।

अब बानियान को 'फ फ' पर जहां बिन्दियां लगी हुई हैं मोड़ दो—इस तरह करने से "स" "सं" पर और "अ" "अं" पर पड़ेगा—अब 'स ब अ' को 'सं बं अं' से मिला कर बनियान की दोनों बग़लें सींदो ।

गले के लिये १२ काड़ियां डाल कर दो पांती उलटी और दो पांती सीधी की इतनी लंबी पट्टी बुनो कि गले के चारों तरफ़ आजाये;

अब इस को बिन्दियों की लकीर पर से दोहराकर गले पर इस तरह सींदो कि "न न" गले की अन्दर की तरफ़ रहे और 'म म' बाहर की तरफ़ (चित्र ७१ अ) । यह बनियान तैयार होगई ।

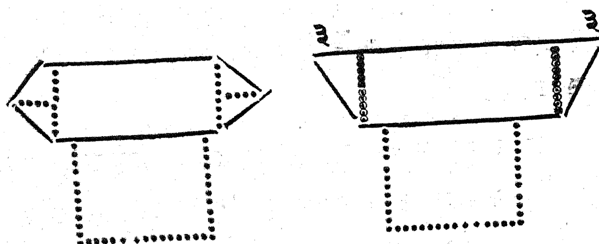
१२ काड़ियां



(चित्र-७१ अ)

तुमने इस बानियान में देखा कि बुनावट के दोनों किनारों पर हर दूसरी पांती के शुरू और अखीर पर पहले एक एक कड़ी बढ़ाकर तीन तीन काड़ियां बुनावट के दोनों किनारों पर ज्यादा करदी थी जिसकी वजह से बुनावट

की शक्ल ऐसी (चित्र ७१ ब) होगई फिर इसी तरह हर दूसरी पांती के शुरू और अखीर पर एक एक कड़ी घटाकर



(चित्र ७१ स) (चित्र ७१ ब)

तीन तीन कड़ियां बुनावट के दोनों किनारों पर कम कर दीं थीं जिसकी वजह से बुनावट की शक्ल ऐसी (चित्र ७१ स) होकर एक कंगूरा बना था । इसी तरह जहां चाहो कंगूरे बना लिया करना; अगर कंगूरे ज्यादा बड़े रखना चाहो तो ज्यादा कड़ियां बढ़ाकर घटाने से बना लिया करना ।

ली०—हां यह समझ गई हूं ।

क०—आज तुमको एक **तीसरी तर्ज की बनियान** बताती हूं (चित्र ७२); इस के भी दोनों पर्त एकसाथ बुने जायेंगे लेकिन बजाय कमर से शुरू करने के यह अस्तीन से शुरू की जायगी ।

अस्तीन 'अ अ' के लिये ५६ कड़ियां डाल कर दो कड़ी सीधी और दो कड़ी उलटी उलटी की फलीदार बुनावट की आठ पांतियां बुनो ।

अब इस तरह बुनो :—

पांती ९ :—उलटी ।

पांती १० :—सीधी ।

पांती ११ :—सीधी।

पांती १२ :—सीधी।

(तमाम बानियान इन ही चार पांतियों को दोहराकर बुनी जायगी)।

अब चार पांतियां नमूने के अनुसार और बुनको और अख़ीरी पांती यानी पांती १६ के अख़ीर में ८ कड़ियां चौबग़ले के लिये डाल लो और आठ पांतियां नमूने के अनुसार बुनो लेकिन अख़ीरी पांती यानी पांती २४ के अख़ीर में ५६ कड़ियां सामने 'ब क' के लिये डाल लो। (अब १२० कड़ियां सलाई पर हैं)।

पांती २५ :—उलटी १६ ('ल क' के लिये), बाकी उलटी १०४, अख़ीर में ६४ कड़ियां पीछे के लिये डाल लो। (अब १८४ कड़ियां होगईं)।

पांती २६ :—उलटी १६, सीधी १५२ उलटी १६।

पांती २७ :—सीधी १६, सीधी १५२ सीधी १६।

पांती २८ :—सीधी १६, सीधी १५२, सीधी १६।

पांती २९ :—उलटी १६, उलटी १५२, उलटी १६।

पांती ३० :—पांती २६ की तरह।

पांती ३१ :—पांती २७ की तरह।

पांती ३२ :—पांती २८ की तरह।

अब पांती २९ से ३२ तक दो दफ़े दोहराओ।

पांती ४१ :—उलटी १६, उलटी ६८, बांधो १६ (गले 'ग ग' के लिये), उलटी ६८, उलटी १६। (अब १६८ कड़ियां सलाई पर हैं)।

पांती ४२ :—उलटी १६, सीधी ६८, बाकी ८४ कड़ियों को एक डोरे पर उतारदो (यह कड़ियां पीछे के लिये हैं फ़िलहाल इनकी ज़रूरत नहीं) ।

पांती ४३ :—सीधी ६८, सीधी १६ ।

पांती ४४ :—सीधी १६, सीधी ६८ ।

पांती ४५ :—उलटी ६८, उलटी १६ ।

पांती ४६ :—उलटी १६, सीधी ६८ ।

पांती ४७ :—सीधी ६८, सीधी १६ ।

पांती ४८ :—सीधी १६, सीधी ६८ ।

अब पांती ४५से४८तक १८दफे और दोहराओ; 'ग ग' (अब १२० पांतियां सामने की बुन चुकीं और 'ग ग' तक बुनावट पहुंच गई) । अब इन कड़ियों को एक डोरे पर उतारकर ऊन तोड़दो।

अब इन कड़ियों को जो तुमने पहिले डोरे पर उतारीं थीं सलाई पर चढ़ालो और 'ग' से ऊन जोड़कर बुनना शुरू करके इस पीछे को भी आगे की तरह पांती ४२ से पांती १२० तक दोहराकर बुनो लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि हर एक पांती पलटकर बुनी जायगी और पांती १२० के शुरू में १६ कड़ियां गले के लिये डाली जायेंगीं ।

अब डोरे पर जो कड़ियां सामने की हैं इनको भी इस सलाई पर डाली हुई कड़ियों के पास उतार लो । (अब सलाई पर १८४ कड़ियां हैं)।

अब पांती २६ से ३२ तक चार दफ़े दोहराओ लेकिन अखीरी पांती यानी पांती १३६ के शुरू में ५६ कड़ियां (आगे की) बांध दो ।

अगली पांती के शुरू में ६४ कड़ियां (पीछे की) बांधदो । अब ६४ कड़ियां अस्तीन और चौबग़के की सफाई पर है इन पर पांती ६ से १२ तक दो दफ़े दोहराकर बुनो ।

अब चौबग़के की आठ कड़ियां बांधदो और बाक़ी ५६ कड़ियों को पांती ६ से पांती १२ तक दो दफ़े दोहराकर बुनो ।

अब आठ पांतियां फकीदार (सीधी २, उलटी २) की बुनकर ख़तम करदो ।

अब चित्र ७१ अ की सी एक पट्टी बुनकर गले के चारों ओर सींदो ।

अब बनियान को बिन्दियों की लकीर पर से दोहरी करके सींदो ।



१० वां परिच्छेद

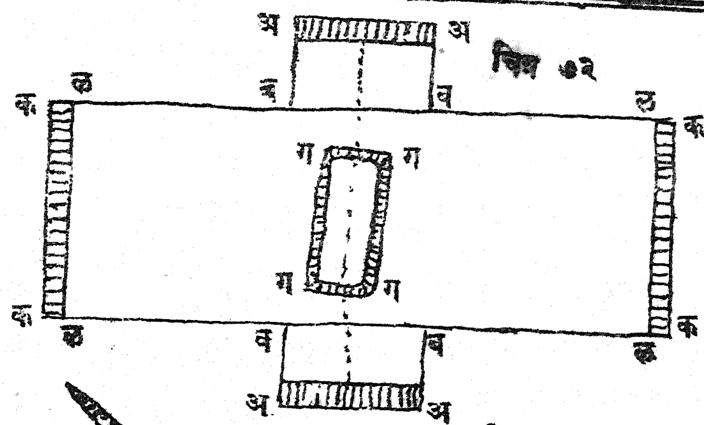
जाकट बुनना और छल्लेदार बुनावट

ली०—आज किस तर्ज की बनियान बताओगी ?

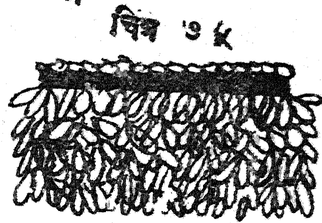
क०—दो एक तर्ज की बनियान अभी तुमको और सिखलानी हैं लेकिन उनके लिये कुछ बातों के जानने की और ज़रूरत है इस लिये उनको इस वक्त नहीं बताऊंगी। आज तुमको **छल्लेदार बुनावट** बताती हूं ताकि जाकट, टोपा वगैरह में, जो मैं तुमको आगे सिखाऊंगी काम आवे। यह बुनावट बहुत सहल, उम्दा और काम की है गो इसमें ऊन ज्यादा लगती है। लेकिन जैसी ऊन ज्यादा लगती है वैसी गर्म भी रहती है। इसकी टोपी, कॉलर, झल्लर वग़ैरह अच्छे रहेंगे।

जितनी कड़ियां चाहो इसके लिये डाललो और एक पांती सीधी बुनकर इस तरह बुनोः—

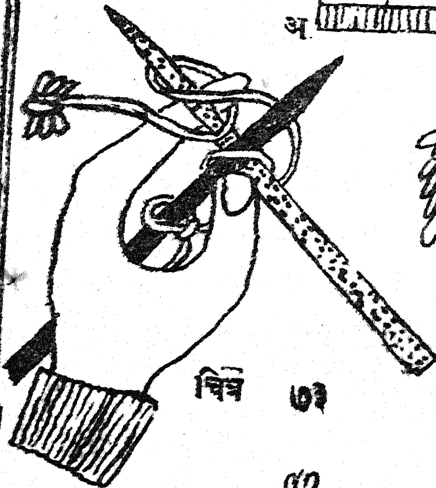
पांती २ः—सरकाओ १ [अगली कड़ीमें सीधी सलाईकी नोक इस तरह डालो जैसे कि सीधी कड़ी बुननेके लिये डालते हैं (चित्र २३) अब ऊन को सीधी सलाई और बायें हाथ की पहिली उंगलीके चारों तरफ़ एक दफ़े फेरो और उन को सीधी सलाई के पीछे लटकनेदो (एसा करने से सीधी सलाई पर ऊन दो दफ़े फिर जायगी चित्र ७३), अब इन दोनों ऊन के छल्लों को बाईं सलाई की कड़ी में होकर सामने को निकालो (चित्र ७४) और बाईं सलाई की कड़ी को उतार दो] अब बाक़ी कड़ियों को भी इस को [ ] दोहरा दोहरा कर बुनको सिर्फ़ अख़ीरी कड़ी को इस तरह छल्ले-



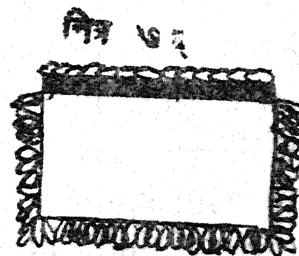
चित्र ७२



चित्र ७५



चित्र ७३



चित्र ७६



चित्र ७४

दार मत बुनो बल्कि सीधी बुनो। (इस तरह छल्ले बुनावट के पीछे की तरफ़ बनते जायेंगे)।

पांती ३ः—सरकाओ १, बाकी सीधी।

अब पांती २ और ३ को दोहराकर जितनी ऊंची बुनना चाहो बुनलो।

अगर बुनावट ज्यादा भारी और गर्म चाहो तो ऊन को सिर्फ़ पहिली ही उंगली पर फेरने की बजाय पहिली और दूसरी दोनों के चारों ओर फेरो (इस तरह छल्ले बड़े बनेंगे) या ऊन को बजाय एक दफ़े सलाई और उंगली पर फेरनेके दो, तीन या ज्यादा दफ़े फेरो (इस तरह बुनावट और भी ज्यादा घनी होगी गो ऊन बहुत लगजायगी)। अगर बुनावट और भी हल्की करना चाहो तो हर छल्लेदार पांती बुनने के बाद एक पांती सीधी की जगह तीन पांतियां सीधी बुनो। यह बुनावट दोनों तरफ़ एकसी नहीं होगीः— एक तरफ़ छल्ले होंगे (चित्र ७५) और दूसरी तरफ़ नहीं (चित्र ७६)।

ली०—यह तो मैंने बुन की और अच्छी तरह समझ गई अब कुछ और सिखाओ।

क०—अच्छा ! तो **जाकट** बुनना बताती हूं। इसको (चित्र७७) रामकुमार के नाप की बुनो लेकिन वह जाड़ों तक बढ़जायगा और क़रीबन एक बरस का होजायगा इस लिये जाकट कुछ बड़ी ही रखनी चाहिये। मेरी समझमें 'क क' कमर के नाप से कुछ बड़ी रखने के लिये १०७ कड़ियां डाललो और 'क क' से 'ल ल' तक आठ पांती सीधी बुनो।

अब 'ल ल' से 'ब ब' बग़ल तक चालीस पांतियां इन दो पांतियों को बीस दफ़े दोहराकर बुनो :-

पांती १:—सीधी ६, [सीधी १, उलटी १, दोहराओ] अख़ीर पर सीधी १, सीधी ६।

पांती २:—सीधी ६, उलटी ६५, सीधी ६।

अब एक सामने के लिये २७ कड़ियां सलाई पर रहनेदो बाक़ी ८० कड़ियां जो दूसरे सामने और पीछेके लिये हैं एक डोरे पर उतारदो।

अब इन २७ कड़ियों पर २० पांतियां इन दो पांतियों को दोहराकर बुनो:—

पांती १:—सीधी ६, [सीधी १, उलटी १, दोहराओ] सीधी १।

पांती २:—उलटी २१, सीधी ६।

अब कंधे "बं बं ग ग" के लिये इस तरह बुनो :—

पांती २१ :—सीधी ६, [सीधी १, उलटी १, नौ दफ़े] सीधी १, एकसाथ सीधी २।

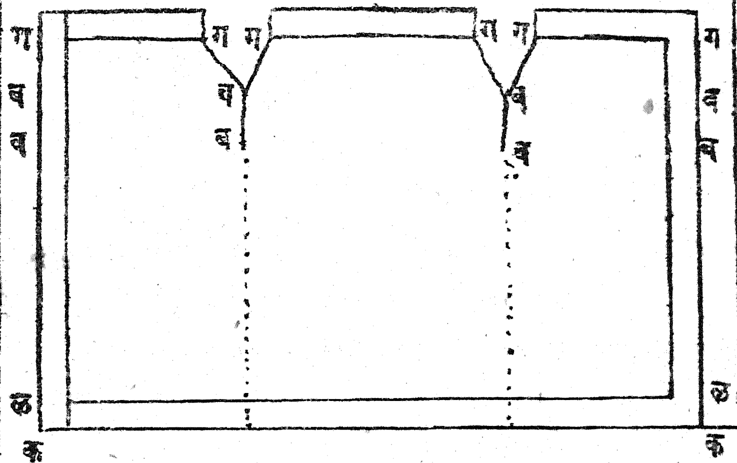
पांती २२ :—सरकाओ १, एकसाथ उलटी २, उलटी १७, सीधी ६।

पांती २३ :—सीधी ६, (सीधी १, उलटी १, आठ दफे) सीधी १, एकसाथ उलटी २।

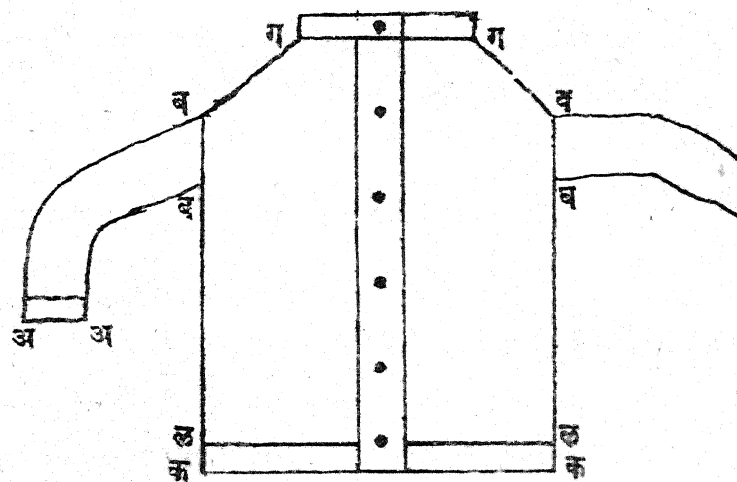
पांती २४ :—सरकाओ १, एकसाथ उलटी २, उलटी १५, सीधी ६।

पांती २५ :—सीधी ६, (सीधी १, उलटी १, सात दफ़े) सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सरकाई हुई कड़ी को एक साथ बुनी कड़ी क ऊपर होकर उतारदो।

पांती २६ :—सरकाओ १, एकसाथ उलटी ३, उलटी ११, सीधी ६।



चित्र ७७



चित्र ७८

पांती २७:—सीधी ६, (सीधी १, उलटी १, छः दफ़े), सीधी १,

पांती २८: —सरकाओ १, उलटी १२ सीधी ६ ।

पांती २९:—सीधी ६, (सीधी १, उलटी १, पांच दफ़े), सीधी १, एकसाथ उलटी २ ।

पांती ३०:—सरकाओ १, एकसाथ उलटी २, उलटी ९, सीधी ६ ।

अब पीछा बुना जायगा—इसके लिये ५३ कड़ियां इन ८० कड़ियों में से जो डोरे पर हैं सलाई पर चढ़ाओ और इसको इसी सामने की तरफ़ से जो अभी बुना है बुनना शुरू करो:—(इसमें दोनों तरफ़ कड़ियां कम की जायेंगीं)।

पांती १:—सरकाओ १,(सीधी १, उलटी१, छब्बीस दफ़े)

पांती २:—सरकाओ १, बाकी कड़ियां उलटी।

इन दोनों पांतियों को दस दफ़े दोहराओ।

अब कंधे इस तरह घटाओ:—

पांती २१:—सरकाओ १, एक साथ सीधी २, उलटी१ (सीधी १, उलटी १, तेईस दफ़े) एक साथ सीधी २, उलटी १,

पांती २२:—सरकाओ १, एक साथ उलटी २, उलटी ४५, एक साथ उलटी २, उलटी १,

पांती२३:—पांती २१, की तरह मगर ( ) को २१ दफ़े ही दोहराकर ।

पांती२४:— पांती २२, की तरह मगर उलटी ४५ की जगह उलटी ४१, बुनो ।

पांती २५:–सरकाओ १, सरकाओ १, एक साथ उलटी २ सरकाईहुई कड़ी को एक साथ बुनी हुई के ऊपर होकर उतारदो, (सीधी १, उलटी १, अठारह दफ़े), सीधी १, एक साथ उलटी ३, सीधी १ ।

पांती २६:–सरकाओ १, सरकाओ १, एक साथ उलटी २, सरकाई हुई कड़ी को एक साथ बुनी हुई कड़ी पर से उतारदो, उलटी ३३, एक साथ उलटी ३, उलटी १ ।

पांती २७:—सरकाओ १, उलटी १, (सीधी १, उलटी १, सत्तरह दफ़े), सीधी १ ।

पांती २८-—सरकाओ १, उलटी ३६ ।

पांती २९:—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, उलटी १, (सीधी १, उलटी १, पन्द्रह दफ़े), एकसाथ सीधी २, उलटी १ ।

पांती ३०:—सरकाओ १, एकसाथ उलटी २, उलटी २९, एकसाथ उलटी २, उलटी १ ।

अब इन ३३ कड़ियों को एक डोरे पर उतार दो और ऊन तोड़ दो ॥

अब दूसरा सामना भी बाकी २७ कड़ियों पर जो डोरे पर बची हैं बग़ल की तरफ़ से इस तरह बुनो :—

पांती १:–(सीधी १, उलटी १, दस दफ़े), सीधी १, सीधी ६ ।

पांती २ :—सीधी ६, उलटी २१ ।

इन दोनों पांतियों को नो दफ़े और दोहराओ ।

पांती २१ :—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, उलटी १, [सीधी १, उलटी १, आठ दफ़े], सीधी १, सीधी६।

पांती २२ :—सीधी ६, उलटी १८, एकसाथ उलटी२।

पांती २३ :—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, उलटी १, [सीधी १, उलटी १, सात दफ़े], सीधी १, सीधी ६।

पांती २४ :—सीधी ६, उलटी १६, एकसाथ उलटी२।

पांती २५:—सरकाओ १, एकसाथ उलटी ३, [सीधी १, उलटी १, छः दफ़े], सीधी १, सीधी ६ ।

पांती २६:—सीधी ६, उलटी १२, एकसाथ उलटी ३।

पांती २७:—सरकाओ १, उलटी १, [सीधी १, उलटी १, पांच दफ़े], सीधी१, सीधी ६ ।

पांती २८:—सीधी ६, उलटी १३ ।

पांती २९:—सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, उलटी १, [सीधी १, उलटी १, चार दफ़े], सीधी १, सीधी ६।

पांती ३०:—सीधी ६, उलटी १०, एक साथ उलटी २।
(अब १७ कड़ियां रहगई)

इन १७ कड़ियों को सलाई पर रखती हुई पीछे की ३३ कड़ियां फिर दूसरे सामने की १७ कड़ियां डोरों पर से सलाई पर चढ़ालो अब सलाई पर ६७ कड़ियां होगई)।

अब इनपर छै पांतियां गले के लिये सीधी बुनकर ख़तम करदो ।

अब जाकट के दोनों सामने बिन्दियों की लकीरों पर मोड़ कर "बं ग" को सींदो लेकिन "ब बं" को असतीनों के लिये खुला रहनेदो

असतीन के लिये ३१ कड़ियां डालको और आठ पांतियां सीधी बुनो ।

अब ३६ पांतियां इन दो पांतियों को दोहराकर बुनोः—

पांती (६)ः सरकाओ १, उलटी १, [सीधी १, उलटी १, चौदह दफ़े], सीधी १ ।

पांती (१०)ः—सरकाओ १, उलटी ३० ।

अब १० कड़ियां १० पांतियों में इस तरह बढ़ाकर अस्तीन को चौड़ी करो :—

पांती (४५)ः—सरकाओ १, बढ़ाओ १, उलटी १, [सीधी १, उलटी १, चौदह दफ़े] बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (४६)ः—उलटी बुनो ।

पांती (४७)ः—सरकाओ १, बढ़ाओ १, [सीधी १, उलटी १, पन्द्रह दफ़े], सीधी १, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (४८)ः—उलटी बुनो ।

पांती (४९) :—सरकाओ १, बढ़ाओ १, उलटी १, [सीधी १, उलटी १, सोलह दफ़े], बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (५०) :—उलटी बुनो ।

पांती (५१)ः—सरकाओ १, बढ़ाओ १, [सीधी १, उलटी १, सत्तरह दफ़े], सीधी १, बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (५२) :—उलटी बुनो ।

पांती (५३) :—सरकाओ १, बढ़ाओ १, उलटी १, (सीधी १, उलटी १, अठारह दफ़े), बढ़ाओ १, सीधी १ ।

पांती (५४) :—उलटी बुनो ।

अब ख़तम करदो । यह एक अस्तीन बुनगई; दूसरी भी इसी तरह बुनको और दोनों को सींकर जाकट में सींदो अब पांच सीप के बटन बायें सामने की पट्टी पर टांकदो

और सीधे सामने में उनके लिये पांच काज करदो। यह जाकट तैयार होगई (चित्र ७८)।

की०—बहिन! कल तो हम तुम दोनों काम काज में लगीं रहीं इस वक्त कुछ बताओ तो बुनूं।

क०—अच्छा! रामकुमार के लिये तो जाकट तुमने बुन ही ली आज रामरत्न के लिये भी शुरू करदो। इस **दूसरी तर्ज की जाकट** में रामकुमार की जाकट से थोड़ा ही फ़र्क़ होगा। रामकुमार की जाकट में बग़ल से ऊपर तीनों परत अलग २ बुने गये हैं लेकिन इस में बग़ल से थोड़े ही ऊपर तक आस्तीनों के लिये सूराख़ छेकने को तीनों पर्त अलग अलग बुनेजायेंगे बाद में सब कड़ियां एक ही सलाई पर चढ़ाली जायेंगीं और मुड़े पर कड़ियां कम कर करके कंधे बनाये जायेंगे (चित्र ७७ व ७८)।

इसके लिये १३६ कड़ियां सलाई पर डाल लो और इस तरह बुनो:

पांती १ :—(उलटी २, सीधी २, चौंतीस दफ़े)।

पांती २ :—सीधी बुनो।

इन दो पांतियों को बग़ल 'ब ब' तक बुनने के लिये २८ दफ़े दोहराओ।

अब अस्तीन के लिये सूराख छेकने के लिये दोनों सामने के पर्त और पीछा अलग २ बुनेजायेंगे इस लिये ३१ कड़ियां एक सामने के लिये सलाई पर रहनेदो बाकी १०५ कड़ियां एक डोरे पर उतारदो—सलाई पर की कड़ियों पर पांती १ व २ को दोहराकर तेईस पांतियां बुनो और इन ३१ कड़ियों को डोरे पर उतारदो।

अब पीछे के लिये १०५ काड़ियों में से ७४ काड़ियां सलाई पर चढ़ालो और पांती ५७ व ५८ को दोहराकर २३ पांतियां बुनलो :—

पांती ५७ :—उलटी १, सीधी २, (उलटी २, सीधी२, सत्तरह दफ़े), उलटी २, सीधी १।

पांती ५८ :—सीधी बुनो।

अब इन काड़ियों को भी डोरे पर उतार दो और दूसरे सामनेके लिये बाकी३१काड़ियां सलाइ पर चढ़ालो और पांती (५७) व (५८) को दोहरा कर तेईस पांतिया बुनलो।

पांती (५७):—सीधी १, [उलटी २, सीधी २' सात दफ़े] उलटी २।

पांती (५८):—सीधी बुनो।

अब तमाम काड़ियां इसी सलाई के अख़ीर में डोरो पर से चढ़ालो (अब १३६ काड़ियां होगई)।

अब कंधे बनाने के लिये इस तरह बुनो :–

पांती ८० :—सीधी ३०, एकसाथ सीधी २, सीधी ७२, एकसाथ सीधी २, सीधी ३०।

पांती ८१ :–(उलटी २, सीधी २, सातदफ़े) उलटी २, सीधी १, (उलटी २, सीधी २, अठारह दफ़े) उलटी १, सीधी २, (उलटी २, सीधी २, सात दफ़े)।

पांती ८२, :–सीधी २९, सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सरकाई हुई कड़ी को एक साथ बुनी हुई कड़ी के ऊपर होकर उतारदो, सीधी ७०, सरकाओ १, एकसाथ सीधी २, सरकाइ कड़ी एकसाथ बुनी पर से उतारदो, सीधी २६,।

पांती ८३:–[उलटी २, सीधी २, सात दफ़े], उलटी २, उलटी १, सीधी २, [उलटी २, सीधी २, सोलह दफ़े], उलटी २, सीधी १, सीधी २, [उलटी २, सीधी २, सात दफ़े]।

पांती ८४:–सीधी २८, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी एक साथ बुनी पर होकर उतारो, सीधी ६८, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी एक साथ बुनी पर से उतारो, सीधी २८।

पांती ८५:–[उलटी २, सीधी २, सात दफ़े], उलटी १, सीधी २, [उलटी २, सीधी २, सोलह दफ़े], उलटी २, सीधी १, [उलटी २, सीधी २, सात दफ़े]।

पांती ८६:–सीधी २७, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी उतारो, सीधी ६६, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी उतारो, सीधी २७।

पांती ८७:–[उलटी २, सीधी २, सात दफ़े], सीधी १, [उलटी २, सीधी २, सोलह दफ़े], उलटी १, [उलटी २, सीधी २, सात दफ़े]।

पांती ८८:–सीधी २६, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी उतारो, सीधी ६४, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी उतारो, सीधी २६।

पांती ८९:– (उलटी २, सीधी २, छः दफ़े), उलटी २ सीधी १, (उलटी २, सीधी २, सोलह दफ़े), उलटी १, सीधी २, (उलटी २, सीधी २, छः दफ़े)।

पांती ९०:–सीधी २५, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी उतारो, सीधी ६२, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी उतारो, सीधी २५।

पांती ९१:—(उलटी २, सीधी २, छः दफ़े), उलटी २, उलटी १, सीधी २, (उलटी २, सीधी २, चौदह दफ़े) उलटी २, सीधी १, सीधी २, (उलटी २, सीधी २ छःदफ़े)।

पांती ८२:—सीधी २४ सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई उतारो, सीधी ६०, सरकाओ १, एक साथ सीधी २, सरकाई कड़ी उतारो, सीधी २४ ।

अब ११० कड़ियां सलाई पर हैं अब लोहे की सलाइयां लेकर तीन पांतियां सीधी बुनो; अब गले में डोरी डालने के लिये सूराख़ करने को एक पांती इस तरह बुनो:—

पांती ८६ :—सीधी १, (सीधी २, बनाओ १, एक साथ सीधी २, दोहराओ), सीधी १ ।

अब तीन पांतियां सीधी और बुनकर ख़तम करदो ।

अब अस्तीन के लिये ४६ कड़ियां हाथी दांत की सलाई पर डाल लो और जाकट के नमूने की तरह बुनो; मगर शुरू की दस पांतियों में दस कड़ियां हर दूसरी पांती के शुरू और अख़ीर में एक एक कड़ी घटाकर कम करो। इस के बाद ५० या ज्यादह पांतियां नमूने की और बुनकर ख़तम करदो। इसी तरह दूसरी अस्तीन भी बुनकर जाकट में सींदो।

अब लोहे की सलाइयों पर नौ कड़ियां डालकर सीधी बुनावट में एक पट्टी बुनकर जाकट में 'लल' पर सींदो इसी तरहकी एक पट्टी सीधे सामने में टाँकदो, और बायें सामने के लिये भी इसी तरह एक पट्टी बुनो मगर इस में बराबर फ़ासले पर पांच काज बटनों के लिये करो ।

ली०—क्या इस पट्टी के बुनने ही में काज किये जायेंगे ?

क०—हां ।

ली०—मैं तो इस तरह काज बनाना नहीं जानती; तुम जिस तरह कहो बनाऊं ।

क०—इनका बनाना तो बहुत सहल है—जहां पर काज करना हो वहां तक पट्टीको बुनकर पट्टीके बीच में एक पांती में तीन कड़ियां बांधदो और अगली पांती में उसी जगह तीन कड़ियां डालदो । यानी जहां काज करना है वहां पर दो पांतियां इस तरह बुनो :—

पांती (१) :—सीधी ३, बांधो ३, सीधी ३ ।

पांती (२) :—सीधी ३, डालदो ३, सीधी ३ ।

ली०—मैं समझगई; यह तो सहल है ।

क०—अब अस्तीनों के लिये भी दो पट्टियां १२ कड़ियां डालकर बुनलो और दोनों अस्तीनोंकी मोहरियों पर सींदो। अब पांच बटन सीधे सामने पर टांकदो—यह जाकट बनगई।

ली०—अभी तो तीन भी नहीं बजे हैं अगर कुछ और बताओ तो और बुनूं ।

क०—तुम ही कुछ बताओ ।

ली०—वह जाकट जो तुमने मुझको अपने बक्स में से कुछ दिन हुए जब निकाल कर दिखाई थी मुझको बहुत पसन्द है; एक वैसी ही मुझको बुनवादो ।

क०—कौनसी जाकट ?

ली०—वह ही जिस में सामने छल्लेदार बुनावट की किनारी लगी थी (चित्र ७९ अ) ।

—उसका बुनना तो बहुत ही सहल है। उसके लिये ५४ कड़ियां डाल लो और 'अ अ' से इस तरह बुनना शुरू करो (चित्र ७९) :—

पांती १ :—[सीधी १, उलटी १, दोहराओ]।

पांती २:—[उलटी १, सीधी १, दोहराओ]।

अब इन दोनों पांतियों को ५२ दफ़ और दोहराओ ।

पांती १०७:—पांती १ की तरह बुनो ।

पांती १०८:—[उलटी १, सीधी १, दोहराओ] अखीर पर 'म प' के लिये ५४ कड़ियां और डाल लो ।

अब पांती १ व २ को ४७ दफ़ दोहराओ ।

पांती २०३:—बांधो ५४ ('फ ज्ञ' के लिये) [सीधी १, उलटी १, सत्ताईस दफ़]; (अब 'भ स' की ५४ कड़ियां सलाई पर रहगई) ।

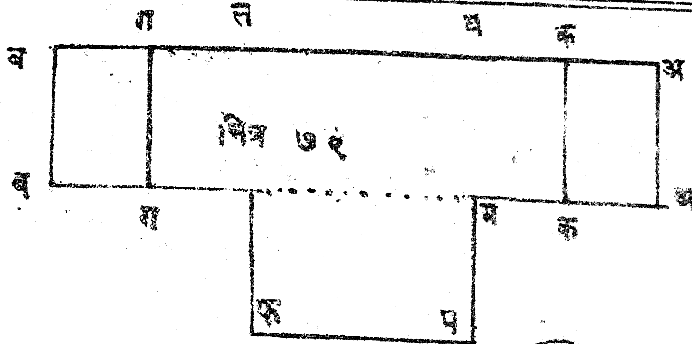
पांती २०४:—पांती २ की तरह ।

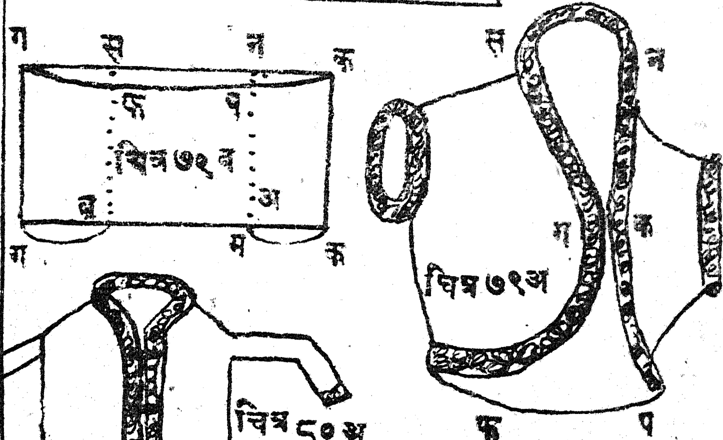
अब पांती १ व २ को ५३ दफ दोहरा कर खतम करदो

अब देखो बुनावट की शक्ल कैसी होगई है (चित्र ७६)।

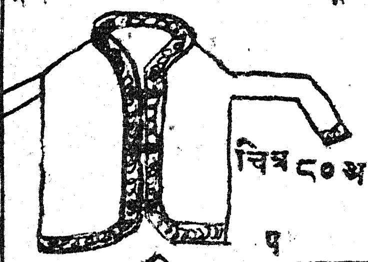
अब इसको 'भ म' पर से ऐसे मोड़ो कि 'फ प' 'स न' पर पड़े, और 'क क' पर से ऐसे मोड़ो कि 'अ अ' 'न म' पर पड़े और 'प म' से मिल जाय। अब 'अ अ' को 'प म' से सींदो । अब 'ग ग' पर से भी इस तरह मोड़ो कि 'ब व' 'म भ' पर पड़े और 'फ भ' से मिले; अब 'ब व' को भी 'फ ज्ञ' से सींदो ।

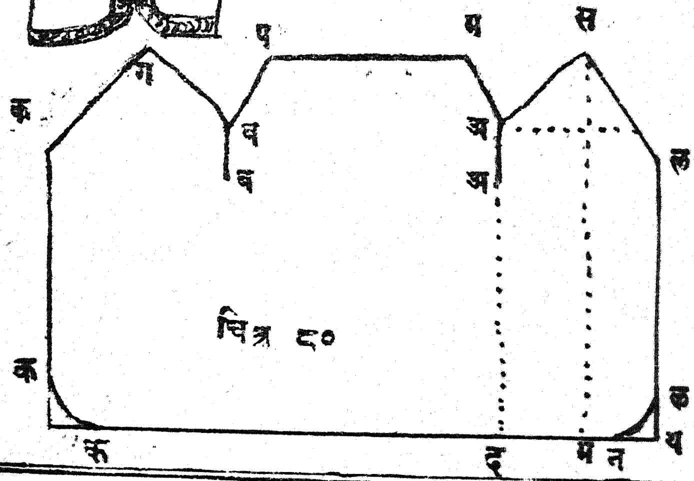
अब देखो इसकी यह शक्ल होगई (चित्र ७६ ब); 'फ ज्ञ' और 'प म' दो सीमन हैं और 'ग भ' और 'म क'


चित्र ७९


चित्र ७९ ब

चित्र ७९ अ


चित्र ८० अ


चित्र ८०

दो आसतीन के लिये सूराख हैं और 'स न' गला और 'फ प' कमर है।

अब एक किनारी छल्लेदार बुनावट की छः कड़ियां डालकर इतनी लंबी बुनो कि सामने 'स ग फ प क न' पर आजाये। एसी ही दो किनारियां 'ब ग ल' और 'अ क म' के लिये बुनकर टांकदो।

देखो 'स न' को एक हाथ से और 'फ प' को दूसरे हाथ से पकड़कर अलहदा करने से 'क' और 'ग' पास पास आजायेंगे (चित्र ७६ अ) इस जगह दो दो बटन दोनों परतों में किनारी पर टांकदो मगर एक तरफ़ के बटनों के नीचे दो फूंद ऊन की बटकर एसी टांको कि दूसरे पर्त के बटनों में आसानी से लग सकें; यह जाकट तैयार होगई। अब क्या बुनोगी ?

ली०—बहिन ! आज मुझको अभी सबक याद करना है; इस लिये अब जाना चाहती हूं नई चीज़ कल शुरू करूंगी।

क०—अच्छा जाओ। कल तुमसे एक **चौथी तर्ज की जाकट** बुनवाऊंगी- उस के लिये दो रंग की ऊन की ज़रूरत होगी काली ऊन तो तुम्हारे पास है कत्थई ऊन के एक बन्डल के लिये पौने पांच आने पैसे बाहर भिजवा देना।

ली०—लो बहिन ! मैं आज दोनों रंग की ऊन लाई हूं। बताओ कमर के लिये कितनी कड़ियां डाल दूं।

क०—यह जाकट कमर से नहीं बुनी जायगी बल्कि सामने के एक परदे 'ल ल' से शुरू कर के दूसरे परदे 'क क' पर खतम होगी (चित्र ८०)। इस के लिये कड़ियां डालने से पहिले कमर से बगल तक की ऊंचाई "द अ" और, कमर से

गले तक की ऊंचाई 'म स' का नाप लेकर अन्दाज़ा करो कि कितनी २ कड़ियों की ज़रूरत होगी।

की०—मेरी समझ में 'द अ' के लिये ४० और 'म स' के लिये ७० की ज़रूरत है।

क०—हां ठीक है इतनी बहुत होंगी; अब इन 'द अ' की ४० कड़ियों में बीस कड़ियां "अ अं" अस्तीन के सूराख़ की और मिलाओगी तो ६० कड़ियां होंगी; इन में से आठ कड़ियां 'त थ' और 'क फ' की कम करके ५६ कड़ियां बचीं; बस ५६ ही कड़ियां डालो।

की०—यह आठ कड़ियां कैसी कम की हैं?

क०—इन आठ कड़ियों में से तीन 'क फ' की और पांच 'थ त' की हैं; इस वक्त यह कड़ियां नहीं डाली जायेंगी लेकिन 'क ज' से बुनना शुरू करते ही बुनावट के दोनों किनारों पर कड़ियां बढ़ानी शुरू करदी जायेंगी; ऐसा करनेसे यह आठों कड़ियां सलाई पर आजायेंगी और बुनावट के दोनों कौने 'थ' और 'फ' पर गोल होजायेंगे।

की०—अब मैं समझ गई।

क०—अब इन ५६ कड़ियों पर 'क ज' से दो पांती सीधी और दो पांती उलटी की बुनावट इस तरह बुनना शुरू करो—

पांती १:—सीधी।

पांती २:—सरकाओ १, बढ़ाओ १, बीच की कड़ियां सीधी बुनो, आख़ीर पर बढ़ाओ १, सीधी १।

पांती ३:—उलटी।

पांती ४:—सरकाओ १, बढ़ाओ १, बीच की कड़ियां सीधी बुनो, अख़ीर पर बढ़ाओ १, सीधी १।

इन चार पांतियों को दो दफ़े और दोहराओ।

पांती १३ः—सीधी।

पांती १४ः—सरकाओ १, बढ़ाओ १, बाकी सीधी।

पांती १५ः—उलटी।

पांती १६—सरकाओ १, बढ़ाओ १, बाकी उलटी। (अब ७० कड़ियां हैं)।

पांती १७ः—सीधी।

पांती १८ः—सरकाओ १, घटाओ १, बाकी सीधी।

पांती १९ः—उलटी।

पांती २०—सरकाओ १ घटाओ १, बाकी उलटी।

इस तरह हर दूसरी पांती के शुरू में घटाते २ पांती ३६ में ६० कड़ियां रहजायेंगी।

पांती ३७ः—सीधी।

पांती ३८ः—बांधो २० (आस्तीन के सूराख़ के लिये), बाकी सीधी।

पांती ३९ः—उलटी बुनो आख़ीर पर २० कड़ियां (आस्तीन के सूराख़ के लिये) डाल लो।

पांती ४०ः—उलटी बुनो।

अब 'अ म' कन्धे के लिये इस तरह बढ़ाना शुरू करोः—

पांती ४१ः—सरकाओ १, बढ़ाओ १, बाकी सीधी।

पांती ४२ः—सीधी।

पांती ४३ः—सरकाओ १, बढ़ाओ १, बाकी उलटी।

पांती ४४ः—उलटी।

अब इन चार पांतियों को चार दफ़े और दोहराओ ताकि ७० कड़ियां सलाई पर होजायें; अब इन पर चवालीस

पांतियां दो पांती सीधी, दो पांती उलटी की पीठ 'म प' के लिये बुनो।

अब कन्धे 'प व' के लिये इस तरह घटाना शुरू करोः–

पांती १०१:—सीधी बुनो।

पांती १०२:—सरकाओ १, बीच की कड़ियां सीधी, अख़ीर पर एक साथ सीधी २, सीधी १।

पांती १०३:—उलटी।

पांती १०४:—सरकाओ १, बीच की कड़ियां उलटी, एक साथ उलटी २, उलटी १।

इन ऊपर कीचारों पांतियों को चार दफ़ और दोहराओ (अब ६० कड़ियां रह गई)।

पांती १२१:—बांधो २० (अस्तीन के सूराख़ के लिये) सीधी ४०।

पांती १२२:—सीधी ४०, डाल लो २० (अस्तीन के लिये)।

पांती १२३:–उलटी।

अब कन्धे 'व ग' के लिये पांती १२४ के अख़ीर पर और बाद में हर दूसरी पांती के अख़ीर पर एक एक कड़ी बढ़ाती जाओ जब तक कि ७० कड़ियां सलाई पर होजायें (ऐसा पांती १४२ में होगा)।

पांती १४३:–उलटी

पांती १४४:– सीधी बुनो।

पांती१४५:—सरकाओ १, घटाओ १, बाकी सीधी।

पांती १४६:–उलटी।

पांती १४७:–सरकाओ १, घटाओ १, बाकी उलटी।

अब 'ग क' और 'भ क' के मोड़ने के लिये हर दूसरी पांती में एक कड़ी शुरू पर और एक कड़ी अखीर पर घटाती हुई नमूने के अनुसार बुनो जब ५६ कड़ियां रह-जायें तब खतम करदो ।

अब कन्धे 'ब ग' को 'व प' से मिलाकर और 'अ म' को 'अ स' से मिलाकर सींदो ।

अब अस्तीन के लिये ४० कड़ियां डालो और दो पांती उलटी और दो पांती सीधी की बुनावट बुनो; जब अस्तीन की लंबाई इतनी होजाये कि २० कड़ियां और बुनने से ठीक नाप की होजायेंगी तो इन चार पांतियों को पांच दफे दोहराकर खतम करो:—

पांती (१):—सीधी ।

पांती (२):—सीधी ।

पांती (३):—उलटी ।

पांती (४):—सरकाओ १, बढ़ाओ १, बीच की कड़िया उलटी, अखीर पर बढ़ाओ १, उलटी १ ।

इसी तरह दूसरी अस्तीन भी बुनलो और जाकटमें सींदो।

अब काली ऊन की एक छल्लेदार बुनावट की किनारी ८कड़ियां लोहे की सलाइयों पर डालकर बुनो औरउसको इस तरह गले सामने और कमर पर टांकदो (चित्र८० अ), दो टुकड़े इसी तरह और बनो और अस्तीनों पर टांकदो ।

अब जाकट के सामने के एक पर्त पर किनारी के ऊपर तीन फूंद डोरेकी बटकर तीन बटनोंके नीचे दबाकर टांकदो और दूसरे पर्त पर सिर्फ़ बटन ही टांकदो ।

———

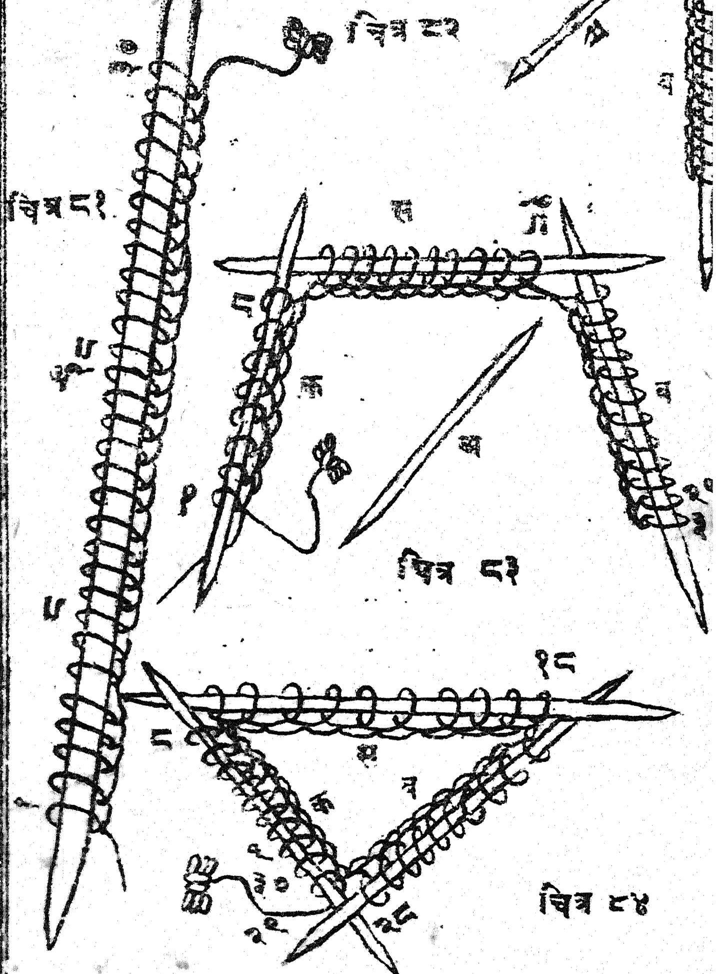
ग्यारहवां परिच्छेद

गोल बुनावट और मोज़े बुनना।

क०—लीलावती ! तुमको दो सलाइयों से बुनने का अभ्यास तो जाकट, बनियान आदि बुनते २ अच्छी तरह हो ही गया है आओ अब तुमको **गोल बुनना** सिखाऊं। इस प्रकार की बुनावट में चार या ज्यादा सलाइयां काम में आती हैं; इनमें से एक बुनने के लिये रहती है और बाकियों पर कड़िया रहती हैं। गोल बुनने के लिये कड़ियां डालने की दो रीतियां हैं: या तो जितनी कड़ियां डालनी हों। वह सब पहले एक ही सलाई पर डाल लेते हैं और फिर पेहला चक्कर बुनते वक्त कड़ियों को बुनकर तीन सलाइयों पर बराबर २ करलेते हैं; या जितनी कड़ियां डालनी होती हैं तीनों सलाइयों पर अलग २ ही डालकर पहला चक्कर बुनते है। लो अब मैं तुमको पेहले खुद बुनकर दिखाती हूं; तुम गौर से देखती जाना फिर खुद बुनना और जो बात समझ में न आये पूंछ लेना।

ली०—अच्छा।

क०—पहले तुमको पहली रीति से कड़ियां डाल कर और थोड़ा सा बुनकर दिखाती हूं:—देखो यह (अ), (ब), (स), (क) चार लोहे की सलाइयां हैं मैं इन से तीस कड़ियां डालकर बुनती हूं और चूंकि पहिली रीति से कड़ियां डालकर बुनना है इस लिये सब ३० कड़ियां एक ही सलाई (अ) पर डालती हूं (चित्र ८१)। अब एक और सलाई (ब) लेकर अखीरी यानी तीसवीं कड़ी को सीधी बुनकर ११



चित्र ८१

चित्र ८२

चित्र ८३

चित्र ८४

कड़ियां और इसी तरह बुनती हूं; अब इस सलाई (ब) को नीचे लटकने देती हूं और एक दूसरी सलाई (स) लेकर दस कड़ियां बुनती हूं (चित्र ८२)। अब सलाई (स) को लटकने देती हूं और बाकी आठ कड़ियों को भी एक तीसरी सलाई (क) से बुनलेती हूं देखो इस तरह तीसों कड़ियां तीनों सलाई (ब, स, क,) पर बटगईं यानी (ब) पर १२, (स) पर १० और (क) पर ८ हैं; और सलाई (अ), जिसपर शुरू में ३० कड़ियां डाली थीं, खाली होगई (चित्र ८३)। अब कड़ी १ को कड़ी ३० से मिलाया जायेगा; ऐसा करने के लिये सलाई (ब) पर से कड़ी न० ३० व २९ बुनकर सलाई (क) पर लिये आती हूं; यह देखो अब सलाई (क) की बुनावट सलाई (ब) से मिलगई (चित्र ८४); यह एक **चक्कर** होगया और तीनों सलाइयों पर बराबर २ यानी दस दस कड़ियां होगईं। अब दूसरा चक्कर सलाई (अ) से बुनना शुरू करती हूं; यह चक्कर और बाद के सब चक्कर कड़ी न० २८ से शुरू होंगे और कड़ी न० २९ पर ख़तम होंगे; देखो पहले सलाई (अ) को जो खाली है लेकर कड़ी न० २८ से बुनती हुई सलाई (ब) की दसों कड़ियां बुनलेती हूं; यह देखो अब सलाई (ब) खाली होगई, अब इस सलाई (ब) से सलाई (स) की दसों कड़ियां भी बुनती हूं, अब यह जो सलाई (स) खाली हुई है इस से सलाई (क) की दसों कड़ियां यानी कड़ी न० ८ से कड़ी न० २९ तक बुनलेती हूं, यह दूसरा चक्कर ख़तम होगया। अब तुमने देखलिया कि चार सलाइयों से गोल किस तरह बुना जाता है (चित्र ८५)। तुम इसी रीति से कड़ियां डालकर थोड़ा बुनकर मुझको दिखाना।

दूसरी रीति कड़ियां डालने की—यह है कि जितनी कड़ियां डालनी हों उनकी एक तिहाई सलाई (ब) पर डालो और उसके लटकने देकर सलाई (स) पर एक तिहाई कड़ियां डालो; अब इस सलाई को लटकने दो और सलाई (क) पर बाकी कड़ियां डाल लो। अब चक्कर बुनना सलाई (अ) से शुरू करो।

ली०—लो बेहन! मैं इतना (चित्र ८६) बुनकर लाई हूं अगर फुरसत मिलती तो और भी बुन लाती।

क०—खैर इतना ही बहुत है; मुझको तो तुम्हें गोल बुनना बताने से और तुम्हारे समझ जाने से मतलब है अभ्यास तो चीजें बुनने से खुद हो जायगा। देखो तुमने धागा (ड) जो पहली गांठ लगाते समय छोड़ा है बहुत छोटा है इसको हमेशा ज़रा बड़ा रखना चाहिये ताकि यह साफ़ मालूम हो कि चक्कर के शुरू होने की कौनसी जगह है। दूसरी बात यह है कि तुम्हारी बुनावट का यह हिस्सा जो दो सलाइयों के मिलने की जगह के नीचे है ढीला बुना गया है (चित्र ८६); यह न होना चाहिये क्योंकि भद्दा मालूम होता है।

ली०—जहां तक मुझ से हो सका मैंने इसको बहुत होशियारी से बुना है लेकिन उस पर भी ख़राब हो जाये तो इसका क्या इलाज है।

क०—बुनने में तुम्हारा कुछ क़सूर नहीं है; यह दो सलाइयों के बीच में सलाई बदलते समय ऊन ढीली रहजाने से हो जाता है; इसका इलाज यह है कि हर सलाई के शुरू

और अख़ीर की दो दो कड़ियां और बीच की कड़ियों से ज़्यादा कड़ी बुननी चाहियें।

ती०—अब इसको कितना और बुनूं ?

म०—इसके बुनने की अब क्या ज़रूरत है ? मैं तुम को **मोजे बुनना** बताती हूं इन बातों का जो मैंने बताई हैं मोज़े बुनने में ध्यान रखना।

ती०—अच्छा। लाला जी के पैर के बुनवाना उनके पैर के लिये कितनी कड़ियां डाली जायेंगी।

म०—मोजे बुनने के लिये कड़ियों की तादाद मालूम करने की वही रीति है जो तुमको बनियान सिखाते समय बता चुकी हूं यानी जिन सलाइयों और ऊन से मोजे बुनना हों उनहीं से एक टुकड़ा चौसर बुनावट का बुनकर देखो कि कितनी कड़ियों से एक इंच चौड़ी बुनावट बुनी गई है। इन दसतानों पर, जो मैंने इसी नम्बर की सलाइयों और इसी ऊन से बुने हैं, एक पैसा रखकर देखो कि कितनी कड़ियां उस के नीचे आती हैं।

ती०—दस ? लेकिन पैसा रखकर कड़ियां क्यों गिनवाई ?

म०—पैसे की चौड़ाई एक इंच होती है, पैसे से नापने से तुम को मालूम हो गया कि एक इञ्च के लिये दस कड़ियां डालने की ज़रूरत है। अब (ब ब) को चारों ओर नापकर देखो कि यह कितनी इंच है।

ती०—नौ इंच।

म०—तो १०×९=९० कड़ियां सलाइयों पर डालनी चाहियें, इस लिये पहली सलाई पर ३२, दूसरी पर ३०, तीसरी पर २८ कड़ियां डाल को और पहली सलाई पर से दो

कड़ियां बुन कर तीसरी पर ले आओ, इस तरह तीस २ कड़ियां तीनों सलाइयों पर हो जायेंगी ।

अब (ट ट) से (ब ब) तक करीब ५० चक्कर यानी करीबन ३½ इंच तक एक कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटी की फलीदार बुनावट में बुनों ।

अब (ब ब) से (अ अ) तक करीब पांच इंच के सादा बुनावट बुनो ।

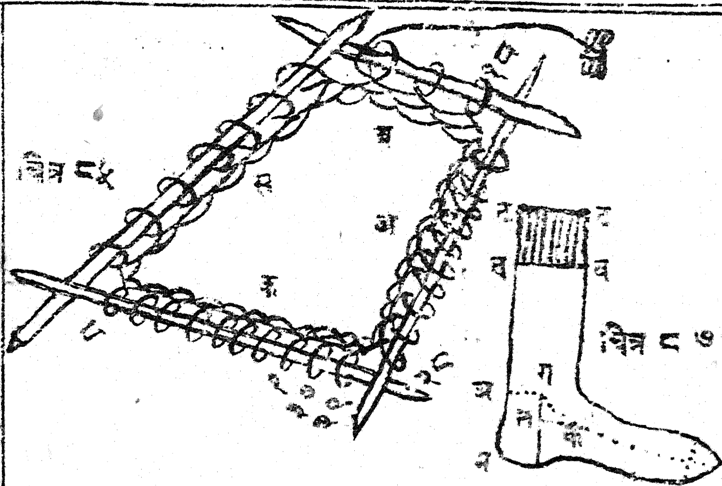
की०—क्या एक चक्कर सीधा और एक उलटा ?

क०—नहीं यह चौसर बुनावट थोड़ा ही है जो एक पांती सीधी और एक पांतीउलटी बुनने से सादा बुनावट आये इसमें तो सीधी पांतियां ही बुनने से सादा बुनावट आयेगी इस का यह कारण है कि चौसर बुनावट बुनने में एक पांती बुनते समय बुनावट की एक तरफ़ और दूसरी पांती बुनते समय दूसरी तरफ़ सामने रहती है इस लिये सादा बुनावट बुनने के लिये दूसरी पांती उलटी बुनते हैं ताकि पीछे की तरफ सीधी बुनावट आये, मगर क्योंकि गोल बुनने में हमेशा बुनावट की एक ही तरफ अपने सामने रहती है इस लिये उलटा चक्कर बुनने की जरूरत नहीं ।

की०—इस तरह तो चौसर बुनावटें जो तुमने शुरू में बताई थीं वह सब गोल बुनावट में बदल कर बुननी होंगी ।

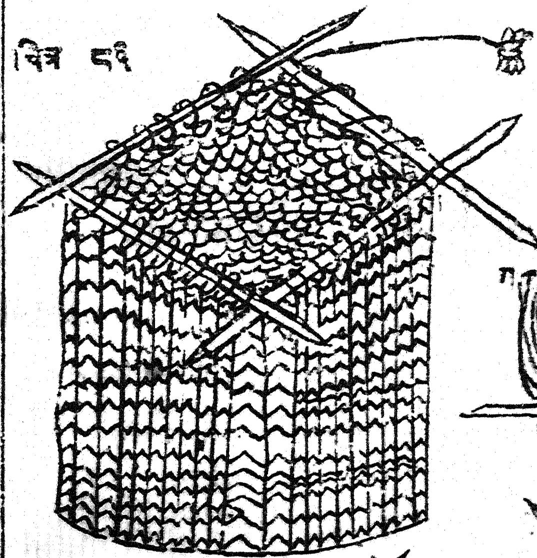
क०—इसमें क्या सन्देह है; ऐसा तो करना ही पड़ेगा ।

की०—अबतो यह सादा बुनावट पांच इंच होचुकी अब आगे बताओ ।

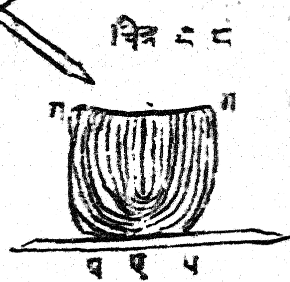


चित्र ८५

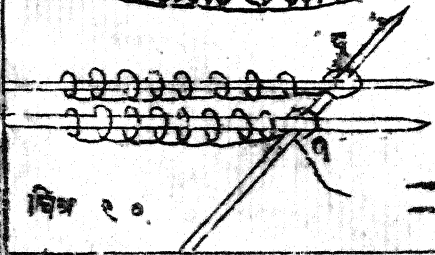
चित्र ८७



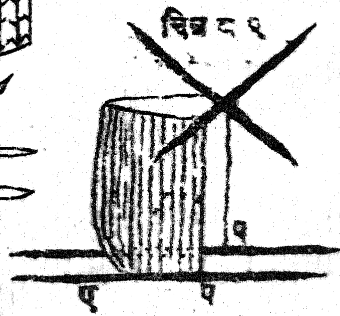
चित्र ८६



चित्र ८८



चित्र ९०.



चित्र ८९

क०—अब एड़ी के लिये ४४ कड़ियां एक सलाई पर रक्खो और बाकी ४६ को दो सलाइयों पर बराबर २ पैर की पीठ के लिये रहने दो (इनका इस समय काम नहीं पड़ेगा)।

अब एड़ी की सलाई जिस पर ४४ कड़ियां हैं पांती १ व २ को दोहराकर क़रीब तीन इंच तक बुनोः—

पांती १:—सरकाओ १, बाकी सीधी।

पांती २:—सरकाओ १, बाकी उलटी।

अब एड़ी को इस तरह मोड़ो (हर पांती की पहली कड़ी के सरकाने का ध्यान रखकर):-

पांती (१):—सीधी १९, सरकाओ १,

सीधी १, सरकाई हुई कड़ी सीधी पर से उतारदो, सीधी २, एक साथ सीधी २, सीधी १९।

पांती (२) उलटी।

पांती (३):—सीधी १८, सरकाओ १,

सीधी १, सरकाई हुई सीधी पर से उतारो, सीधी २, एक साथ सीधी २, सीधी १८।

पांती (४):—उलटी।

पांती (५):—सीधी १७, सरकाओ १,

सीधी १, सरकाई कड़ी उतारदो, सीधी २' एक साथ सीधी २, सीधी १७।

पांती (६):—उलटी।

इसी तरह पांती (७), (९), (११), के शुरू और अख़ीर पर १६, १५, १४ कड़ियां ही सीधी बुनती हुई छः पांतियां और बुनो।

अब कम होकर ३२ कड़ियां सलाई (प ए प) पर हैं (चित्र—८८)।इनमें से १६ कड़ियां(प)से(ए)तकएक दूसरी

पर उतारलो और एड़ी को उलट कर एड़ी की बुनावट की उलटी तरफ़ अपने सामने करके दोनों सलाइयों की तै इस तरह करो कि (प) (पं) के बराबर आजाये; इस तरह एड़ी की बुनावट (ए) से मुड़कर इस तरह की होजायेगी और दौनों सलाइयां इस तरह बराबर आजायेंगी (चित्र ८९)

अब इन दोनों सलाइयों को बांए हाथ में पकड़ो और एक और सलाई सीधे हाथ में लेकर इस तरह कड़ियां बांधना शुरू करो:—

सीधे हाथ की सलाई को बांए हाथ की दोनों सलाइयों पर की पहली एक एक कड़ी में होकर इस तरह डालो जैसे सीधी कड़ी बुनने के लिये डालते हैं (चित्र ९०) और उन को सीधी सलाई पर मामूली तरह से फेरकर बांई सलाइयों की दोनों कड़ियों के अन्दर से बाहर निकाल लो और इन दोनों कड़ियों को बांई सलाइयों पर से उतारदो-यह देखो एक कड़ी दोनों कड़ियों की बुनकर सीधी सलाई पर आगई; इसी तरह बांई सलाइयों की शुरू की एक २ कड़ी में से एक कड़ी और बुनकर सीधी सलाई पर लेआओ, अब सीधी सलाई पर दो कड़ियां हो गईं, अब सीधी सलाई, की पहली कड़ी को दूसरी के ऊपर होकर सलाई से नीचे उतारदो, यह एक कड़ी बंधगई। अब फिर बांई सलाइयों की दो कड़ियों की एक कड़ी बुनकर सीधी सलाई पर लेआओ; अब फिर दो कड़ियां सीधी सलाई पर होगईं, अब फिर पहले की तरह पहली कड़ी को इस कड़ी पर होकर, जो अभी बुनकर आई है, उतारदो, अब इसी तरह बांई सलाइयों की दो कड़ियों में एक बुनती और

बांधती चलो, यह सलाइयां मिलाकर खतम करना कहलाता है।

यह एड़ी बुन चुकी (चित्र ६१)।

अब एड़ीके सामने(ग प ग) की किनारेकी कड़ियां गिनो और उनकी आधी कड़ियां एक सलाई पर उठाओ; ऐसा करनेके लिये एक २ कड़ी बीच में छोड़ २ कर कड़ियां उठानी पड़ेंगीं।

की०—**कड़ियां उठाना**—तो मैं नहीं जानती; तुम जैसे बताओ वैसे उठाऊं।

क०—कड़ियां उठाने से सिर्फ़ यह मतलब है कि सलाई को कड़ी के नीचे डाल कर कड़ी के डोरे को सलाई पर चढ़ाओ और फिर सलाई पर ऊन फेरकर मामूली तरहसे एक कड़ी उसमें बुनलो एड़ीके सामने कड़ियां इस तरह उठाओ:—ऊनको (ग) पर की पहली कड़ी में बांधकर एक सलाई चेन की पहली कड़ी के दोनों डोरों के नीचे होकर इस तरह डालो (चित्र ९२) और सलाई पर सीधी कड़ी बुनने की तरह ऊन फेर कर एक कड़ी बुन लो, अब इस सलाई को एक कड़ी बीच में छोड़ कर इस + कड़ी के नीचे डालो और पहले की तरह ऊन फेर कर एक कड़ी बुनलो, इसी तरह (ग) से (ग) तक एक२ कड़ी छोड़कर कड़ियां उठालो। यह कड़ियां पैर के तलवे के लिये हैं इस लिये हैं इस लिये यह सलाई तलवे की सलाई कहलायेगी और यह दो सलाइयां जिनपर ४६ कड़ियां छोड़दी गई थीं पैर की पीठ की सलाइयां हैं, अब (ग)से (ग) तक जो ४६ कड़ियां पीठ की सलाइयों पर हैं बुनकर एक चक्कर पूरा करदो।

चक्कर २:-(ग) से बुनना शुरू करके तलवे की सलाई की कुछ कड़ियां सीधी बुनो, फिर पैर की पीठ की दोनों सलाइयों की ४६ कड़ियां सीधी बुनलो।

चक्कर ३ व ४:-चक्कर २ की तरह।

चक्कर ५:-तलवे की सलाई पर पहली दो कड़ियां एक साथ सीधी बुनो, बीच की कड़ियां सीधी बुनो, जब दो कड़ियां रहजायें तब एक कड़ी सरकाओ और एक बुनलो, और सरकाई हुई कड़ी को बुनी हुई पर से उतारदो यानी सरकबांध करो, अब पीठ की दोनों सलाइयों की कड़ियों को सीधी बुनो।

अब चक्कर ३, ४, व ५ को दोहरातीजाओ जब तक कि तलवे की सलाई पर कम होते होते ४० कड़ियां रहजायें। इस तरह तलवे की सलाई के शुरू और अखीर पर एक २ कड़ी हर तीसरे चक्कर में कम होने से न (न ग क) बगली छिक जायगी (चित्र ८७)।

अब सादा चक्कर बुनती चलो; जब पैर कड़ियां उठाने की जगह से $६\frac{१}{२}$ इंच बुनचुके तब पंजा बुनना।

अब पंजा इस तरह बुनोः—

चक्कर (१):-(तलवे की सलाई):सीधी १, सरक बांध१, बीच की कड़ियां सीधी, अखीर पर एक साथ सीधी २, सीधी १; (दूसरी सलाई):सीधी १, सरक बांध १, बाकी सीधी, (तीसरी सलाई):शुरू की कड़ियां सीधी, अखीर पर एकसाथ सीधी २, सीधी १।

चक्कर (२):- सादा

इन दोनों चक्करों को दोहराओ जब तीनों सलाइयों पर ३२ के क़रीब कड़ियां रहजायें तब पैर की पीठ की १६ कड़ियां एक सलाई पर उतार लो और बाकी १६ कड़ियां तलवे की सलाई पर रक्खो और दोनों सलाइयों को मिलाकर खतम करदो। यह एक मोज़ा बुन गया, अब दूसरा तुम अपने आप बुनलेना।

लीला०—उस दिन जो मोज़े बुने थे मैंने लालाजी को देदिये, अब कभी फ़ुरसत होगी तो चाचाजी के लिये बुनूंगी।

क०—आओ आज तुमको **ऊंचे घुटनों तक के मोज़े** बताऊं (चित्र ६३)। यह ही चाचाजी के लिये हो जायेंगे; वह बाईसिकिल पर हवा खाने जाते हैं उनके बड़े काम के होंगे।

इस के लिये घुटन (व व) का चारों ओर नाप लेकर कड़ियां डाली जाती हैं; यह (व व) करीब १२ या १३ इंच होता है इस लिये कुल १२ × १० = १२० कड़ियां डालको यानी एक सलाई पर ४२, दूसरी पर ४०, और तीसरी पर ३८।

(ट ट) से (व व) तक ५० चक्कर सीधी २, उलटी २ की फलीदार बुनावट के बुनों।

अब कड़ियों को सलाइयों पर सरका कर पहली दो कड़ियोंको पहली सलाई के बीचमें ले आओ और एक डोरा इनमें लगादो ताकि बाद में इसकी पहचान रहे, यह कड़ी **सीवन की कड़ियां** कहलाती हैं, इनही के आगे, पीछे पांइचे के लिये कड़ियां कम की जाती हैं, मोजा बुनने में

इसका ध्यान रखना चाहिये कि यह कड़ी बिल्कुल एक सीध में रहें; अगर ऐसा न होगा तो मोजा भद्दा होजायगा यह कड़ियां हर चक्कर में उलटी बुनी जायेंगी।

अब (ब ब) से (क क) तक १२० चक्कर, यानी जितनी कड़ियां मोज़े के लिये डाली हैं, सादा बुनो।

अब (क क) से (तत) तक, जिस की लम्बाई पांच या छः इञ्च होनी चाहिये, डाली हुई कड़ियों की चौथाई कड़ियां यानी ३० कड़ियां इस तरह कम करो:—

चक्कर १:—शुरू की कड़ियां सीधीं, एक साथ सीधी २, सीधी १, सीवन की दोनों कड़ियां उलटी, सीधी १, सरक-बांध १, बाकी कड़ियां सीधीं।

चक्कर २,३,४,५,६,७,८:—सीधे।

अब इन आठों चक्करों को दोहराती जाओ; जब ९० कड़ियां रहजाय घटाना बंद कर देना।

अब ९० कड़ियां सलाइयों पर हैं अब इतने ही यानी ९० चक्कर टखने के लिये (तत) से (अअ) तक सीधे बुनो।

अब एड़ी इस तरह बुनो:—

अगले चक्कर में पहली सलाई की शुरू की कड़ियां सीधी बुनकर सीवन की दोनों कड़ियों को उलटी बुनो, और इनके बाद २२ कड़ियां और सीधी बुनो फिर लौटो और इस तरह बुनो;-पहली कड़ी सरकाओ, उलटी २१, सीवन की दो कड़ियां उलटी, उलटी २२। (अब इस सलाई पर ४६ कड़ियां आगईं; यानी सीवन की कड़ियों के दोनों तरफ़ बाईस २२ कड़ियां हैं; यह एड़ी की सलाई हो गई); बाकी ४४ कड़ियों को दो सलाइयों पर पैर की पीठ के

लिये छोड़दो और एड़ी की सलाई परही ४३ पांतिया सादा बुनावट की बुनो।

अब एड़ी इस तरह मोड़ो:—

पांती १:—शुरू की कड़ियां सीधीं, जब सीवन की कड़ियों से पहले तीन कड़ियां रहें तो सरकाओ १, सीधी १, सरकाई हुई कड़ी सीधी बुनी हुई के ऊपर होकर उतारदो, सीधी १, सीवन की दो कड़ियां उलटी, सीधी १, एक साथ सीधी २, बाकी सीधीं।

पांती २:—उलटी।

इन दोनों पांतियों को पांच दफ़े दोहराओ; अब ३६ कड़ियां सलाई पर हैं अब एड़ी उलट कर इनको सलाइयां मिलाकर ख़तम करदो।

अब एड़ी के सामने पर एक२कड़ी बीच में छोड़कर ४६ कड़ियां एक सलाई पर उठाकर सीधी बुनलो और दोनों पैर की पीठ की सलाइयों को सीधी बुनकर एक चक्कर पूरा करलो।

चूंकि बगली के लिये मोज़े के वास्ते डाली हुई कड़ियों से दस कड़ियां कम यानी ११० होनी चाहियें; लेकिन यह उठाई हुई कड़ियां और पैर की पीठ की कड़ियां मिलकर कुल १००ही होती हैं इसलिये अगले चक्कर में १० कड़ियां तलवे की सलाई पर इस तरह बढ़ाकर पूरी ११० कड़ियां करलो:—

चक्कर२:—(तलवे की सलाई पर):—सीधी १,[बढ़ाओ १,सीधी ६, नौ दफ़े],बढ़ाओ १,सीधी १; (पीठ की सलाइयों पर):—सीधीं।

चक्कर ३ः—सीधा बुनो ।

अब बगली छेकने के लिये इस तरह घटाना शुरू करोः—

चक्कर ४ः—(तलवे की सलाई):सीधी १, सरकबांध १, बीच की कड़ियां सीधीं, अखीर पर एक साथ सीधी २, सीधी १, (पीठ की सलाइयां):—सीधी बुनो ।

चक्कर ५ः—सीधा ।

अब चक्कर ४ व ५ को नौ दफ़े और दोहराओ ताकि ९० कड़ियां यानी जितनी कड़ियां टखने पर एड़ी छेकते समय थीं तीनों सलाइयों पर रहजावें ।

अब सीधे चक्कर बुनतीजाओ जब तक कि पैर की लंबाई कड़ियां उठाने की जगह से ६½ इंच होजाये ।

अब पंजा इस तरह बुनो :—

चक्कर १ः—(तलवे की सलाई पर):सीधी १, सरकाओ १, सीधी १, सरकाई उतारो, बीच की कड़ियां सीधीं, एक साथ सीधी २, सीधी १, (पहली पीठ की सलाई पर):—सीधी १, सरकाओ १, सीधी १, सरकाई उतारो, बाकी कड़ियां सीधीं, (दूसरी पीठ की सलाई पर):शुरू की कड़ियां सीधीं, अखीर पर एक साथ सीधी २, सीधी १ ।

चक्कर २ः—सीधा ।

इन दोनों चक्करों को १२ दफ़े और दोहराओ ।

अब मोज़े को उलटलो और यह जो कड़ियां तीनों सलाइयों पर बची हैं इनको बराबर २ दो सलाइयों पर करके सलाइयां मिलाकर खतम करदो ।

यह एक मोज़ा होगया (चित्र ९३) दूसरा भी इसी तरह बुनलेना । अब मुझको दो तीन दिन तक फ़ुरसत न होगी

क्योंकि मैं अपनी जाकट सीऊंगी इस लिये तुम खुद ही एक जोड़ी मोज़े बुन कर मुझको दिखाना।

सी०—अच्छा।

क०—क्या तुमने मोज़े बुन लिये?

सी०—हां, छोटे बालक के लिये मोजे बुने हैं; लेकिन अभी एक ही मोज़ा तैयार हुआ है दूसरा बुनरही हूं वह आज पूरा हो जायगा।

क०—लाओ देखूं कैसा बुना है।

सी०—लाती हूं।

क०—बुना तो अच्छा है; लेकिन यह बताओ कि किस तरह? (चित्र ९४)

सी०—मेरे पास रामरतन के सूती मोज़े जो उसके लिये जब वह छः सात महीने का था आये थे रक्खे थे; मैंने उसका सिरा नाप कर ४४ कड़ियां (पहली पर १४, और दूसरी और तीसरी पर पन्द्रह १५) डालकर बीस चक्कर एक कड़ी सीधी और एक कड़ी उलटीकी फलीदार बुनावट के लिये; फिर ५० चक्कर सादा बुनावट के लिये।

इस के बाद मैंने २२ कड़ियां एड़ी के लिये एक सलाई पर रक्खीं और बाक़ी २२ में से ग्यारह ११ पैर की पीठ के लिये दो सलाइयों पर छोड़दीं। इस के बाद एड़ी की सलाई पर १८ पांतियां सादा बुनावट की बुनकर एड़ी को इस तरह मोड़ा थाः—

पांती १ः— सरकाई १, सीधी ७, सरकाई १, सीधी १, सरकाई हुई उतार दी, सीधी २, एक साथ सीधी २, सीधी ८।

पांती २:—उलटी ।

पांती ३:—सरकाई १, सीधी ६, सरकाई १, सीधी १, सरकाई हुई उतारदी, सीधी २, एक साथ सीधी २, सीधी ७ ।

पांती ४:—उलटी ।

पांती ५:—सरकाई १, सीधी ५, सरकाई १, सीधी १ सरकाई उतारदी, सीधी २, एक साथ सीधी २, सीधी ६ ।

पांती ६:—उलटी ।

पांती ७:—सरकाई १, सीधी ४, सरकाई १, सीधी १, सरकाई उतारदी, सीधी २, एक साथ सीधी २, सीधी ५ ।

पांती ८:—उलटी ।

इतनी एड़ी मोड़ने के बाद सलाइयां मिलाकर एड़ी खतम करदी थी और फिर एड़ी के सामने से २६ कड़ियां उठाकर और सीधी बुन कर पैर की पीठ की दोनों सलाइयों की कड़ियां बुन कर एक चक्कर कर लिया था; इस के बाद एक चक्कर और किया; फिर

चक्कर ३:—(तलवे की सलाई पर): सीधी १, सरक बांध १, सीधी २०, एक साथ सीधी २, सीधी १; (पीठ की सलाइयां): सीधी ।

चक्कर ४:—सीधा ।

चक्कर ५:—(तलवे की सलाई पर) : सीधी १, सरक-बांध १, सीधी १८, एक साथ सीधी २, सीधी १, (पीठ की सलाइयां): सीधी ।

चक्कर ६:—सीधा ।

चक्कर ७:-(तलवे की सलाई पर): सीधी १, सरक-बांध १, सीधी १६, एक साथ सीधी २, सीधी १; (पीठ की सलाइयां): सीधीं ।

इस के बाद १६ चक्कर सीधे किये थे ।

चक्कर २४:-(तलवे की सलाई पर): सीधी १, सरकबांध १, बीच की काड़ियां सीधी, अखीर पर एक साथ सीधी २, सीधी १; (पीठ की सलाइयों पर): सीधी १, सरकबांध १, बीच की काड़ियां सीधीं, अखीर पर एक साथ सीधी २, सीधी १ ।

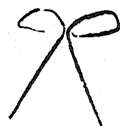
चक्कर २५:-सीधा ।

इसी तरह से यह दोनों चक्कर २४ व २५, पांच दफ़ दोहरा किये थे फिर पीठ की सलाइयों की काड़ियां एक सलाई पर करलीं थीं; फिर पीठ की सलाई और तलवे की सलाई पर बराबर बराबर काड़ियां कर के दोनों सलाइयां मिला कर और मोजा उलट कर खतम कर दिया था ।

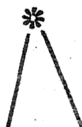
क०-बस अब तुमको मोज़े बुनना आगया, चूंकि यह बच्चे के मोज़े हैं इस लिये इन के सिरे में एक ऊन की डोरी डालदो, पहनाकर गांठ लगादी जायगी तो नीचे न खिसकेंगे । यह डोरी इस तरह बनाओ :—

दो या सवा दो गज़ के क़रीब ऊन लेकर तिहेरी कर के बटलो, अब इस तिहेरी की हुई ऊन के ठीक बीच में एक फुंदना लगा कर गांठ देदो और दोहरी कर के बट दो, अब इस छहरी ऊन के दूसरी तरफ़ भी एक फुंदना बांध दो, इसी तरह एक दूसरी डोरी भी बनाओ ।

फुंदने के बनाने की यह तरकीब है:-ऊनको बांए हाथ की दो उंगलियों के चारो ओर पांच सात दफे फेर कर तोड़दो, और इस मोइये को उंगलियों पे से उतारलो और डारी को इसके ठीक बीच में इस तरह बांधो (चित्र ६५) फिर इस मोइये के दोनों सिरों को मिलाकर कैंची से इस तरह कतरो कि फूल सा बन जाये (चित्र ६६)

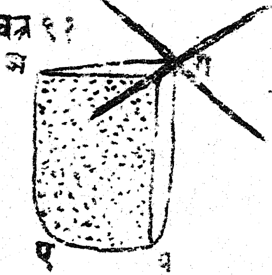


(चित्र ९५)

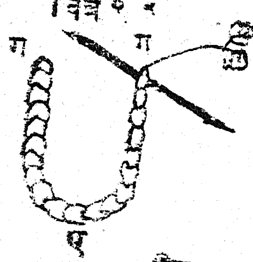


(चित्र ९६)

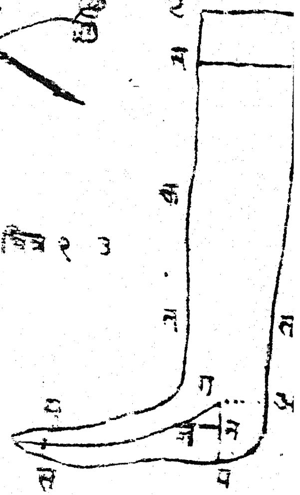




चित्र ९१



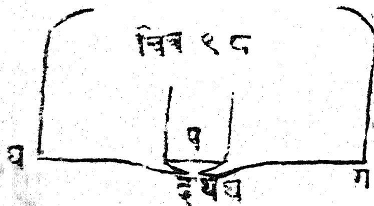
चित्र ९२



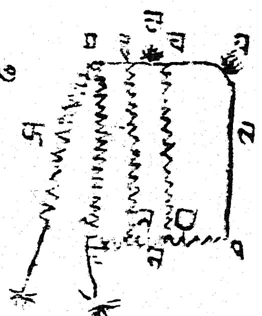
चित्र ९३



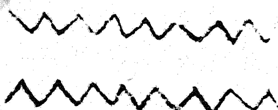
चित्र ९४



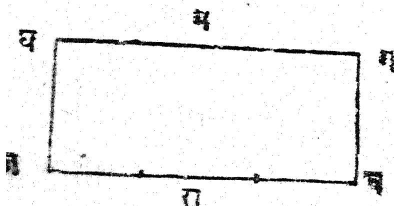
चित्र ९८



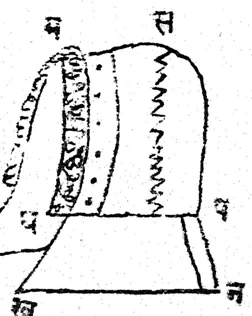
चित्र ९७



चित्र ९९



चित्र १०१



चित्र १००

बारहवाँ परिच्छेद

टोपा बुनना।

क०—लीलावती ! तुम टोपा बुनना सीखने के लिये कितने ही दिन से कहरही हो आओ आज तुमको टोपा बुनना ही बताऊं।

ली०—अच्छा। तो मैं कौनसी सलाइयां निकालूं।

क०—वही हाथीदांत की १० नम्बर की जिन से तुमने और चीज़ें पहले बुनी हैं।

ली०—अच्छा तो बताओ कितनी कड़ियां डालूं ?

क०—उस टोपे (चित्र ६७) के लिये एक कनपुटी से दूसरी कनपुटी तक सरके पीछे होकर (क स फ) का नाप लेना चाहिये; अगर छोटे से बच्चे के लिये, जिसका (क स फ) का नाप ११ इंच है और सामना (ग म घ) भी इतना ही है, टोपा बुनना है तो क्योंकि इन सलाइयों और ऊनसे एक इंच चौड़ा टुकड़ा बुननेके लिये करीब छः सातके कड़ियां चाहियें इस लिये ११×६=६६ कड़ियां डालो; और (घ प ग) से बुनना शुरू करो:—

(घ प ग) से सादा बुनावट यानी एक पांती सीधी और एक पांती उलटी करीबन चार साढ़े चार इंच लम्बी (क स फ) तक बुनलो।

अब (क स फ) से सर के लिये इस तरह मोड़ना शुरू करो:—

पांती १:—सीधी ३०, सरकबांध १, सीधी २, एक साथ सीधी २, सीधी ३०।

पांती २:—उलटी।

पांती ३:—सीधी २९, सरकबांध १, सीधी २, एक साथ

सीधी २, सीधी २६ ।

पांती ४:-उलटी ।

पांती५:-सीधी २८, सरकबांध १, सीधी २, एकसाथ सीधी २, सीधी २८ ।

पांती६:-उलटी ।

पांती ७:-सीधी २७, सरकबांध १, सीधी२, एक साथ सीधी २, सीधी २७ ।

पांती८:-उलटी ।

पांती९:-सीधी २६, सरकबांध १, सीधी २, एकसाथ सीधी २, सीधी २६ ।

पांती१०:-उलटी ।

अब ५६ कड़ियां सलाई पर हैं; इन को बराबर बराबर यानी आट्ठाईस २८ दो सलाइयों पर करलो और दोनों सलाइयों को मिलाकर और टोपे को उलटकर खतम करदो जैसे मोज़े की एड़ी की थी । यह टोपा बुनगया ।

अब एक इंच कम या ज्यादा चौड़ा प्लेट गरदन पर इस तरह डालो:-(घ प ग) के ठीक बीच में (प) है इस के दोनों तरफ़ एक एक इञ्च की दूरी पर (द) और (ध) हैं इनको मिलाकर सुई से एक दो टांके लगादो (चित्र ९८) यह लेपट इस लिये डाला जाता है कि टोपा गरदन पर ढीला न रहे ।

अब एक झलकर (ग स घ) के लिये और एक (घ प ग) के लिये इस तरह बुनकर डाली हुई कड़ियों की तरफ़ से टांकदो:—

६६ कड़ियां डाल लो और इस तरह बुनो :—

पांती १:—सीधी।

पांती २:—[बनाओ १, सीधी १] दोहराओ।

पांती ३:—सीधी।

पांती ४:—पांती २ की तरह।

पांती ५ व ६:—सीधी।

अब खतम करदो; लेकिन कड़ियां ज्यादा कड़ी न होने पायें।

दूसरी झल्लर भी इसी तरह ६६ कड़ियां डालकर बुनो। अब क्योंकि यह टोपा तुमने काली ऊन से बुना है इस लिये सुई में केलई ऊन पोकर (न ह न) और (छ च छ) पर दो चेनें इस तरह की (चित्र ९९) टोपे पर सामने से एक एक इंच की दूरी पर काढ़ दो। अब एक छोटा सा इसी ऊन का फुंदना बनाकर (ल) पर और एक बड़ा सा बनाकर (य) पर टांकदो (चित्र ९७)।

अब एक डोरी काली ऊन की उसी तरह बटकर और फुंदने लगाकर जैसी मोज़े के लिये बटी थी गरदन में जहां झल्लर टांकी है पो दो।

ली०—यह तो दूसरे रंग की चैन और फुंदने लगाने से बहुत अच्छा लगने लगा।

क०—तुम्हें एक तरह का टोपा बुनना तो आगया अब दूसरी तरह का **एक दो वर्ष के बच्चे का टोपा** बताती हूं; यह टोपा (चित्र १००)(ग म घ) यानी सामने से शुरू किया जायगा; इस के लिये (ग म घ) का नाप लेकर कड़ियां डालनी चाहियें। रामरतन अब १½ बरस का है इसके लिये ७४ कड़ियां काफ़ी होंगीं। सलाई पर ७४ कड़ियां डालकर चार पांतियां सीधी २, उलटी २ की फलीदार

बुनावट की बुनो। अब १२ पांतियां सादा बुनावट की बुनो।

अब पांती १७:—सीधी।

पांती १८:—सीधी।

पांती १६:—उलटी।

अब पांती १८ व १६ को चार दफ़े और दोहराओ।

पांती २८:—उलटी।

अब बारह पांतियां सादा बुनावट की बुनो।

अभी टोपे की शक्ल ऐसी (चित्र१०१) है; लेकिन अब (च स ज) की ७४ कडियों के २५, २४ और २५ के तीन हिस्से करके बीच की २४ कड़ियां बुनी जायेंगी और हर पांती की अख़ीरी कड़ी एक दफ़ एक तरफ़ की और दूसरी दफ़ दूसरी तरफ़ की पच्चीस कड़ियों में से एक कड़ी के साथ बुनी जायेगी; इस तरह बुनने से टोपा मुड़ जायगा:—

पांती ४१:—सीधी ४९; बाकी २५ कड़ियों को एक डोरे या सलाई पर उतारदो; लोटो और २४ कड़ियां उलटी बुनो; बाक़ी २५ कड़ियों को एक डोरे पर उतारदो (अब ७४ कड़ियों के तीन हिस्से होगये दोनों किनारों की पच्चीस २५ कड़ियां डोरों पर हैं और बीच की २४ सलाई पर हैं)।

अब बीच की २४ कड़ियां जो सलाई पर हैं इस तरह एक एक कड़ी हर पांती के अख़ीर पर डोरे की कड़ियों में से लेकर इस तरह बुनो:—

पांती ४३:—सीधी २३, एक साथ सीधी २ (एक कड़ी डोरे पर से लेकर)।

पांती ४४:—उलटी २३, एक साथ उलटी २ (एक कड़ी डोरे पर से लेकर)।

अब पांती ४३ व ४४ को दोहराती जाओ जब डोरों पर की सब कड़ियां ख़तम हो जायें और सलाई पर की ही कड़ियां रहें तब उनको ख़तम कर देना। यह सरका हिस्सा बुन गया।

अब परदे (ग क घ ख) के लिये १३४ कड़ियां डालकर ४६ पांतियां सादा बुनावट की बुनो, इसके बाद चार पांतियां दो सीधी, दो उलटी की फलीदार बुनावट की बुनकर ख़तम करदो। अब इस परदे को (गपघ) पर इस तरह टांको कि (प) पर इस परदे में प्लेट पड़ जाये।

अब ७४ कड़ियां डालकर एक झल्लर (ज स ज) के लिये इस तरह बुनकर टांकदो :—

पांती (१):—सीधी।

पांती (२):—[बनाओ १, सीधी १, दोहराओ], अख़ीर पर सीधी १।

पांती (३):—सीधी।

पांती (४):—सीधी १, [बनाओ १, सीधी १। दोहराओ] अख़ीर पर सीधी १।

पांती (५):—सीधी।

अब लोहे की सलाइयों पर छः कड़ियां डालकर छल्ले-दार बुनावट की एक किनारी बुनकर (ग म घ) पर टांकदो।

अब ऊनकी एक डोरी बटकर (घ प ग) में डालदे और उसके दोनो सिरों पर एक एक फुंदना लगादो ।

अब (ग म घ) की छल्लेदार किनारी के बाद जो उलटी बुनावट की पट्टी है उस पर ठीक बीच में बराबर बराबर दूरी पर दस बारह बहुत छोटे छोटे फुंदने बनाकर लगादो (चित्र १००) । यह टोपा तैयार होगया ।

ली०—आज क्या बताओगी ?

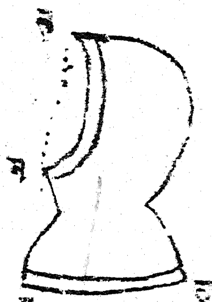
क०—आज तुमको **सफ़री टोपा** (चित्र १०२) सिखाती हूं इसके लिये लोहे की सलाइयां और काली ऊन निकालो ।

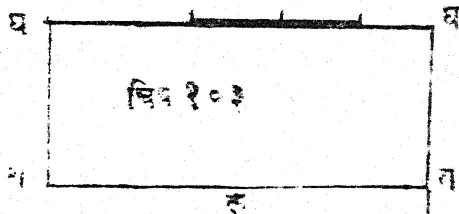
ली०—कितनी कड़ियां डालूं ?

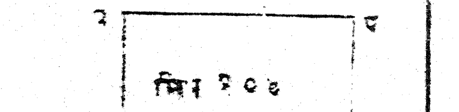
क०—कड़ियां डालने के लिये पहले सामने (म स म) का नाप लो ।

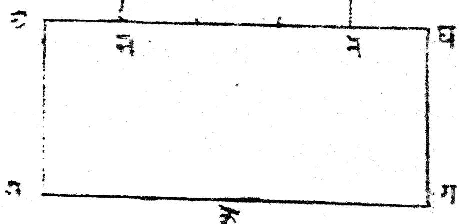
ली०—मेरा (म स म) का नाप १९ इंच है, लेकिन यह टोपा मैं चाचाजी के नाप का बनाना चाहती हूं इसलिये मेरी समझ में उनके (म स म) का नाप मेरे से दो एक इंच ज्यादा होगा ।

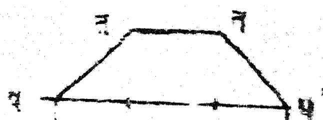
क०—हां उनका (म स म) का नाप बीस बाईस इंच से कम न होगा इसलिये २१ इंच का सामना रक्खो । क्योंकि इन सलाइयों से बुनने के लिये एक इंच में ९ कड़ियों की ज़रूरत होगी इसलिये २१×९ = १८९ कड़ियां सामने (म स म) के लिये होनी चाहियें लेकिन क्योंकि यह टोपा सामने से नहीं बल्कि गरदन पे से बुना जायगा इसलिये इन १८९ कड़ियों के सत्ताईस २७ के सात हिस्से करके पांच हिस्से यानी १३५ कड़ियां गरदन के लिये डालदो ।

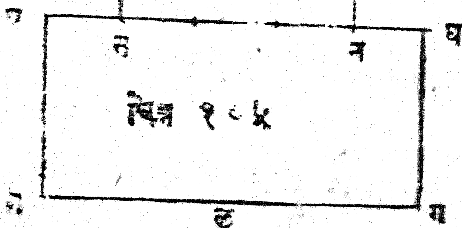

चित्र १०२


चित्र १०३


चित्र १०४






चित्र १०५

छी०—जो मैंने १३५ काड़ियां गरदन (ग क ग) के लिये डाल लीं अब बताओ कैसे बुनूं?

क०—अब इसतरह बुनोः—

पांती १:- सीधी १, [उलटी १, सीधी १, पांती के अखीर तक दोहराओ]।

अब पांती १ को १७ दफ़े और दोहराओ।

पांती १९:-[सीधी ३ उलटी ३, दोहराओ]।

पांती २०:—सीधी बुनो।

अब पांती १९ व २० को सत्ताइस दफ़े और दोहराओ। अब टोपे की शक्ल एसी (चित्र १०३) है।

अब (घ घ) के दौनो किनारों पर सत्ताईस २७ काड़ियां इस तरह जोड़ोः-

पांती ७५ व ७६:-[सीधी ३, उलटी ३, अठारह दफ़े] छोटो और सीधी ८१। (यह देखो सत्ताईस २७ काड़ियां (घ घ) के दौनों किनारों पर छुटगईं, इनको दो डोरों पर उतारदो)।

अब बीच की ८१ काड़ियों पर ५४ पांतियां पांती १९ व २० को दोहराकर बुनो। अब टोपे की शक्ल ऐसी (चित्र १०४) हो गई।

अब (प प) से सर को इस तरह मोड़ना शुरू करोः-

पांती १३१ व १३२:-[सीधी ३, उलटी ३, तेरह दफ़े]; छोटो और सीधी ७५।

पांती १३३ व १३४:-[उलटी ३, सीधी ३, बारह दफ़े]; छोटो और सीधी ६९।

पांती १३५ व १३६:-[सीधी ३, उलटी ३, ग्यारह दफ़े], छोटो और सीधी ६३।

पांती १३७ व १३८:–[उलटी ३, सीधी ३, दस दफ़े], लोटो और सीधी ५७

पांती १३९ व १४०:–[सीधी ३, उलटी ३, नौ दफ़े] लोटो और सीधी ५१ ।

पांती १४१ व १४२:–[उलटी ३, सीधी ३, आठ दफ़े], लोटो और सीधी ४५

पांती १४३ व १४४:–[सीधी ३, उलटी ३, सात दफ़े], लोटो और सीधी ३९

पांती १४५ व १४६:–[उलटी ३, सीधी ३, छः दफ़े], लोटो और सीधी ३३ ।

पांती १४७ व १४८:—[सीधी ३, उलटी ३, पांच दफ़े], लोटो और सीधी २७ ।

अब टोपे की शक्ल एसी (चित्र १०९) होगई

पांती १४९:—[उलटी ३, सीधी ३, नौ दफे, यानी (त) से सलाई के अख़ीर (प) तक], और (प न) परसे २७ कड़ियां उठाकर [उलटी ३, सीधी ३, चार दफे], उलटी ३, बुनलो ।

पांती १५०:—सीधी १०८, और (पं नं) पर से २७ कड़ियां उठाकर सीधी बुनलो । अब १३५ कड़ियां (न प त तं पं न) की सलाई पर हैं ।

अब इस तरह बुनोः—

पांती १५१ व १५२:—[उलटी ३, सीधी ३, बाईस दफ़े], लोटो और सीधी १२९ ।

पांती १५३ व १५४:–[सीधी ३, उलटी ३, इक्कीस दफे], लोटो और सीधी १२३ ।

पांती १५५ व १५६ः—[उलटी ३, सीधी ३, बीस दफ़े;] लौटो और सीधी ११७ ।

पांती १५७ व १५८ः—[सीधी ३, उलटी ३, उन्नीस दफ़े], लौटो और सीधी १११ ।

पांती १५९ व १६०ः—[उलटी ३, सीधी ३, अठारह दफ़े); लौटो और सीधी १०५ ।

पांती १६१ व १६२ः—[सीधी ३, उलटी ३, सत्तरह दफ़े]; लौटो और सीधी ९९ ।

पांती १६३ व १६४ः—[उलटी ३, सीधी ३, सोलह दफ़े], लौटो और सीधी ९३ ।

पांती १६५ व १६६ः—[सीधी ३, उलटी ३, पन्द्रह दफ़े], लौटो और सीधी ८७ ।

पांती १६७ व १६८ः—[उलटी ३, सीधी ३, चौदह दफ़े], लौटो और सीधी ८१ ।

पांती १६९ः–[सीधी ३, उलटी ३, अठारह दफ़े यानी सलाई के अखीर तक]; और (घन) की २७ कड़ियां [सीधी ३, उलटी ३, चार दफ़े] सीधी ३ बुनो

पांती १७०ः—सलाई पे की कड़ियां सीधी १६२, और (घ न) की जो शुरू में डोरे पर उतारदीं थीं सीधी२७ ।(अब १८९कड़ियां सलाई पर होगई) ।

अब २४ पांतियां पांती १९ व२० को बारह दफ़े दोहराकर बुनलो ।

अब अठारह पांतियां पांती १ की तरह बुनकर ख़तम करदो ।

अब (घ ग) को (घ ग) से मिलाकर सींदो ।

ली० अब किस तरह का टोपा बताओगी ?

क० इस वक्त अंधेरा होता आता है अब कल कुछ और चीज़ शुरू करना टोपे तो कई बुनचुकीं ।

तेरहवाँ परिच्छेद

पाइजामा और पतलून बुनना ।

ली०—बहिन ! तुम नई चीज़ क्या बताने कहतीं थीं ?

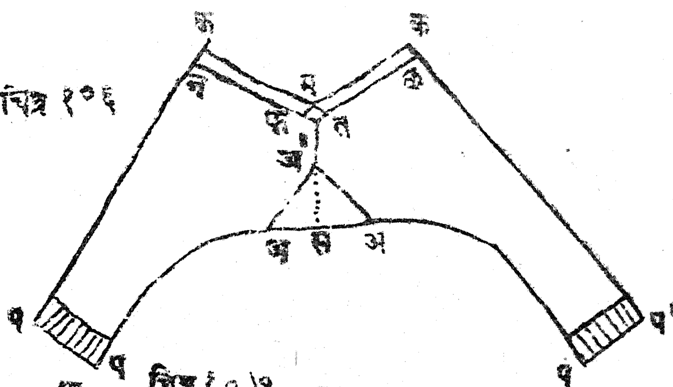
क०—छोटे बच्चे का पाइजामा ।

इस (चित्र १०६) को हाथी दांत की सलाइयों से बुनो । इसके दोनों पैरों के हिस्से अलग अलग बुने जायेंगे । इस के पांइचे (प प प) का नाप ६ इंच होगा इस लिये ६×७=४२ कड़ियां डाल लो और इस तरह बुनना शुरू करोः—

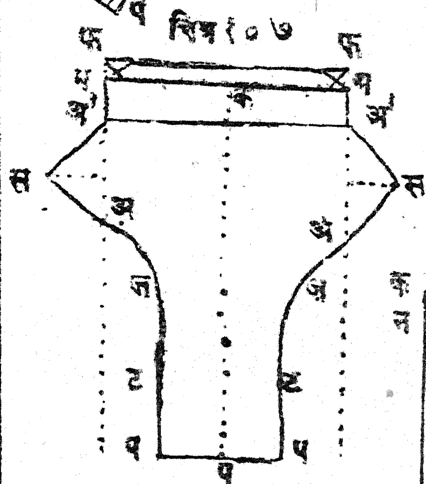
पहली १५ पांतियां उलटी १, सीधी १, की फलीदार बुनावट में बुनो।

अब बीस पांतियां सादा बुनावट की (ट ट) तक बुनलो । अब तमाम पाइजामा सादा बुनावट ही में बुना जायेगा (चित्र १०७) ।

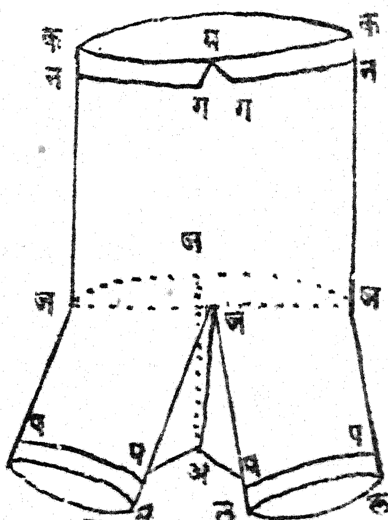
अब पांती ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, के शुरू और अखीर पर एक एक कड़ी बढ़ा कर (ट ट) से (ज ज) तक २२ कड़ियां बढ़ालो और (ज ज) से (अ अ) तक हर दूसरी पांती के शुरू और आखीर पर एक एक कड़ी बढ़ाकर २० कड़ियां बीस पांतियों में बढ़ालो (अब सलाई पर ४२ की दुगनी ८४ कड़ियां होगई) ।



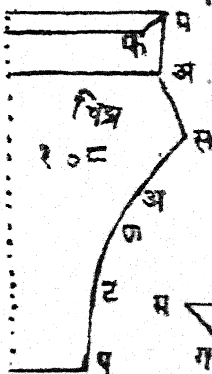
चित्र १०६



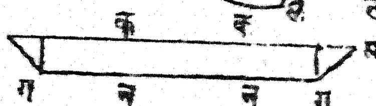
चित्र १०७



चित्र १०९



चित्र १०८



चित्र ११०

अब आसन (अ स अ) के लिये (अ अ) से (स स) तक हर दूसरी पांती के शुरू और अखीर पर एक एक कड़ी बढ़ाकर ३२ कड़ियां ३२ पांतियों में बढ़ालो (अब ११६ कड़ियां होगईं) । फिर (स स) से (अं अं) तक हर दूसरी पांती के शुरू और अखीर पर एक एक कड़ी घटाकर ३२ कड़ियां कम करदो (अब ८४ कड़ियां हैं) ।

अब १६ पांतियां (म म) तक सादा बुनकर (म म) से (फ फ) तक हर पांती के शुरू और अखीर पर एक एक कड़ी घटाकर १२कड़ियां छः पांतियों में कम करदो, यह छः पांतियां उलटी बुनावट में बुनी जायेंगीं । यह एक पांइचा बुन गया; इसी तरह दूसरा पांइचा भी बुनलो ।

अब (म फ फ म) को (म म) की बिन्दियों की लकीर पै से मोड़कर (फ फ) पर बखिया करदो; यह कमरबन्द के लिये नेफ़ा होगया । अब (क प) की बिन्दियों की लकीर पै से मोड़कर (प स) को (प स) से मिलाकर सींदो; अब पांइचे की शक्ल ऐसी (चित्र १०८) होगई । दूसरे पांइचे को भी इसी तरह मोड़कर सींलो ।

अब दोनों पांइचों को (म अ स) पै इस तरह सींओ कि एक पांइचे का परत दूसरे पांइचे के ऊपर के परत से और एक पांइचे के नीचे का परत नीचे के परत से मिलकर सिले यह पाइजामा तैयार होगया ।

वी०–देखो बहिन ! मैं चाचाजी का यह जांघिया (चित्र १०९) लाई हूं; यह सूती है तुम मुझ से ऊनी बुनवाओ जाड़ों में उन के काम आवेगा ।

क०—अच्छा तो फिर चार कोहे की सलाइयां निकालो और जांघ (ऌल) का और (कक) से (जज) तक और (ज ज) से (ऌळ) तक का नाप ले लो।

ली०—जांघ (ळक) का घेर २२ इञ्च है और (कज) की लंबाई ११ और (जळ) की लंबाई १० इंच है।

क०—तो एक जांघ के घेर के लिये २२×६=१३२ कड़ियों की ज़रूरत होगी, और क्योंकि कमर का घेर दोनों जांघों के घेर के बराबर होता है इस लिये कमर के घेर (क म क) के लिये १३२×२=२६४ कड़ियों की ज़रूरत होगी।

ली०—क्या एक इंच में छःही कड़ियां होंगीं ? इन सलाइयों से बुनने में एक इंच के लिये १० कड़ियां होनी चाहियें।

क०—हां ! छः ही कड़ियां होंगीं क्योंकि जांघिया चुस्त होना चाहिये इस लिये इसके लिये बुनावट को खींचकर एक इञ्च की कड़ियों का अन्दाज़ किया है।

पहले नफ़ा (चित्र ११०) के लिये२५४ कड़ियां डालकर (ग न न ग) से इस तरह बुनना शुरू करो :—

पांती १,२,३:—उलटी।

पांती ४:—उलटी शुरू और आख़ीर पर एक एक कड़ी बढ़ा कर।

इन ऊपर की चार पांतियों को चार दफ़े और दोहराओ इस तरह बीसवीं पांती में २६४ कड़ियां हो जायेंगीं।

ली०—एक सलाई पर तो २८६ कड़ियां आती ही नहीं।

क०—जितनी इस सलाई पर आसकें उतनी इस पर डालो बाक़ी दूसरी पर डालो मगर बुनते वक़्त इन दोनों को एक ही सलाई समझना और एक ही पांती मानना।

सी०—लो बहिन ! मैंने नेफ़े की २० पांतियां बुनलीं।

क०—अब इन २६४ कड़ियों को तीन सलाइयों पर करलो (इस तरह म से म मिल जायेगा) क्योंकि अब गोल बुना जायगा पांतियां नहीं। अब (कक) से (जज) तक सादा चक्कर कर कर के ११ इंच बुनलो।

अब (म) की सीधी में (ज) से शुरू करके १३२ कड़ियां एक जांघ के लिये सलाइयों पर रहनेदो बाक़ी १३२कड़ियां दूसरी जांघ के लिये एक डोरे पर उतारदो।

अब जो १३२ कड़ियां सलाइयों पर हैं इनके शुरू में ६६ कड़ियां आसन (ज अ ज) के लिये डालकर इन सब १९८ कड़ियों को तीन सलाइयों पर करलो और आठ चक्कर बुनलो।

अब डाली हुई ६६ कड़ियों के शुरू और अख़ीर में एक एक कड़ी हर दूसरे चक्कर में घटाती जाओ जब ६६ कड़ियां घटजायें और चक्कर में १३२ कड़ियां रहजायें तो आठ चक्कर सादा और आठ चक्कर फलीदार (उलटी २, सीधी २)करके ख़तम करदो। यह एक जांघ बुनगई।

अब दूसरी जांघ की १३२ कड़ियां डोरे पै से सलाइयों पर उतारलो और (ज अ ज)पर से ६६ कड़ियां आसन के लिये उठालो और इन सब १९८ कड़ियों को तीन सला-इयों पर करके चक्कर बुन बुन के पहली जांघ की तरह बुनलो।

अब नेफ़े को (क म क) पर से सामने की ओर मोड़ कर बख़िया करदो; और एक कमरबन्द इस में डालदो।

शीला०—बहिन! अब तुम्हारे जाने के दिन क़रीब आते जाते हैं; कुछ नई नई चीजें मुझको और सिखादो फिर न मालूम कब मिले।

कला०—मुझको इसका खुद ख़याल है कि जहांतक हो सब पहने की चीजें तुमको सिखाजाऊं फिर वहां से इन ही सब चीजों को तरह तरह की मनोहर बुनावटों में बुनने की तरकीबें लिख लिख कर भेजती रहूंगी। आओ आज तुमको **पतलून** बुनना बतादूं फिर दो चार चीज़ें और जाने से पहले बतादूंगी

यह पतलून (चित्र १११) पाइंचे से शुरू की जायगी इस लिये पांइचे के लिये ६६ कड़ियां लोहे की तीन सलाइयों पर डालो और ४० चक्कर सीधी १, उलटी १, की फलीदार बुनावट के (प प) से (म म) तक बुनो (अब आगे सादा बुनावट में कुल पतलून बुनी जायेगी)।

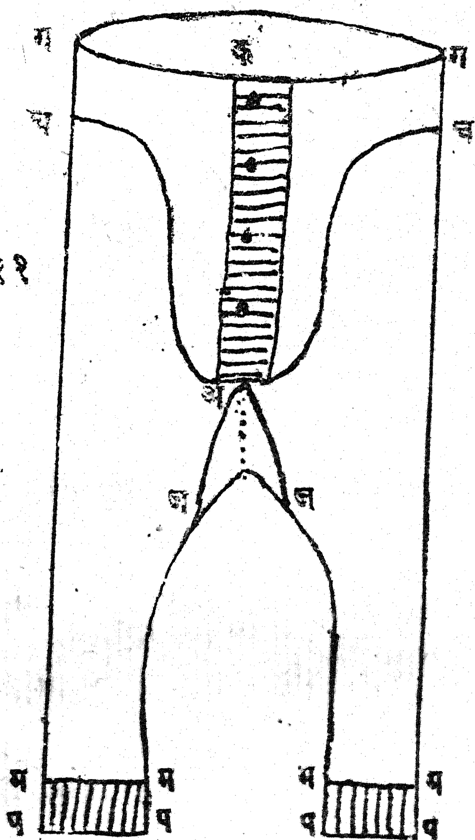
चक्कर ४१:—सीधी २, [बढ़ाओ १, पहिली रीति से (देखो सफ़ह २६), सीधी ४, सोलह दफ़े]। (अब ८२ कड़ियां होगईं)।

अब बारह चक्कर सीधे बुनो।

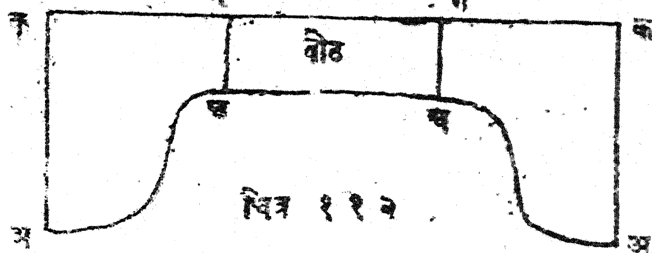
अब टांग के लिये बढ़ाना शुरू करो और तीसरी सलाई की अखीरी कड़ी को सीमन की कड़ी मानलो और इसको अगले चक्करों में उलटी बुनना और इसी के पहले और पीछे कड़ियां बढ़ाना। यानी इस तरह बुनो:—

चक्कर ५४:—सीधी २, बढ़ाओ १, सीधी ७७, बढ़ाओ १, सीधी २, उलटी १।

चक्कर ५५:—सीधी ८३, उलटी १।



चित्र १११



चित्र ११२

अब चक्कर ५५ को सात दफ़े और दोहराओ।

चक्कर ६३:—सीधी २, बढ़ाओ १, सीधी ७६, बढ़ाओ १, सीधी २, उलटी १।

चक्कर ६४:—सीधी ८५, उलटी १।

अब चक्कर ६४ को सात दफ़े और दोहराओ।

चक्कर ७२:—सीधी २, बढ़ाओ १, सीधी ८१, बढ़ाओ १, सीधी २, उलटी १।

चक्कर ७३:—सीधी ८७, उलटी १।

अब चक्कर ७३ को सात दफ़े और दोहराओ।

चक्कर ८१:—सीधी २, बढ़ाओ १, सीधी ८३ बढ़ाओ १, सीधी २, उलटी १।

चक्कर ८२:—सीधी ८९, उलटी १।

अब चक्कर ८२ को सात दफ़े और दोहराओ

अब अगले चक्कर में और फिर हर नवें चक्करमें इसीतरह दो दो कड़ियां बढ़ाती जाओ यहां तक कि क़रीब २६, २७ इंच के बुन जाये। यह बाईं टांग बुन गई; अब बाईं टांग का ऊपर का हिस्सा चौसर सादा बुनावट यानी एक पांती सीधी और एक पांती उलटी में बुना जायगा और हर नवी पांती में एक कड़ी शुरू और एक कड़ी अख़ीर पर इस तरह बढ़ाई जायेगी:—

पांती ६:—बुनो २, बढ़ाओ १, बीच की कड़ियां बुनो, अख़ीर पर बढ़ाओ १, बुनो २।

अब इसी तरह हर नवीं पांती में बढ़ा बढ़ाकर चार इञ्च बुनलो *। (यहां पर बाद में आसन बुना जायेगा)।

अब इस चौसर बुनावट की सीधी तरफ़ अपने सामने

करके इस तरह बुनना शुरू करो :—

पांती १:—उलटी, अखीर पर ८ कड़ियां सामने की पट्टी के लिये डाललो।

पांती २:—सरकाओ १, सीधी १२, बाकी उलटीं।

पांती ३:—सीधी।

अब पांती २ व ३ को पांच दफ़े और दोहराओ।

अब पतलून का पांछा इस तरह घटाया और ऊंचा किया जायेगा:—

पांती १४:—सरकाओ १, सीधी १२, बाकी उलटीं।

पांती १५ व १६:—सीधी ३, एक साथ सीधी २, अब आधी दूर तक कड़ियां सीधी बुनलो (यानी जितनी कड़ियां सलाइयों पर हैं उन में से आधी कड़ियां ही सीधी बुनो आगे न बुनो) लौटो और सब कड़ियां उलटी बुनो।

पांती १७:—सीधी ३, एक साथ सीधी २, बाकी सीधीं।

पांती १८:—पांती २ की तरह।

पांती १९:—पांती १७ की तरह।

पांती २०:—पांती २ की तरह।

पांती २१:— पांती १७ की तरह।

पांती २२:— पांती २ की तरह।

अब पांती १५ से २२ तक दोहरा दोहराकर इस सामने की पट्टी को २½ इंच ऊंची बुनलो।

अब सामने की पट्टी में बटन के लिये एक काज इस तरह करो कि जब पट्टी की अखीरी ८ कड़ियां रहें तब उन में से ६ कड़ियां बांधदो और अगली पांती में ६ कड़ियां उसी जगह डाललो।

अब इसी तरह ढाई ढाई इंच बुन बुनकर तीन काज और करलो।

अब आधी इंच के करीब और बुनकर ख़तम करदो।

अब सामने की पट्टी से नीचे और जहां से गोल बुनावट का बुनना बन्द किया है यानी (अ) से (ज) तक कड़ियां उठाओ और सादा बुनावट का बिलकुल चौकोर टुकड़ा आसन के लिये बुनलो और ख़तम करदो।

पतलून का दांयां हिस्सा भी शुरू में इसीकी तरह बुना जायगा लेकिन सामने की पट्टी बुनने से पहले कुछ थोड़ा सा फ़र्क़ कर दिया जायगा यानी इस में आसन नहीं बुना जावेगा और न सामने की पट्टी में काज होंगे; दूसरे यह कि (अ) यानी इस × निशान तक बुनने के बाद सामने की पट्टी के लिये ६ कड़ियां बजाय ८ के डाली जायेंगी और यह कड़ियां हर पांती में सीधी बुनी जायेंगी और बजाय अख़ीर के पांती के शुरू में डाली जायेंगी और पतलून दूसरे सिरे पर ऊंची की जायगी और कड़ियां घटाई जायेंगी।

ली०—लो बहिन ! मैं दूसरा हिस्सा भी आज बुनलाई हूं।

क०—अच्छा तो इसको यों सींदो :—दोनों हिस्सों को बराबर बराबर इस तरह रक्खो (चित्र १११) और आसन को तिकोना मोड़कर दोनों टांगों के बीच में सींदो और पीछे की तरफ़ दोनों हिस्सों को मिलाकर सींदो और सामने की काजदार पट्टी को बे काजवाली पर रखकर (अ) पर दो तीन टांके लगादो ताकि दोनों पट्टियां यहां पर जुड़ी रहें।

अब किसी सूती कपड़े या फ़लालेन का एक अस्तर इस शक्ल का (चित्र ११२) काट कर पतलून के सामने और पीछे लगादो।

अब बटन लगादो और काज सींदो; यह पतलून तैयार हो गई।

चौदहवां परिच्छेद

ली०—बहिन! आज मैंने यह **बटुआ** (चित्र ११३) बुना है; देखो कैसा है।

क०—बहुत अच्छा है। यह किस तरह बुना है?

ली०—यह मैंने चालीस कड़ियां तीन सलाइयों पर डालकर बिलकुल उसी तरह बुना है जिस तरह तुमने मोजों का पंजा बताया था यानी दो सलाइयों पर मैंने दस दस कड़ियां डाली थीं, और तीसरी पर २०; और फिर (मम) से (बब) तक यानी जितना लम्बा बटुआ बुनना था उसकी आधी दूर तक सादा बुनावट के चक्कर बुने थे फिर हर दूसरे चक्कर में एक कड़ी पहली सलाई के शुरू में और एक दूसरी सलाई के अख़ीर में, एक तीसरी सलाई के शुरू और एक अख़ीर में घटा घटाकर जब बीस कड़ियां तीनों सलाइयों पर रहगईं तब मैंने उनको दो सलाइयों पर करके और सलाइयां मिलाकर ख़तम कर दिया था; इसके बाद (मम) से कुछ नीचे डोरे डाल दिये थे।

क०—तुमने बटुआ ठीक बुना है; लेकिन तीन सलाइयों की जगह अगर दो ही पर बीस बीस कड़ियां डालकर बुनतीं तो और

अच्छा और सुगमता से बुनजाता। अब अगर एक झालर इस तरह बुनकर इसके तीन ओर (म ब त त ब म) पर टांकदो तो बहुत अच्छा लगने लगे:—

६० कड़ियां डालको और एक पांती सीधी बुनो, अब एक पांती बनाओ १, सीधी १, की बूटी; अब दो पांती सीधी बुनकर खतम करदो।

१०—लाला जी ने पारसाल जाड़ों में दस्ताने एक विलाती से मोल लिये थे, क्या घर नहीं बुने जासकते थे?

१०—क्यों घर बुनने को क्या हुआ घर भी बुने जा सकते थे, अगर मुझ से कहते तो मैं उनको फ़ौरन तैयार कर देती। आओ आज तुम दस्ताने ही बुनो।

कलाई (प प) के लिये ७२ कड़ियां चौबीस चौबीस तीन सलाइयों परडालकर एक चक्कर सीधा बुनो।

अब ४० चक्कर सीधी २, उलटी २, की फलीदार बुनावट के (कक) तक बुनो।

अब छः चक्कर सीधे बुनो और अंगूठे के लिये इस तरह चौड़ाना शुरू करो:—

चक्कर ४८—बनाओ १ (ऊन सलाई पर ऊपर से नीचे फेरकर), सीधी १, बनाओ १ (ऊन ऊपर से नीचे फेरकर), बाक़ी सीधीं ६९।

चक्कर ४९ व ५०:—सीधे।

चक्कर ५१:—बनाओ १, सीधी ५, बनाओ १, बाक़ी सीधी ६६।

चक्कर ५२ व ५३:—सीधे।

चक्कर ९४ः—बनाओ १, सीधी ७, बनाओ १, बाकी सीधीं ६६ ।

चक्कर ९५ व ९६ः—सीधे ।

अब इसी तरह हर तीसरे चक्कर में अंगूठे के लिये चौड़ाती जाओ जब तक कि बनाई हुई कड़ियों के बीच में २६ कड़ियां सीधी बुनी जायें (एसा चक्कर ८७ में होगा) ।

अब पांच चक्कर सीधे बुनो ।

चक्कर ९३ः—सीधाः तीसरी सलाई के अख़ीर पर १० कड़ियां अंगूठे और पहली उंगली की गाइ के लिये डालदो ।

अब पहिली सलाई पै से ३१ कड़ियां अंगूठे के लिये एक डोरे पर उतारलो और इन दस कड़ियों को जो तीसरी सलाई के अख़ीर में गाइ के लिये डाली हैं चौथी सलाई से बुनकर पहली सलाई पर अंगूठे की कड़ियों की जगह उतारदो ।

चक्कर ९४ व ९५ ः—सीधे ।

चक्कर ९६ः—एक साथ सीधी २, सीधी ६, एक साथ सीधी २, बाक़ी चक्कर सीधा बुनो ।

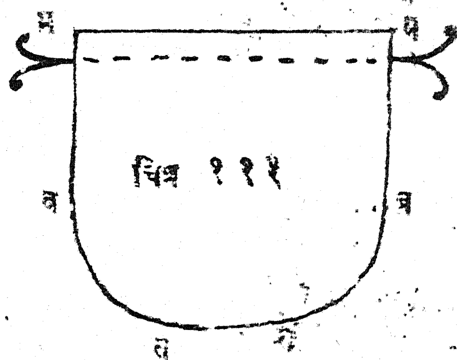
चक्कर ९७ः—सीधा ।

चक्कर ९८ः—एक साथ सीधी २, सीधी ४, एक साथ सीधी २, बाक़ी चक्कर सीधा ।

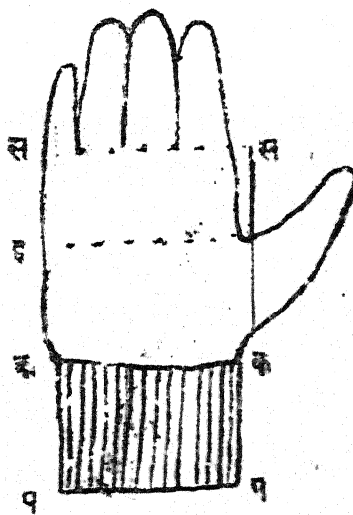
चक्कर ९९ः—सीधा ।

चक्कप १००ः—एक साथ सीधी २, सीधी २, एक साथ सीधी २, बाक़ी सीधा ।

चक्कर १०१ः—सीधा ।



चित्र ११५



चित्र ११४

चक्कर १०२, एक साथ सीधी २, एक साथ सीधी २, बाक़ी सीधा (अब ७८ कड़ियां हैं)।

अब बीस चक्कर सीधे बुनो।

पहली उंगली:—अब पहली उंगली के लिये १० कड़ियां पहली सलाई के शुरू की और १० कड़ियां तीसरी सलाई के आख़िर की दो सलाइयों पर रहने दो बाक़ी कड़ियों को एक डोरे पर उतारदो।

अब पहली सलाई की दस कड़ियां सीधी बुनकर ९ कड़ियां पहली उंगली की बांई गाई के लिये एक सलाई पर डाललो और तीसरी सलाई की १० कड़ियां सीधी बुनलो। यह पहली उंगली के लिये २९ कड़ियां तीन सलाइयों पर होगई। अब सीधे चक्कर बुन बुनकर क़रीबन उंगली के बराबर बुनलो और सिरा बंद करने के लिये इस तरह बुनो:,

चक्कर (१):—[सीधी २, एकसाथ सीधी २, दोहराओ]।

चक्कर (२) व (३):—सीधे।

चक्कर (४):—[सीधी १, एकसाथ सीधी २, दोहराओ]

चक्कर (५):—सीधा।

चक्कर (६):—[एकसाथ सीधी २, दोहराओ]।

अब चक्कर (६) को दोहराती जाओ; अब एक कड़ी रहगई अब ऊन तोड़कर इस में से निकालकर खींचलो और सुई से उंगली के सिरे को रफ़ू करदो।

दूसरी उंगली:—इस के लिये ९ कड़ियां एक सलाई पर पहली उंगली की जड़ में से जहां गाई के लिये कड़ियां डाली गई थीं उठालो; और ६ कड़ियां दस्ताने की हथेली की इसी

सलाई पर उतार कर बुनलो और बांई गाई के लिये १० कड़ियां दूसरी सलाई पर डाल लो; और दस्ताने की पीठ की ९ कड़ियां एक तीसरी सलाई पर उतार कर बुनलो (अब ३७ कड़ियां होगईं)। अब इस तरह घटाओ :-

चक्कर (१) :-सीधा।

चक्कर (२) :-एक साथ सीधी २, सीधी ८, एक साथ सीधी २, सीधी ६, एकसाथ सीधी २, सीधी ६, एकसाथ सीधी २, सीधा ६।

चक्नर (३) :-सीधा।

चक्कर (४) :-एकसाथ सीधी २, सीधी ३, एक साथ सीधी २, सीधी ९, एकसाथ सीधी २, सीधी ४, एकसाथ सीधी २, सीधी ९। (अब २६ रहगईं)

अब चक्कर बुन बुन कर उंगली के बराबर बुनलो और पहली उंगली की तरह इसके सिरे को भी बन्द करदो।

तीसरी उंगली :—दूसरी उंगली की बांई गाई की जड़ में १० कड़ियां उठाकर और दस्ताने के पीछे की ६ कड़ियां डोरे पर से उतार कर बुनलो, फिर ९ कड़ियां बांई गाई के लिये डालने के बाद दस्ताने के आगे की ६ कड़ियां सलाई पर उतार कर बुनलो, अब इस तरह घटाओ :-

चक्कर (१) :—सीधा।

चक्कर (२) :—एकसाथ सीधी २, सीधी ६, एकसाथ सीधी २, सीधी ९, एकसाथ सीधी २, सीधी ५, एकसाथ सीधी ३, सीधी ६।

चक्कर (३) :—सीधा।

चक्कर (४) :—एकसाथ सीधी २, सीधी ४, एकसाथ सीधी २, सीधी ६, एकसाथ सीधी २, सीधी ३, एकसाथ सीधी २, सीधी ९ ।

अब उंगली के बराबर बुनकर पहली उंगली की तरह सिरा बन्द करदो ।

कन उंगली :—तीसरी उंगली की जड़ में गाई की कड़ियों की जगह पर ९ कड़ियां एक सलाई पर उठालो और १६ कड़ियां जो डोरे पर बाक़ी हैं दो सलाइयो पर उतार लो और इस तरह बुनकर घटाओ :—

चक्कर (१) व (२) :—सीधे ।

चक्कर (३) :—एकसाथ सीधी २, सीधी ५, एकसाथ सीधी २, बाक़ी सीधी १६ ।

चक्कर (४) :—सीधा ।

चक्कर (५) :—एकसाथ सीधी २, सीधी ३, एकसाथ सीधी २, बाक़ी सीधी १६ ।

अब सीधे चक्कर बुनबुन कर उंगली के बराबर बुनलो और सिरा बन्द करदो ।

अंगूठा :—इसके लिये ३१ कड़ियां डोरे पर से दो सलाइयों पर उतारलो और तीसरी सलाई पर १० कड़ियां पहली उंगली की जड़ में जहां पर गाई के लिये कड़ियां डाली थी उठालो और दो चक्कर सीधे बुनकर इस तरह घटाओ :—

चक्कर (१) :—सीधी ३१, एकसाथ सीधी २, सीधी ६, एक साथ सीधी २,

चक्कर (२):—सीधी ३१, एक साथ सीधी २, सीधी ४ एक साथ सीधी २ ।

चक्कर (३):—सीधा ।

चक्कर (४):—सीधी ३१, एक साथ सीधी २, सीधी २, एक साथ सीधी २ ।

चक्कर (५):—सीधी ३१, एक साथ सीधी २, एक साथ सीधी २ ।

चक्कर (६):—सीधा ।

चक्कर (७):—सीधी ३१, एक साथ सीधी २ ।

अब सीधे चक्कर अंगूठे की बराबर बुनकर सिरे को मामूली तरह बन्द करदो ।

यह एक दस्ताना बुन गया (चित्र ११४), दूसरा भी इसी तरह बुनलो । यह दो तरह के होते हैं एक खुली उंगलियों के और एक बन्द उंगलियों के, बन्द उंगलियों के तुम बुन ही चुकी हो अगर कभी खुली उंगलियों के बुनना चाहो तो उंगलियां आधी ही बुनने के बाद ख़तम कर दिया करना ।

अब मेरे जाने के दो तीन दिन ही रहगये हैं इस लिये तुमको सिखाना बन्द करती हूं वहां पहुंचकर उम्दा २ मनोहर [illegible] की चीज़ें बुनने की तरकीबें तुमको लिख लिख कर भेजा करूंगी और जब मैं खुद आऊंगी तब तुम को कोई और सीने पिरोने का काम सिखाऊंगी ।

इति ।